श्यामा रटें श्याम श्याम श्याम रटें श्यामा।
श्यामा श्याम आठु याम रटें ब्रजबामा॥ १ ॥

भावार्थ— श्रीवृषभानुनन्दिनी निरन्तर श्याम श्याम की रटना करती हैं। नंदनंदन प्रति पल राधे राधे रटते हैं। ब्रजगोपियाँ रात-दिन श्यामा-श्याम के सरस नामामृत का पान करती हैं।

मनमानी तजु भज श्याम अरु श्यामा।
जाने कब तनु छिन जाय कह बामा॥ २ ॥

भावार्थ— अरे जीव! मनमानी छोड़कर निरन्तर श्यामा-श्याम का स्मरण कर। न जाने मृत्यु कब तुझसे यह मानव-शरीर छीन ले।

मैं, मैं, मैं, मैं काहे करे मूढ़ आठु यामा।
अज जानि काल वृक भेजे यम धामा॥ ३ ॥

भावार्थ—अरे मूर्ख! बकरे के समान रात दिन मिथ्या अभिमान-वश 'मैं मैं' क्यों करता है। काल-रूपी भेड़िया तुझे यमलोक भेजने की तैयारी में लगा है।

भुक्ति मुक्ति सुख सुख वैकुण्ठ धामा।
तजु काम एक नाम रटु श्याम श्यामा॥ ४ ॥

भावार्थ—ब्रह्मलोक-पर्यन्त के सुख, मुक्ति की कामना एवं बैकुण्ठ लोक की भी कामना का परित्याग कर एकमात्र श्यामा-श्याम का नाम रट।

शुक के समान जनि रटु श्याम श्यामा।
बक के समान ध्यान करु कह बामा॥ ५ ॥

भावार्थ—हे जीव! तोते के समान भाव से अनभिज्ञ रहकर केवल रसना से श्यामा-श्याम रटने से काम नहीं बनेगा। बगुले के समान एकाग्रता-पूर्वक कोटि-काम-कमनीय युगल सरकार के रूपध्यान-पूर्वक जब तू उनके पावन नाम का स्मरण करेगा तब नाम अपने प्रभाव से तेरे हृदय को द्रवीभूत कर देगा।

रसना की भक्ति ते ना बने कछु कामा।
शून्य का करोड़ गुना शून्य आवे बामा॥ ६ ॥

भावार्थ—केवल रसना आदि इन्द्रियों की भक्ति से जीवन का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। शून्य में करोड़ का गुणा करने से शून्य ही प्राप्त होता है। तात्पर्य यह है कि अन्तःकरण शुद्धि तो इष्ट में मन के संयोग से ही होगी। मन का योग ही वास्तविक भक्ति है। इन्द्रियाँ भी मन के साथ लगी रहें तो ठीक है परन्तु इन्द्रियों की क्रिया का महत्व नहीं है।

देह सम कीर्तन नाम गुन धामा।
प्रान समान रूप-ध्यान श्याम श्यामा॥ ७ ॥

भावार्थ—भगवन्नाम, लीला, गुणादि का कीर्तन शरीर के समान है। श्यामा-श्याम का रूपध्यान प्राण के समान है। प्राण के बिना जिस प्रकार शरीर मृत है उसी प्रकार रूपध्यान से रहित नाम, लीला गुणादि का कीर्तन लाभप्रद नहीं होगा।

श्यामा श्याम नाम जपो चाहे आठु यामा।
बिना प्रेम रीझें नहिं कभू श्याम श्यामा॥ ८ ॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम प्रेम से ही रीझते हैं अतः प्रेम रहित नाम भले ही आठों याम क्यों न लिया जाय श्यामा-श्याम की प्रसन्नता की प्राप्ति नहीं करा सकता।

प्रेम ही है सब साधन परिणामा।
प्रेम में भी भान रहे सदा निष्कामा॥ ९ ॥

भावार्थ—समस्त साधनों का फल प्रेम ही है। 'ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय'। प्रेम में भी निष्कामता का सदा ध्यान रहे।

रिद्धि मिले सिद्धि मिले मिले मोक्षधामा।
सब हैं अज्ञान ज्ञान प्रेम श्याम श्यामा॥१०॥

भावार्थ—रिद्धि सिद्धि की प्राप्ति या मोक्ष की प्राप्ति तो अज्ञान ही है। सच्चा ज्ञान तो वही है जिससे श्यामा-श्याम के प्रेम की प्राप्ति हो।

प्रेम के अधीन श्याम नाम ते न कामा।
लाला लाला कहें नित यशुमति भामा॥११॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर तो प्रेम के ही आधीन हैं। उनको किसी विशेष नाम से ही बुलाया जाय ऐसी कोई शर्त नहीं है। यशोदा तो केवल 'लाला' कहकर अपने कन्हैया को पुकारती हैं।

नाम चाहे जो लो करो प्रेम सुखधामा।
सखा कहें कनुआ लँगर कहें बामा॥१२॥

भावार्थ—प्रेम मुख्य है। नाम सभी समान हैं। अपनी रुचि के अनुसार कोई भी नाम यदि प्रेमपूर्वक लिया ज़ाता है तो वह नामी से मिलाने में समर्थ है। ग्वाल बाल अपने सखा को कनुआ कहते हैं। ब्रजबालायें लँगर कहकर ही श्यामसुन्दर को बुलाती हैं।

नामी के समान ही हैं नाम अरु धामा।
रो के पुकारो जो तो कहें ब्रज बामा॥ १३॥

भावार्थ—नामी की समस्त शक्तियाँ नाम एवं धाम में विराजमान हैं। यदि कोई जीव इस बात पर शत प्रतिशत विश्वास करके रो कर हरि को बुलाता है तो श्री हरि दौड़े चले आते हैं।

विधि हरि हर सुर मिलि एक ठामा।
रो के पुकारा हरि आए तजि धामा॥ १४॥

भावार्थ—जब पृथ्वी पर अत्याचार बढ़ गये, तब ब्रह्मादि देवताओं ने एक स्थान पर एकत्रित होकर रोकर श्री हरि का आह्वान किया। उस समय सर्वशक्तिमान प्रभु देवताओं के निंकट अपना धाम छोड़कर चले आये।

शरणागत हाथ बिके श्याम अरु श्यामा।
औरों की लिखा पढ़ी करें उर धामा॥ १५॥

भावार्थ—जो सर्वभाव से श्यामा-श्याम के शरणागत हैं, उन जीवों के कर्मों का हिसाब-किताब न रखकर श्यामा-श्याम उनके हाथों बिक जाते हैं, अर्थात् सर्वथा उनके दास बन जाते हैं किन्तु जो जीव शरणागत नहीं हैं, उनके हृदय में रहकर उनके प्रतिक्षण के शुभाशुभ कर्मों का हिसाब रखते हैं।

समदर्शिनी बनि रहें उर श्यामा।
जो जैसा करे वैसा फल पाये बामा॥ १६॥

भावार्थ—सभी के हृदय में समदर्शिनी बनकर श्रीराधा निवास करती हैं। अपने अपने कर्मानुसार जीव सुख -दुख प्राप्त करता है।

पूर्व जन्म कर्म नाहिं जाने कोउ बामा।
जाने और बिना कहे फल देवें श्यामा॥ १७॥

भावार्थ—पूर्व जन्म के कर्मों को कोई भी नहीं जानता। श्रीराधा जानती हैं एवं बिना कहे ही फल प्रदान करती हैं।

जो मन बुद्धि दै के भजे आठु यामा।
वाकी सँभार करें शिशु जनु श्यामा॥ १८॥

भावार्थ—जो जीव मन-बुद्धि का समर्पण कर निरन्तर श्रीराधा का स्मरण करता है उसका योगक्षेम वह उसी प्रकार वहन करती हैं जिस प्रकार नवजात शिशु की देखभाल माँ करती है।

भक्तों का योगक्षेम वहन करें श्यामा।
पतितों का पाप लिखें बैठि उर धामा॥ १९॥

भावार्थ—स्वामिनी श्री राधा भक्तों के हृदय में बैठ कर तो उनका योगक्षेम (जो प्राप्त है उसकी रक्षा एवं अप्राप्त को देना) वहन करती हैं किंतु पापियों के हृदय में बैठकर उनके

पाप-कर्मों का हिसाब लिखती हैं।

सब तजि जोइ भज श्याम अरु श्यामा।
श्यामा श्याम भी भजें वाको आठु यामा॥ २०॥

भावार्थ—जो समस्त आश्रयों का त्यागकर अनन्य भाव से एकमात्र श्यामा-श्याम का ही आश्रय ग्रहण कर उनका निरन्तर स्मरण करता है, श्यामा श्याम भी निरन्तर उसका स्मरण करते हैं।

मायाधीन जीव है अनादि कह बामा।
माया ते मुक्ति दिलावें श्याम श्यामा॥ २१॥

भावार्थ—जीव अनादि-काल से मायाधीन है। श्यामा श्याम की कृपा से ही जीव को इस अनादिकालीन माया के बंधन से छुटकारा प्राप्त होता है।

ब्रह्म की ही शक्ति जीव, माया कह बामा।
सब हैं सनातन माया, जीव, श्यामा॥ २२॥

भावार्थ—जीव ब्रह्म की शक्ति है। माया भी ईश्वरीय शक्ति है। माया, जीव एवं ब्रह्म स्वरूपा श्री राधा तीनों ही सदा से थे, सदा हैं, सदा रहेंगे।

माया है मिथ्या ऐसा बको आठु यामा।
किन्तु माया जाय जब कृपा करें श्यामा॥ २३॥

भावार्थ—ज्ञान-मार्ग के अनुयायी कहते हैं केवल ब्रह्म

ही सत्य है, माया मिथ्या है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'। परन्तु ज्ञानियों का यह कथन उनका भ्रम है। माया को मिथ्या कहने मात्र से माया से पीछा नहीं छूट सकता। श्री राधा-कृपाकटाक्ष के बिना करोड़ों उपाय भी इस माया से मुक्ति दिलाने में असमर्थ हैं।

साधना किये न मिलें श्याम पूर्णकामा।
पिया जिसे चाहे सोइ सुहागिनि बामा॥ २४॥

भावार्थ—साधना करने मात्र से पूर्णकाम श्यामसुन्दर की प्राप्ति असम्भव है। प्रियतम स्वयं रीझकर जिसे स्वीकार कर लें वही सुहागिन स्त्री है। 'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः ....'।

तुम भी चित हम भी चित कह ब्रजबामा।
तुम विभुचित हम अणुचित श्यामा॥ २५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम भी चित् स्वरूप हो और तुम्हारा अंश होने के कारण हम भी चित् हैं किंतु अन्तर इतना ही है कि तुम में अनन्त मात्रा की चित् शक्ति है, हम में अणु मात्रा की चित् शक्ति है। (अर्थात् किशोरी जी का ज्ञान अनन्त है उनके अंश स्वरूप जीव में अल्प ज्ञान है)।

तू तो है मायाधीश कह ब्रजबामा।
मैं भी तेरा अंश किन्तु मायाधीन श्यामा॥ २६॥

भावार्थ—हे श्यामा! माया तुम्हारी दासी है, तुम माया

की अधीश्वरी हो। मैं यद्यपि तुम्हारा ही अंश हूँ किंतु माया के आधीन हूँ।

तेरे मेरे पास माया, कह ब्रजबामा।
माया तेरी दासी मैं हूँ माया दासी श्यामा॥ २७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! यद्यपि तुम्हारे पास भी माया है और मैं भी माया से युक्त हूँ किन्तु माया तुम्हारी तो दासी है और मुझे उसने अपनी दासी बना रखा है।

तुम भी हम भी दोनों हैं अनादि कह बामा।
जो भी हो अनादि वो अनन्त होय श्यामा॥ २८॥

भावार्थ—-हे श्यामा! तुम और हम दोनों ही अनादि हैं एवं जो अनादि होता है, वह अनन्त भी होता है।

तुम भी अज हम भी अज रहें उर धामा।
तुम कर्म लिखो हम कर्म करें श्यामा॥ २९॥

भावार्थ—हे श्यामा! तुम भी अज (जन्म रहित) हो और मैं भी अज हूँ। हम तुम दोनों हृदय में रहते हैं किंतु अन्तर यह है कि मैं तो कर्मों का कर्ता हूँ और तुम कर्मों का हिसाब रखने वाली हो।

कोरे शब्द ज्ञान ते बने ना कछु कामा।
मन करो शरणागत पद श्री श्यामा॥ ३०॥

भावार्थ—केवल पुस्तकीय ज्ञान से कल्याण की आशा

करना व्यर्थ है। जब तक यह मन श्रीराधा पद्म-पराग का मत्त मधुप नहीं बन जाता तब तक इसे संसार के विषय-विष अपनी ओर आकर्षित करते ही रहेंगे।

मन ही शुभाशुभ कर्म करे बामा।
याते मन ते ही करो भक्ति आठु यामा॥ ३१॥

भावार्थ—मन ही शुभ अशुभ कर्मों का कर्ता है। अतएव मन से ही श्यामा श्याम की निरन्तर भक्ति करो। केवल इन्द्रियों द्वारा की गई भक्ति भक्ति नहीं है।

मन ने ही बाँधा कर्मपाश कह बामा।
काटे पाश मन ही शरण गहि श्यामा॥ ३२॥

भावार्थ—जीव तो कुछ करता नहीं है। मन ने ही इसको कर्म-जाल में फँसा रखा है। कर्म-बंधन में बँधा हुआ जीव जब अपने मन को श्रीराधा के शरणागत कर देता है तब यह मन ही जीव को कर्म-बंधन से मुक्त कर देता है।

माना मन अति चंचल कह बामा।
बार बार समझाओ मन तेरी श्यामा॥ ३३॥

भावार्थ—यह सत्य है कि मन अत्यंत चंचल है किन्तु यदि मन को बार बार समझाया जाय कि श्री राधा ही तेरी हैं (सांसारिक नातेदार तो केवल शरीर के हैं और उन नातों का आधार केवल स्वार्थ ही है)तो धीरे धीरे मन संसार से विरक्त

होकर श्री राधा में अनुरक्त हो जायेगा।

तेरे हैं अनन्त पाप कह ब्रज बामा।
याते धीरे धीरे मन भायेंगी श्यामा॥ ३४॥

भावार्थ—हे जीव! अनादिकाल से अनन्तानन्त पाप करने के कारण तेरा मन अत्यंत मलिन हो चुका है अतएव (साधना द्वारा अंतःकरण शुद्धि की मात्रानुसार) श्री राधा धीरे धीरे ही मन को अच्छी लगेंगी, एकाएक नहीं।

धीरे धीरे शिशु बने युवा कह बामा।
ऐसे ही माँगो सदा देंगी प्रेम श्यामा॥ ३५॥

भावार्थ—जैसे एक बालक धीरे-धीरे ही युवा बनता है, ऐसे हीश्री किशारी जी की शरण में जाकर उनसे सदा उनका दिव्य प्रेम माँगते रहो, अभ्यास करते-करते जिस क्षण तुम्हारी याचना शत-प्रतिशत शरणागतियुक्त हो जायेगी, उसी क्षण किशोरी जी तुम्हें दिव्य प्रेम दे देंगी।

बीज चिरकाल में ही फल देगा बामा।
ऐसे ही रोते रहो सुने कभू श्यामा॥ ३६॥

भावार्थ—"कालेन परिपच्यन्ते कृषि... ।' किसान अपने खेत में विविध प्रकार के अन्नों के दाने बीज रूप में डालता है। किन्तु फसल तैयार होने में समय की अपेक्षा होती है। इसी प्रकार साधन भक्ति भी धीरे-धीरे ही परिपक्व होगी।

अतएव निराशा से बचते हुये किशोरी जी की कृपा प्राप्ति हेतु आँसू बहाते रहो, एक दिन उनकी कृपा अवश्य प्राप्त होगी।

मान लो पतित आपु कहँ कह बामा।
बन ठन के जनि जाओ ढिंग श्यामा॥ ३७॥

भावार्थ— यदि तुम स्वयं को पतित स्वीकार कर लो तो तुम्हारा काम बन जाय। बनना ठनना (पतित होते हुये भी स्वयं को पतित न मानना) अर्थात् तुम जैसे हो वैसे ही उनकी शरण में आ जाओ।

मन में निराशा जनि लाओ कह बामा।
आशा रखो एक दिन पिघलेंगी श्यामा॥ ३८॥

भावार्थ—भूल कर भी अपने मन में निराशा को न आने दो। विश्वास रखो एक दिन किशोरी जी तुम्हें अवश्य अपनायेंगी।

मेरी थीं, मेरी हैं, मेरी रहेंगी भी श्यामा।
दृढ़ विश्वास रहे यह आठु यामा॥ ३९॥

भावार्थ—श्री राधा सदैव से ही मेरी थीं, मेरी हैं एवं सदा मेरी रहेंगी। यह दृढ़ विश्वास निरन्तर बना रहना चाहिये।

जहाँ रहो मन ते कहो कह बामा।
उर बैठी तेरे कर्म लिखें श्यामा॥ ४०॥

भावार्थ—तू जहाँ भी रहे अपने मन में यह निश्चय रख

कि श्रीराधा तेरे हृदय में बैठी तेरे शुभाशुभ कर्मों का लेखा लिख रही हैं।

पट्टी ना पढ़ाओ जानि भोरी भारी श्यामा।
तेरी करतूत देखें बैठी उर धामा॥ ४१॥

भावार्थ—श्रीराधा अत्यंत भोली भाली हैं, ऐसा समझकर उन्हें बहकाने का प्रयत्न न करो। श्रीराधा तो हृदय में बैठकर तुम्हारे प्रत्येक क्षण के प्रत्येक संकल्प को देख रही हैं।

आपु को इकलो न मानो कह बामा।
सदा सर्वत्र तेरे साथ रहें श्यामा॥ ४२॥

भावार्थ— कभी एक क्षण के लिये भी स्वयं को अकेला न मानो। सदा सब स्थानों पर श्रीराधा तुम्हारे साथ ही हैं।

प्रति जन्म नयी नयी मातु बनी बामा।
बदली न तेरी कभु साँची मातु श्यामा॥ ४३॥

भावार्थ—जीव के कर्मानुसार शरीर का जन्म मरण होता रहता है। इस कारण हर जन्म में नई नई मातायें भी बनीं। आत्मा की माँ श्रीराधा तो सदा से एक ही थीं, एक ही रहेंगी।

बार बार जग ते हटाओ मन बामा।
बार बार श्याम में लगाओ आठु यामा॥ ४४॥

भावार्थ—अपने मन को बार बार संसार से हटाकर श्याम सुन्दर में ही लगाने का अभ्यास करना है।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध मन कामा।
दूँगा दिव्य मन कहु चलु ढिग श्यामा॥ ४५॥

भावार्थ—अपने मन से कहो-तू शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ही तो चाहता है, चल श्रीराधा के निकट चल वहाँ तुझे दिव्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध प्राप्त होगा।

मन को भरोसा दिलाओ आठु यामा।
तेरे तो हैं परम हितैषी श्याम श्यामा॥ ४६॥

भावार्थ—अपने मन को यही विश्वास दिलाओ कि श्यामा श्याम के अतिरिक्त तेरा कोई हितैषी नहीं है।

और द्वार जाओ न अनन्य बनो बामा।
त्रिगुण, त्रिताप, त्रिकर्म, काटें श्यामा॥ ४७॥

भावार्थ—जीव को अनन्य आश्रय एकमात्र श्रीराधा का ही ग्रहण करना चाहिये। द्वार द्वार भटकने से क्या लाभ? जीव के त्रिगुण (सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण) त्रिताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) त्रिकर्म (संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण) शरण में जाते ही समाप्त हो जायेंगे।

मूर्ख कर्म करे स्वर्ग हित कह बामा।
ज्ञानी मुक्ति धाम पाये, भक्त हरि धामा॥ ४८॥

भावार्थ—मूर्ख व्यक्ति सकाम कर्म द्वारा स्वर्ग को प्राप्त करता है। ज्ञानी भी श्रीकृष्ण भक्ति द्वारा मुक्ति प्राप्त कर लेता है किंतु भक्त हरिधाम को ही प्राप्त कर लेता है।

वेद धर्म पालन ते मिले स्वर्ग धामा।
श्याम प्रेम ते ही मिले गोलोक बामा॥ ४९॥

भावार्थ—वेद-वर्णित धर्म का पालन करने से स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। किंतु श्याम-सुन्दर के लोक (गोलोक) की प्राप्ति तो श्रीकृष्ण-प्रेमियों को ही होगी।

निंदनीय देवी देव भक्ति निष्कामा।
वन्दनीय श्यामा श्याम भक्तिहूँ सकामा॥ ५०॥

भावार्थ—देवताओं की निष्काम भक्ति भी निंदनीय है। श्यामा श्याम की सकाम भक्ति भी वंदनीय है।

निन्दनीय श्यामा श्याम प्रेम भी सकामा।
वन्दनीय श्यामा श्याम प्रेम निष्कामा॥ ५१॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम का भी प्रेम यदि वह सकाम है, निंदनीय है। श्यामा- श्याम का निष्काम प्रेम वंदनीय है।

हरि गुरु ते न कछु माँगो ब्रज बामा।
दोनों ते सदा करो प्रेम निष्कामा॥ ५२॥

भावार्थ—हरि एवं गुरु से कभी अपनी किसी कामना पूर्ति की आशा नहीं करनी चाहिये। जीव को सदैव निष्काम प्रेम ही करना चाहिये।

विष कीड़ा विष रस माँगे आठु यामा।
मन माँगे विषयन नहिं माँगे श्यामा॥ ५३॥

भावार्थ—जिस प्रकार विष का कीड़ा निरन्तर विष के रस में ही संतुष्ट रहता है, उसी प्रकार यह धूर्त मन भी निरन्तर विषयों के रस में ही आनंद का अनुभव करता है। यह श्री राधिका के नाम, रूप, लीला, गुणादि का गायन, स्मरण आदि कर सुखानुभूति नहीं करता।

भुक्ति माँगें मूढ़ जन मिटै नहिं कामा।
मुक्ति माँगें महामूढ़ कहें ब्रज बामा॥ ५४॥

भावार्थ—जो लोग भगवान् से सांसारिक-भोग माँगते हैं, वे मूर्ख हैं, मुक्ति की कामना करने वाले तो और भी अधिक मूर्ख हैं, क्योंकि मुक्त हो जाने पर तो भगवत्प्रेम मिलने की सम्भावना भी नहीं रहेगी।

माँगना हो तो माँगो सेवा श्याम श्यामा।
सेवा हित पुनि माँगो प्रेम निष्कामा॥ ५५॥

भावार्थ—यदि माँगना ही है तो युगल-सरकार की सेवा ही माँगनी चाहिये। सेवा के लिये निष्काम-प्रेम की याचना करनी चाहिये।

झूठे ही बुलावें लोग आओ उर श्यामा।
कहाँ आवें नातेदार बैठे उरधामा॥ ५६॥

भावार्थ—संसारी जीव शुद्ध हृदय से श्यामा श्याम को नहीं बुलाते। जिस हृदय में सांसारिक संबंधी विराजमान हैं

उसमें श्यामा-श्याम किस प्रकार आवें?

डेरा डारे नातेदार बैठे उरधामा।
उनको निकालो तो मैं आऊँ कह श्यामा॥ ५७॥

भावार्थ—किशोरी जी कहती हैं-तुम्हारे हृदय में सांसारिक संबंधियों ने अपना स्थान जमा रखा है। जब तुम उन्हें हृदय से बाहर करो तब तो मैं तुम्हारे हृदय में अपना स्थान बनाऊँ।

उर में बिठाना चाहो जग संग श्यामा।
अंधकार रवि कभु रहे एक ठामा॥ ५८॥

भावार्थ—जिस हृदय में जगत् का निवास है, उसमें श्री किशोरी राधिका अपना आसन कैसे स्थापित करें? अंधकार और सूर्य कभी एक साथ नहीं रह सकते।

संसारी नर नारी में आठु यामा।
भगवद् भाव नहिं सदा रहे बामा॥ ५९॥

भावार्थ—संसारी स्त्री-पुरुषों में निरंतर भगवद्भाव नहीं रखा जा सकता।

जाको होवे प्रेम जासों मृत्युलोक धामा।
मृत्यु के बाद उसे वही मिले बामा॥ ६०॥

भावार्थ—मृत्युलोक में जीवित अवस्था में जिसका जिससे प्रेम होता है, मृत्यु के बाद उसे वही प्राप्त होता है।

याते मायाबद्ध ते न प्यार करो बामा।
हरि गुरु ते ही प्यार करो आठु यामा॥ ६१॥

भावार्थ—मायाधीन जीव से प्रेम करने का परिणाम यही निकलेगा कि मृत्यु के बाद उसी की प्राप्ति होगी। इसलिये जीव को एकमात्र हरि एवं गुरु से ही निरन्तर प्रेम-संबंध जोड़ना है।

भोरे बनि जाओ क्योंकि भोरीभारी श्यामा।
भोरीभारी को प्रिय भोरा उरधामा॥ ६२॥

भावार्थ—भोली भाली श्रीराधा को यदि रिझाना चाहते हो तो तुम्हें भी अत्यन्त भोला भाला बनना पड़ेगा। भोली भाली राधा भोले भाले हृदय में ही निवास करती हैं।

जल बिनु मीन ज्यों विकल कह बामा।
वैसे मन व्याकुल हो जाय बिनु श्यामा॥ ६३॥

भावार्थ—जिस प्रकार जल के बिना मछली जीवित नहीं रह सकती, उसी प्रकार यदि श्रीराधा के वियोग में मन छटपटाने लगे तब ही उनकी कृपा प्राप्त हो सकती है।

रहा नाहिं जाये जब मिले बिनु श्यामा।
तब जानो प्रेमबीज, जामा उरधामा॥ ६४॥

भावार्थ—जब श्रीराधा के मिलन के बिना प्राण व्याकुल हो उठें तब समझो कि प्रेम बीज का वपन हृदय में हो चुका।

ऐसी चाह पैदा करो निज उरधामा।
जैसे करे दीप ते पतंग कह बामा॥ ६५॥

भावार्थ—अपने हृदय-भवन में श्री किशोरी जी के प्रति इतना प्रेम उत्पन्न करो जितना कि दीपक से पतंग करता है। पतंग दीप के रूप का पुजारी है। रूप दर्शन की ऐसी चाह पतंग में है कि वह दीपक की लौ पर अपने प्राण ही भेंट कर देता है।

ऐसा करे मन प्रेम चरनन श्यामा।
जैसा करे मधुप, कमल सों बामा॥ ६६॥

भावार्थ—श्री श्यामा के चरणों में जीव को ऐसा प्रेम करना चाहिये जैसा भ्रमर कमल से करता है।

पहले लगाओ बार बार मन श्यामा।
फिर आपु लगने लगेगा कह बामा॥ ६७॥

भावार्थ—साधनावस्था में बार-बार मन को अपनी आराध्या श्रीराधा में लगाना होगा, पश्चात् भावभक्ति की अवस्था पर स्वयं लगने लगेगा।

अभ्यास ते ही मन लगे कह बामा।
बार बार रूपध्यान करो आठु यामा॥ ६८॥

भावार्थ—मन को इष्ट में लगाने के लिये बार बार अभ्यास करना होगा। अतः निरन्तर श्रीराधा के स्वरूप के ध्यान का

अभ्यास करो।

रसिकों ने समझाया कह ब्रजबामा।
आत्मा की आत्मा की आत्मा हैं श्यामा॥ ६९॥

भावार्थ—रसिक जन समझाते हैं-जीवात्मा की आत्मा श्रीकृष्ण हैं एवं श्रीकृष्ण की आत्मा श्रीराधा हैं।

श्यामा को भूलो जनि कभू आठु यामा।
उनते भी कहो भूलें जनि तोहिं श्यामा॥ ७०॥

भावार्थ—हे मन! निरन्तर अपनी इष्टदेवी श्रीराधा का स्मरण कर। उनसे भी यही प्रार्थना कर कि तुझे वे एक क्षण को भी न भूलें।

जहाँ जब रहो सोचो सदा उर धामा।
मन की करतूत सारी लिखें नित श्यामा॥ ७१॥

भावार्थ—जीव जिस किसी भी स्थान पर रहे, उसे सदा यह चिंतन करना चाहिये कि मेरे हृदय में विराजमान श्रीराधा मेरे मन के शुभ अशुभ समस्त संकल्पों को जानकर उनके अनुसार मुझे मेरे कर्मों का फल प्रदान करेंगी।

जानने मात्र ते ना बने कछु कामा।
जानो पुनि मानो पुनि जाहु शरण श्यामा॥ ७२॥

भावार्थ—शास्त्रों के श्रवण-पठन के द्वारा केवल जान लेने मात्र से काम नहीं बनेगा। पहले जानना है, जानने के बाद

मानना एवं मानने के बाद श्री राधिका की मन से शरणागति करनी होगी।

राधा नाम-रूप-गुण-लीला-जन-धामा।
याही में लगाओ मन भाव निष्कामा॥ ७३॥

भावार्थ—निष्काम भाव से श्रीराधा नाम,रूप,गुण, लीला, जन एवं धाम में ही अपने मन को लगाओ। इसी में मानव-जीवन की सार्थकता है।

श्यामा श्याम नाम, रूप, लीला, गुण, धामा।
जेहि ग्रन्थ ना हो वाय करो परनामा॥ ७४॥

भावार्थ—जिस ग्रन्थ में श्यामा श्याम के नाम, रूप लीला, गुण, धाम का वर्णन न किया गया हो, उसे दूर से ही प्रणाम करना चाहिये।

वेद ब्रह्म वाणी ही है करो परनामा।
किन्तु दूर ते ही नहिं लीला श्याम श्यामा॥ ७५॥

भावार्थ—यद्यपि वेद ब्रह्मवाणी है परन्तु उसे दूर से ही प्रणाम करना चाहिये क्योंकि उसमें सगुण साकार श्यामा-श्याम का लीला-रस नहीं है।

वेद कहें निर्गुण ब्रह्म सुख धामा।
याको अर्थ माया गुण हीन कह बामा॥ ७६॥

भावार्थ—सुखस्वरूप ब्रह्म निर्गुण है, ऐसा वेद कहते हैं।

निर्गुण से तात्पर्य है माया के तीनों गुणों से अतीत ब्रह्म है– 'माया गुन गोपार।'

ब्रह्म है सगुण याको अर्थ कह बामा।
दिव्य गुणयुक्त श्याम हैं पूर्ण कामा॥ ७७॥

भावार्थ— सगुण ब्रह्म का अर्थ माया के गुणों से रहित, अनन्त दिव्य करुणादि गुणों से युक्त श्रीकृष्ण पूर्णकाम ब्रह्म है।

ब्रह्म है अकाय याको अर्थ कह बामा।
श्यामा श्याम काय तो है चिदानन्द धामा॥ ७८॥

भावार्थ—वेद कहता है–ब्रह्म अकाय अर्थात् शरीर–रहित है। इसका अर्थ यह है कि श्यामा श्याम का शरीर पंचभूत निर्मित नहीं है। श्यामा श्याम में शरीर और शरीरी (आत्मा) पृथक् पृथक् नहीं होते,अत: उन्हीं की भाँति उनका शरीर भी चिदानंदमय है।

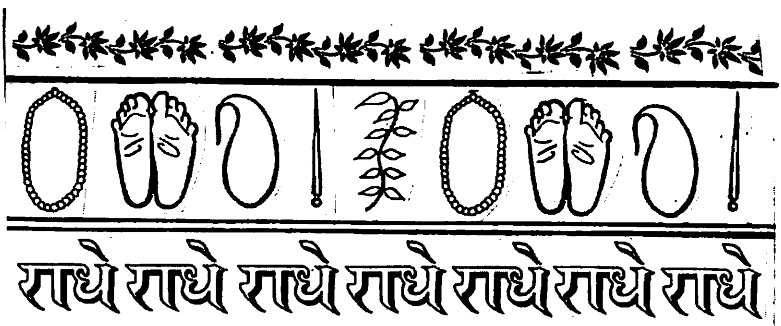

जीव की है प्राकृत दृष्टि कह बामा।
गुरु दिव्य दृष्टि दे दिखा दे श्याम श्यामा॥ ७९॥

भावार्थ—जीव मायाबद्ध है, अतः समस्त इन्द्रियाँ प्राकृत होने के कारण श्यामा-श्याम के दिव्य दर्शन आदि का लाभ प्राप्त नहीं कर सकतीं। गुरु में वह सामर्थ्य है जो दिव्य दृष्टि प्रदान कर श्यामा श्याम के चिदानन्दमय रूप का दर्शन करा दे।

गुरु ही है ब्रह्मा विष्णु शिव कह बामा।
गुरु ब्रह्म भी है जो मिला दे श्याम श्यामा॥ ८०॥

भावार्थ—गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शिव है। गुरु ब्रह्म भी है जो श्यामा-श्याम की प्राप्ति करा सकता है।

'गिरत्यज्ञानमिति' गुरु कह बामा।
अज्ञान नासे दे दे ज्ञान श्याम श्यामा॥ ८१॥

भावार्थ—'गुरु' शब्द की व्याख्या करते हुए बताया गया है कि जो शिष्य के हृदय के अज्ञान को दूर कर श्यामा-श्याम का ज्ञान प्रदान करे वही गुरु है।

'ज्ञानं गृणाति' गुरु सोइ कह बामा।
जो तत्व ज्ञान दे दे कौन श्याम श्यामा॥ ८२॥

भावार्थ—'ज्ञानं इति गृणाति गुरुः'- गुरु शब्द की इस व्याख्या के अनुसार श्यामा श्याम के स्वरूप का ज्ञान प्रदान

करने वाला ही गुरु है।

गुरु करे उसे जिसे मिले श्याम श्यामा।
कान फुँकवाने ते ना बने कभु कामा॥८३॥

भावार्थ—गुरु उसी को बनावे जिसे श्यामा श्याम की प्राप्ति हो चुकी है। केवल जिस तिस से कान फुंकवाने मात्र से कार्य सिद्ध नहीं होगा।

जिससे मिले तत्वज्ञान, प्रेम, श्याम श्यामा।
उसको ही गुरु मानो, वही गुरु धामा॥८४॥

भावार्थ—जिसके द्वारा श्यामा श्याम के स्वरूप का वास्तविक ज्ञान, अपने स्वरूप का ज्ञान, संसार का ज्ञान प्राप्त हो वही गुरु है। जिससे श्यामा श्याम का प्रेम प्राप्त हो वही गुरु है। जहाँ ऐसा गुरु वास करता है, वही गुरुधाम है।

गुरु नाता मन ते जोड़ो, सदा आठु यामा।
जग नाता मन ते तोड़ो, मिलें श्याम श्यामा॥८५॥

भावार्थ—गुरु के साथ मन का तादात्म्य स्थापित करना चाहिये। यह मानसिक संबंध निरन्तर बनाये रहना चाहिये एवं संसार में शरीर को रखते हुए भी, मन से संसार का संबंध त्याग देना चाहिये। श्यामा श्याम मिल जायेंगे।

गुरुभक्त मेरा भक्त, मानें सुख धामा।
माने नहिं मेरा भक्त, भक्त श्याम श्यामा॥८६॥

भावार्थ—श्यामा श्याम गुरु के भक्त को ही अपना वास्तविक भक्त मानते हैं। जो गुरुभक्त नहीं है, सीधे श्यामा श्याम की ही भक्ति करता है, उसे वे अपना भक्त नहीं मानते।

श्यामा श्याम कहें गुरु भजो आठु यामा।
गुरु कहे आठों याम भजो श्याम श्यामा॥ ८७॥

भावार्थ—श्यामा श्याम कहते हैं- निरन्तर गुरु की सेवा करो, गुरु में मन-बुद्धि स्थापित करो। गुरु कहते हैं-निरन्तर श्यामा-श्याम का भजन करो।

मन न मनन करे श्याम अरु श्यामा।
नमन न मन करे पद गुरु धामा॥ ८८॥

भावार्थ—यह दुष्ट मन श्यामा-श्याम का चिंतन नहीं करता। न ही गुरु के चरणों में झुकता है।

मन है अशुद्ध शुद्ध करो गुरु धामा।
शुद्ध मन लै के जाओ पुनि हरि धामा॥ ८९॥

भावार्थ—अपने अशुद्ध मन को गुरु के निर्देशन में रहकर शुद्ध करना चाहिये। गुरु द्वारा बताई हुई साधना द्वारा अन्तःकरण शुद्ध कर लेने पर ही जीव दिव्य भगवद्धाम में जाने का अधिकारी बनता है।

गुरु ढिग में ही रहें श्याम अरु श्यामा।
याते गुरुधाम ही है आपु हरि धामा॥ १०॥

भावार्थ—श्यामा श्याम निरन्तर गुरु के अन्दर बाहर सन्निहित हैं इस कारण गुरु-धाम ही हरिधाम है।

संसार छोड़ो चलो सब गुरु धामा।
हरि गुरु दोनों मिलें वहाँ आठु यामा॥ ११॥

भावार्थ—मनुष्य को संसार की वासना छोड़कर निरन्तर गुरु के सन्निकट रहकर उनके आदेश का पालन करते रहना चाहिये। गुरु-धाम में वास करने से हरि एवं गुरु दोनों की ही प्राप्ति होगी।

तन, मन, धन दान करो गुरु धामा।
उन्हीं की कृपा ते मिलें, श्याम अरु श्यामा॥ १२॥

भावार्थ—गुरु धाम में वास करते समय अपने तन मन धन को गुरु के प्रति समर्पण कर देना चाहिये।

गुरुदेव सेवा मिले गये गुरुधामा।
गुरु की सेवा ते मिले प्रेम निष्कामा॥ १३॥

भावार्थ—गुरुधाम में वास करने से गुरु-सेवा प्राप्त होती है। गुरु-सेवा से श्यामा-श्याम का निष्काम प्रेम प्राप्त होता है।

गुरु ते ही ज्ञान मिले गये गुरुधामा।
ज्ञान ते हो हरि गुण- गान आठु यामा॥ १४॥

भावार्थ—गुरु धाम में वास करने से गुरु द्वारा तत्वज्ञान की प्राप्ति होती है एवं तत्वज्ञान से निरन्तर हरि-गुण-गान होता है।

माया ने भुलाया जग भाया आठु यामा।
गुरु ने जगाया कहा तेरी एक श्यामा॥ १५॥

भावार्थ—माया के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाने एवं अपने को शरीर मान लेने के कारण मैं अनादिकाल से निरन्तर संसार में ही अनुरक्त था। गुरु ने इस मोह- निद्रा से जगाकर यह ज्ञान कराया कि तेरी अंशी श्री राधा ही एकमात्र तेरी हैं।

गुरु की शरण गहो जाय गुरुधामा।
हरि नाम गुण गावो बनो निष्कामा॥ १६॥

भावार्थ—गुरुधाम में जाकर गुरु की शरणागति ग्रहण करो एवं निष्काम भावना से युक्त होकर निरन्तर हरि-गुण-गान करो।

नाम अपराध जनि करो गुरुधामा।
अन्यथा नरक में भी मिले नाहिं ठामा॥ १७॥

भावार्थ—गुरुधाम में जाकर नामापराध से सावधान रहना

चाहिये अन्यथा नरक में भी स्थान नहीं प्राप्त होगा।

आदेश पालन हो सदा गुरुधामा।
आदेश पालन ते मिलें श्याम श्यामा॥ ९८॥

भावार्थ—साधक को बड़ी सावधानी से सद्गुरु के आदेश का सदा पालन करना चाहिये। गुरु आदेश–पालन से ही श्यामा–श्याम की प्राप्ति होगी।

गुरु की बुद्धि ते बुद्धि जोड़े रहो बामा।
उसी बुद्धि ते चलाओ मन आठु यामा॥ ९९॥

भावार्थ—साधक को अपनी बुद्धि गुरु की बुद्धि से जोड़ देनी चाहिये। पुनः गुरु से तादात्म्य प्राप्त अपनी उसी बुद्धि द्वारा मन को नियंत्रित करना चाहिये।

गुरु रुचि महँ रुचि राखो गुरुधामा।
चाहो जनि भुक्ति मुक्ति वैकुण्ठ बामा॥ १००॥

भावार्थ—गुरुधाम में वास करते समय प्रतिक्षण गुरु की रुचि में रुचि रखने का अभ्यास करना चाहिये। यहाँ तक कि ब्रह्मलोक पर्यन्त के ऐश्वर्य भोग, मुक्ति की कामना एवं बैकुण्ठ लोक के सुख की भी इच्छा साधक के मन में भूलकर भी नहीं आनी चाहिये।

हरि गुरु एक मानो रहो गुरुधामा।
अनुकूल चिन्तन करो आठु यामा॥ १०१॥

भावार्थ—हरि गुरु को एक मानते हुये गुरुधाम में निवास करो। सदैव गुरु के अनुकूल ही चिंतन करो।

गुरु में हरिबुद्धि रखो सदा गुरुधामा।
नरबुद्धि आने नहिं पाये आठु यामा॥ १०२॥

भावार्थ—गुरु के प्रति सदैव भगवद् बुद्धि ही रखो। निरन्तर यह सावधानी रखो कि उनके प्रति मनुष्य की बुद्धि न आने पाये। तभी गुरुधाम में वास करना सफल होगा।

गुरु की हो भक्ति वैसी जैसी श्याम श्यामा।
या करो गुरु की ही भक्ति आठु यामा॥ १०३॥

भावार्थ— अपने इष्ट श्यामा-श्याम एवं गुरु की एक जैसी भक्ति ही करनी चाहिये अथवा केवल गुरु की ही भक्ति करे। यह भक्ति निरन्तर बनी रहे इस का ध्यान रखना है।

माया को भगाना हो तो जाओ गुरुधामा।
वहाँ रहें मायापति श्याम आठु यामा॥ १०४॥

भावार्थ—यदि जीव अपने हृदय से सदा के लिये माया को भगाना चाहे तो उसे गुरु-धाम में जाकर गुरु के सन्निकट ही निवास करना चाहिये। माया मायापति श्यामसुन्दर की दासी है उनकी कृपा के बिना यह किसी का पीछा नहीं छोड़ती। मायापति श्यामसुन्दर गुरु के निकट ही निरन्तर बने रहते हैं अतः गुरु-चरणों में वास करने से माया निवृत्ति सहज रूप से

हो जायेगी।

श्रद्धा ते सत्संग करो गुरुधामा।
सत्संग ते ही मिले प्रेम निष्कामा॥ १०५॥

भावार्थ—जीव को गुरु धाम में जाकर श्रद्धापूर्वक गुरु का संग करना चाहिये। सत्संग अर्थात् सन्त का संग करने से ही निष्काम प्रेम की प्राप्ति होती है।

गुरु का ज्ञान प्रेम देखो जाय गुरुधामा।
बाह्य व्यवहार जनि देखो आठु यामा॥ १०६॥

भावार्थ—गुरुधाम में जाकर केवल गुरु के ज्ञान और प्रेम को ही देखें, अन्य बाह्य व्यवहार पर ध्यान न दें।

महापुरुषों के आदेश-पालन में ही मन-बुद्धि का सम्बन्ध स्थापित करें। उनके बाह्य आचरणों पर ध्यान न दें।

गुरुधाम सम नहिं और कोउ धामा।
गुरु की शरण जाय, जाय हरि ठामा॥ १०७॥

भावार्थ—गुरु-धाम के समान अन्य कोई धाम नहीं। गुरु शरणागति से ही श्री हरि का धाम प्राप्त हो जाता है।

हरि धाम देखा नहिं देखा गुरुधामा।
गुरु सेवा ते ही मिले दिव्य हरिधामा॥ १०८॥

भावार्थ—साधारण जीव गुरु-धाम का दर्शन प्राप्त कर

सकते हैं। हरिधाम तो बिरले ही प्राप्त करते हैं। गुरु-सेवा के प्रभाव से ही दिव्य-हरिधाम गोलोक की प्राप्ति होती है।

रागी हो विरागी हो या जाओ गुरुधामा।
वहाँ मिले सबको ही प्रेम श्याम श्यामा॥ १०९॥

भावार्थ—कोई साधक गृहस्थ है या विरक्त, उसे गुरुधाम अवश्य जाना चाहिये। हर व्यक्ति के लिये गुरुधाम में श्यामा श्याम का प्रेम वितरित होता है।

हरि गुरु भक्ति करो मन हो अकामा।
तब गुरु देंगे दिव्य प्रेम श्याम श्यामा॥ ११०॥

भावार्थ—जब निष्काम भाव से जीव हरि-गुरु की भक्ति करता है तब दयालु गुरु उस जीव को श्यामा श्याम का दिव्य प्रेम प्रदान करते हैं।

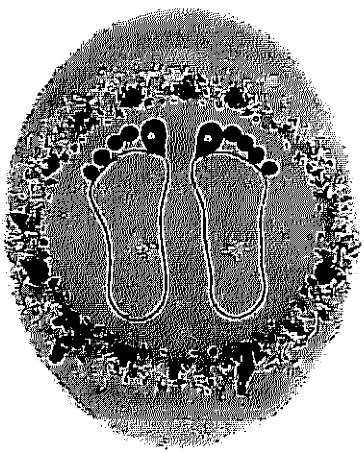

चित को चुराया चित भाया सुखधामा।
दास बना के सेवा देना आठु यामा॥ १११॥

भावार्थ—हे सुखधाम श्रीकृष्ण! मेरा चित्त तो तुमने चुरा लिया है। अब तुमसे मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे अपना दास बनाकर सदा अपनी सेवा प्रदान करना।

तू तो है अनन्त प्रेमसिन्धु सुखधामा।
एक बिन्दु सिन्धु ते पिला दे पूर्णकामा॥ ११२॥

भावार्थ—हे सुखधाम! तुम अनन्त प्रेम के समुद्र हो। हे पूर्णकाम! अपने उस प्रेम-सिंधु में से एक बूँद मुझे भी पिला दो।

एक बार मुरली सुना दे सुखधामा।
फिर मैं न पाछा छोडूँ तेरा आठु यामा॥ ११३॥

भावार्थ—हे कृष्ण! एक बार मुझे भी अपनी मुरली की मधुर ध्वनि सुना दो। फिर मैं कभी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूंगा।

हम भूले अचरज नहिं श्याम श्यामा।
तुम कस भूले रह मम उर धामा॥ ११४॥

भावार्थ—हे श्यामा श्याम! हम तो मायाधीन हैं। हम तुम्हें भूल गये तो कोई आश्चर्य नहीं किंतु तुम तो मेरे हृदय में ही निवास करते हो, फिर तुम मुझे कैसे भूल गये?

तेरा नाम गा रहा हूँ बैठि तेरे धामा।
नाम, धाम शक्ति दोनों कहाँ गईं श्यामा॥ ११५॥

भावार्थ—हे प्रियतम प्राणाधिके! मैं तुम्हारे दिव्य धाम में बैठकर तुम्हारे दिव्य चिन्मय नामों का गायन कर रहा हूँ। तुम्हारे धाम एवं नाम में तो तुम्हारी समस्त शक्तियों का निवास है। मेरे लिये वे शक्तियाँ कहाँ अदृश्य हो गईं?

जो भी पतित गया तेरे द्वार श्यामा।
खाली हाथ लौटा नहिं वापस धामा॥ ११६॥

भावार्थ—हे प्रियमुखचन्द्रचकोरी श्रीराधे! तुम्हारे द्वार पर जो भी पतित आया वह खाली हाथ अपने घर नहीं लौटा।

पतितों का काम यदि नाहिं किया श्यामा।
कोइ नहिं लेगा तेरा भूल कर नामा॥ ११७॥

भावार्थ—हे चन्द्रवदनी श्री राधे! यदि तुमने पतितों को पावन करने का कार्य नहीं किया तो कोई भूलकर भी तुम्हारा नाम नहीं लेगा।

होते न पतित यदि हम जग श्यामा।
बंद हो जाता पतित पावन कामा॥ ११८॥

भावार्थ—हे पतित पावनी श्यामा! यदि संसार में हमारे जैसे पतित न होते तो तुम्हारा पतितों को पावन करने का कार्य ही समाप्त हो जाता।

शरणागत को ही जो दो प्रेम श्यामा।
कारण रहित कृपालु जाय नामा॥ ११९॥

भावार्थ—हे कृपामयी राधे! यदि तुम केवल शरणागत जीवों को ही अपना प्रेम प्रदान करती हो तो तुम्हारा अकारण कृपालु नाम व्यर्थ हो जायगा।

मैंने सुना है तेरी कृपा शक्ति श्यामा।
पतितों को भी अपनावे आठु यामा॥ १२०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारे रसिक भक्तों के मुख से मैंने ऐसा सुना है कि तुम्हारी कृपा शक्ति निरन्तर पतितों को भी अपनाने का कार्य करती है।

वेदों ने बताया तू अनन्त शक्ति धामा।
पतितों के काम की तो कृपा शक्ति श्यामा॥ १२१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! वेद कहते हैं–तुम अनन्त शक्तियों की भंडार हो किंतु पतितों का तो केवल तुम्हारी कृपा शक्ति से ही काम बनेगा।

तुम तो कृपामयी भोरी भारी श्यामा।
करोगी कृपा कभु कह ब्रज बामा॥ १२२॥

भावार्थ—हे भोली भाली राधे! तुम तो अत्यन्त कृपामयी हो। कभी न कभी मेरे ऊपर भी कृपा करोगी ही।

तेरी कृपा शक्ति को भरोसो बड़ो श्यामा।
कभु कृपा होगी दोगी प्रेम निष्कामा॥ १२३॥

भावार्थ—हे श्री राधे! मुझे तुम्हारी कृपाशक्ति का ही भरोसा है। कभी तो तुम कृपा कर अपना प्रेम प्रदान करोगी ही।

तेरी कृपा का ओर छोर नाहिं श्यामा।
फिर भी देर किया मेरा किया नाहिं कामा॥ १२४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारी कृपा की कोई सीमा नहीं है। फिर भी मेरी बार देर क्यों हो रही है? मेरा काम तो अभी तक नहीं बना।

सुना है तु कोमल कोमल श्यामा।
मेरे लिए निठुर भई काहे धामा॥ १२५॥

भावार्थ—हे करुणामयी श्री राधे! तुम्हारा स्वभाव तो कोमल से भी कोमल है फिर मेरे लिए अपने धाम में निष्ठुर क्यों बन गई?

सुना है तु ब्रज रस बाँटे आठु यामा।
मैं भी इसी आशा ते आया द्वार श्यामा॥ १२६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैंने सुना है तुम निरन्तर ब्रजरस की वर्षा करती हो। मैं भी इसी आशा से तुम्हारे द्वार पर आया हूँ कि तुम मुझे भी अपना ब्रजरस प्रदान करो।

ब्रजरस में रहें डूबी ब्रज बामा।
वाई रस में ही डुबा दे मोहिं श्यामा॥ १२७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारी सहचरी, ब्रजबामायें निरन्तर ब्रज-रस में डूबी रहती हैं। मुझे भी उस रस से ओत-प्रोत कर दो।

ब्रज रस पिये बिनु लौटूँ जो धामा।
बदनाम होंगे दोनों श्याम अरु श्यामा॥ १२८॥

भावार्थ—हे श्यामा श्याम! यदि मैं ब्रज-रस की प्राप्ति के बिना ही अपने घर लौट गया तो तुम दोनों की बड़ी बदनामी होगी।

माया ने घुमाया लख चौरासी धामा।
अब तो बचा ले तेरे द्वार आया श्यामा॥ १२९॥

भावार्थ—हे श्यामा! अभी तक तुम्हारी दासी माया द्वारा चौरासी लाख योनियों में मुझे खूब भ्रमण कराया गया किंतु अब तो मैं तुम्हारे द्वार पर आ गया हूँ। अब तो मेरी रक्षा करो।

सुना है कि तेरा धाम चिदानन्द धामा।
वहाँ माया जाय ना बुला ले मोहिं श्यामा॥ १३०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैंने सुना है तुम्हारे समान तुम्हारा धाम (वृन्दावन गोलोक) भी चिदानंदमय है। वहाँ माया का प्रवेश नहीं है। हे वृन्दावनेश्वरी! कृपा कर मुझे अपने मायातीत दिव्य धाम श्री वृन्दावन का वास प्रदान करो।

अगनित पतितन दिये निज धामा।
मेरे लिये काहे किये द्वार बंद श्यामा॥ १३१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! आपने असंख्य पतितों को अपना धाम प्रदान किया है। फिर मेरे लिये अपना द्वार क्यों बंद कर लिया?

महल टहलिनी बना दो निज धामा।
किन्तु परन्तु लगाओ जनि श्यामा॥ १३२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मुझे अपने निज महल की सेवा प्रदान करो। अब किंतु परन्तु लगाकर देर मत करो।

महल की सेवा जो ना दे सके श्यामा।
कुञ्ज की ही सेवा दे दे वृन्दावन धामा॥ १३३॥

भावार्थ—हे श्री राधे! यदि तुम मुझे अपने महल की सेवा न दे सको तो श्री वृन्दावन धाम में कुंज की ही सेवा प्रदान कर दो।

सेवा की लालसा बढ़ा दे मम श्यामा।
मुक्ति नाहिं चाहूँ नाहिं वैकुण्ठ धामा॥ १३४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! आपका दास्य मुझे प्राप्त हो। आपके प्रति मेरी सेवा-वासना बढ़ती ही जाय। मुझे न तो मुक्ति की इच्छा है और न वैकुण्ठ की।

बार बार आया तेरे दिव्य धाम श्यामा।
किन्तु जैसा आया वैसा लौटा निज धामा॥ १३५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं बार-बार तुम्हारे दिव्य धाम में आया हूँ किंतु तुम्हारी कृपा को प्राप्त किये बिना जैसा आया हूँ वैसा ही लौट गया हूँ।

चिदानन्द भाव नहिं होय ब्रज धामा।
कहाँ जाउँ कासों कहुँ कहा करूँ श्यामा॥ १३६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! यद्यपि मैं तुम्हारे दिव्य क्रीड़ास्थल श्री धाम वृन्दावन में वास तो करता हूँ किंतु उस चिन्मय भूमि में दिव्य भावना नहीं बना पाता। मैं कहाँ जाऊँ, किससे कहूँ, क्या करूँ?

नामी का न पाया रस गाया तेरा नामा।
पित्त रोगी को ज्यों मीठा खारा लगे बामा॥ १३७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! यद्यपि मैंने तुम्हारे नाम का अहर्निश गान किया किन्तु नाम में विराजमान नामी का आनन्द मुझे प्राप्त नहीं हुआ। जिस प्रकार पित्त के रोगी को मीठी वस्तु भी खारी प्रतीत होती है उसी प्रकार मुझे तुम्हारे मधुर नाम का रस

प्राप्त नहीं हो सका।

जीभ घिस गई गाते गाते तव नामा।
अब या तो प्रेम दे या ले ले प्राण श्यामा॥ १३८॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारे नाम का गायन करते करते मेरी जिह्वा घिस गई। मैं थक चुका। अब या तो अपना प्रेम प्रदान करो अथवा मेरे प्राण ही ले लो।

माँगता रहूँगा रो रो प्रेम निष्कामा।
बुरा नहीं मानूँगा तू दे या ना दे श्यामा॥ १३९॥

भावार्थ—हे श्री राधे! मैं तो रो रोकर तुमसे तुम्हारे निष्काम प्रेम की भीख माँगता ही रहूँगा। देना न देना तुम पर निर्भर है। तुम नहीं भी दोगी तो भी मैं बुरा नहीं मानूँगा।

बामन ने माँगा तीन पग भूमि धामा।
बलि ने दिया याते माँगूं प्रेम श्यामा॥ १४०॥

भावार्थ—वामन अवतार में भगवान् ने बलि के द्वार पर तीन पग पृथ्वी की याचना की। राजा बलि ने भगवान की याचना पर उन्हें तीन पग पृथ्वी प्रदान भी की। इसी आधार पर मैं भी तुमसे प्रेम की भिक्षा माँग रहा हूँ। तुम भी मुझे कभी प्रेम प्रदान करोगी ही।

जन्म सिद्ध अधिकार प्रेम निष्कामा।
मैं तो तेरा अंश सनातन श्यामा॥ १४१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! आपके निष्काम प्रेम के ऊपर मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि मैं आपका सनातन अंश हूँ। जीव भगवान् का पुत्र है। इस नाते से भगवान् के ज्ञान, आनन्द आदि पर जीव का सहज अधिकार है।

गोपी गोप पियें सदा ब्रजरस धामा।
हमसे पतित को पिलाओ क्यों न श्यामा॥ १४२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! ब्रज गोप एवं गोपियाँ सदैव ही ब्रज-रस का पान करती हैं। मेरे जैसे पतित को भी अपने ब्रज-रस का पान कराओ।

बार बार माँगूँगा प्रेम निष्कामा।
दे दे तो कृपा ना दे तेरी इच्छा श्यामा॥ १४३॥

भावार्थ—हे श्री राधे! मैं तो बार-२ तुमसे निष्काम प्रेम माँगूंगा ही। यदि तुम मुझे अपना निष्काम प्रेम प्रदान कर देती हो तो तुम्हारी बड़ी कृपा होगी। यदि न देना चाहो तो भी जैसी तुम्हारी इच्छा।

प्रेम भी न माँगूँगा कभू तोहिं श्यामा।
इच्छा में इच्छा रखूँगा आठु यामा॥ १४४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं तुमसे कभी प्रेम की याचना भी नहीं करूँगा, मैं तो निरन्तर तुम्हारी इच्छा में ही इच्छा रखूंगा।

मेरे पाप लिख लिख थकी नाहिं श्यामा।
मैं भी पाप करि थका नाहिं आठु यामा॥ १४५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम मेरे पापों को लिखते-लिखते नहीं थकीं, मैं पाप करते करते नहीं थका।

मेरे पाप लिख बहीखाता धरो श्यामा।
तेरा बहीखाता जला देगा तेरा नामा॥ १४६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम भले ही मेरे पापों को अपने बहीखाते में लिखती रहो। मेरे द्वारा लिया हुआ तुम्हारा नाम तुम्हारे बहीखाते को जला देगा।

एक बार कृपा दृष्टि हो जाय श्यामा।
माया नौ दो ग्यारह होय तजि उर धामा॥ १४७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! यदि एक बार तुम्हारी कृपा हो जाय तो मेरे हृदय-भवन से तुम्हारी माया सदा के लिये भाग जायेगी।

एक बार 'तू मोरा' कह भी दो श्यामा।
कहा घटि जाय तोरा मोरा बने कामा॥ १४८॥

भावार्थ—हे श्री राधे! एक बार मुझसे इतना कह दो न कि 'तू मेरा है'। ऐसा कहने में क्या घट जायेगा? (अर्थात् कुछ नहीं घटेगा) और मेरा काम बन जायेगा।

मन नाहिं माने मनमानी करे श्यामा।
विषयों के हाथ बिका मन आठु यामा॥ १४९॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मन मेरा कहना नहीं मानता। यह अपनी इच्छानुसार ही चलता है। मेरा मन निरन्तर सांसारिक विषय भोगों में ही फँसा रहता है।

मन कह झलक दिखा दे टुक श्यामा।
फिर नाहिं तोरा पाछा छोड़ूँ आठु यामा॥ १५०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मेरा मन आपकी रूप माधुरी का दर्शन करना चाहता है। यदि एक बार इसे थोड़ी सी झलक दिखा दो तो फिर यह निरन्तर आपके रूप-रस में डूबा रहेगा। फिर मैं कभी आपका पीछा नहीं छोड़ूँगा।

तेरा बने बिनु जीना जीना नाहिं श्यामा।
यूँ तो पेट भर लेते शूकर ग्रामा॥ १५१॥

भावार्थ—तुम्हारा बने बिना जीना निरर्थक है। पेट तो शूकर भी भर लेते हैं। क्या केवल पेट भर लेना ही जीवन का उद्देश्य है?

तेरे मिले बिनु युग युग जिया श्यामा।
अब या तो आजा या बुला ले निज धामा॥ १५२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुमसे मिले बिना अनन्त युग व्यतीत हो गये। अब या तो तुम मेरे पास आ जाओ अथवा मुझे अपने लोक में बुला लो।

माया के जूते लात खाया आठु यामा।
अब तो बचा ले मोहिं बेर भइ श्यामा॥ १५३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! अनादि काल से मैं निरन्तर माया के आघात सहन कर रहा हूँ। अब तो बहुत समय व्यतीत हो चुका। अब आकर मेरी रक्षा करो।

माना मैं पतित सुत हूँ तो तव श्यामा।
मल सने शिशु को उठा ले मातु धामा॥ १५४॥

भावार्थ—श्रीराधे! मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं तुम्हारा अत्यन्त पापी पुत्र हूँ, किंतु माँ तो इतनी ममतामयी होती है कि मल-मूत्र से सने हुए अपने बालक को भी उठाकर स्वच्छ कर गोद में बिठा लेती है।

तेरे जैसी करुणामयी ना कोइ श्यामा।
याही ते बार बार आया तेरे धामा॥ १५५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैंने सुना है कि तुम्हारे जैसी करुणामयी कोई अन्य नहीं, इसीलिये बार-बार तुम्हारे धाम में आता हूँ।

आया करूँगा बार बार तेरे धामा।
कबहूँ मिला देगा धाम धामी श्यामा॥ १५६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं तो बार-बार तुम्हारे धाम में आया ही करूँगा। कभी तुम्हारा धाम मुझे निज धाम की स्वामिनी

अर्थात् तुमसे मिला ही देगा।

लख चौरासी द्वार माँगा भीख श्यामा।
वे भी थे भिखारी याते आया तेरे धामा॥ १५७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैंने चौरासी लाख द्वारों पर भीख माँगी परन्तु मेरी ही भाँति वे भी भिखारी ही थे। अतः अब मैं तुम्हारे द्वार पर प्रेम की भिक्षा माँगने आया हूँ।

तू तो मेरे उर में ही रहे आठु यामा।
पापों ते रोके टोके नाहिं काहे श्यामा॥ १५८॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारा निवास मेरे हृदय में ही है फिर जब मैं पाप कर्म में प्रवृत्त होता हूँ तो तुम मुझे रोकती क्यों नहीं हो?

तोहिं भूला याते माया मारे आठु यामा।
किन्तु मैं पूछूँ तोहिं भूला क्यों श्यामा॥ १५९॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं तुम्हें भूल गया हूँ इसलिये माया निरन्तर मुझे कष्ट दे रही है। किंतु मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि आखिर मैं तुम्हें भूल ही क्यों गया?

तुम तो प्रकाश, माया तम कह बामा।
दोनों कैसे उर एक साथ रहें श्यामा॥ १६०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम तो अत्यन्त ज्योतिर्मयी प्रकाश स्वरूपा हो और माया अन्धकार स्वरूप है। मेरे हृदय में तुम

भी निवास करती हो और माया ने भी अपना अधिकार जमा रखा है। महान् आश्चर्य है कि प्रकाश और अंधकार दोनों एक साथ कैसे रहते हैं?

हम, तुम, माया तीनों रहें उर धामा।
माया मोहिं लगे तोहिं नाहिं लगे श्यामा॥ १६१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! जीवात्मा 'मैं', 'तुम' एवं 'माया' तीनों एक साथ हृदय में रहते हैं। माया का प्रभाव मेरे ऊपर पड़ता है, तुम्हारे ऊपर नहीं, ऐसा क्यों होता है?

बिगरी बनाने वारी एक तुम श्यामा।
बने बने के हैं साथी त्रिभुवन धामा॥ १६२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! जीव की बिगड़ी बनाने वाली एकमात्र तुम्हीं हो। त्रैलोक्य में सब बने बने के साथी हैं, बिगड़ी को बनाने वाला कोई नहीं है।

अगनित पतितन भेजा निज धामा।
मेरी बारी आई तो कृपण भई श्यामा॥ १६३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुमने असंख्य पतितों को अपने दिव्य गोलोक धाम में भेजा है। जब मेरी बारी आई तो कंजूसी क्यों कर रही हो?

हम तो पुकारे जायेंगे आठु यामा।
एक दिन सुनना पड़ेगा तोहिं श्यामा॥ १६४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! हम तो निरन्तर तुम्हारा नाम पुकारते ही रहेंगे। एक दिन तुम्हें सुनना ही पड़ेगा।

तेरे नाम का अवलम्ब लै के श्यामा।
अगनित पतित गये तेरे धामा॥ १६५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारे नाम का आश्रय लेकर असंख्य पतितों ने तुम्हारे लोक को प्राप्त किया है।

एक बार हमरिहुँ ओर लखु श्यामा।
अग जग भटकत थकि गये पामा॥ १६६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! एक बार मेरी ओर भी कृपा-दृष्टि करो। मैं संसार में भटकते भटकते थक गया।

कहाँ जाउँ कासों कहुँ कौन सुने श्यामा।
पतितन को नाहीं और कहुँ ठामा॥ १६७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं कहाँ जाऊँ? किससे कहूँ? कौन मेरी सुनेगा? हे श्यामा! पतितों के लिये तुम्हें छोड़कर और कहीं स्थान नहीं है।

मोहिं जनि लखु मैं तो पातकधामा।
अपनो कृपालु स्वभाव लखु श्यामा॥ १६८॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मेरी ओर मत देखो। मैं तो पापों का घर हूँ। तुम तो अपने अकारण करुण स्वभाव की ओर देख कर ही मुझे अपना लो।

तोहिं लखि पतितपावनी श्यामा।
मनमानी पाप किया मैंने आठु यामा॥ १६९॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैंने यह जानकर कि तुम तो पतितों को पवित्र करने वाली हो ही, निरन्तर मनमाने ढंग से पाप किये।

जग जाने मैं तो तेरा ही हूँ श्यामा।
तू जाने विषयन दास आठु यामा॥ १७०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! संसार तो जानता है कि मैं तुम्हारा ही हूँ। किन्तु तुम तो जानती ही हो कि मैं निरन्तर विषयों का गुलाम बना हुआ हूँ।

कभू तो करेंगी कृपा कृपामयी श्यामा।
यही आस लै के गाऊँ नाम गुण धामा॥ १७१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मुझे यह विश्वास है कि तुम कृपामयी हो, अतः कभी न कभी तो कृपा करोगी ही। इसी आशा से तुम्हारे नाम, गुण, धामादि का आश्रय लेकर रसना से तुम्हें पुकारता रहता हूँ।

तेरे तो हैं अगनित जन गुनधामा।
एक निगुनी भी अपनी कर ले श्यामा॥ १७२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारे असंख्य गुणवान भक्त हैं। एक मुझ गुणरहित को भी अपना बना लो।

तू तो अनन्य प्रेम चाहती है श्यामा।
मन चाहे जग प्रेम भी आठु यामा॥ १७३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम जीव से आशा करती हो कि वह तुम्हारे प्रति अनन्य भाव रखे। मेरा मन तो निरंतर सांसारिक प्राणि-पदार्थों से भी प्रेम करता है। मैं तुम्हारी कृपा का पात्र कैसे बनूंगा?

माया तो मन जग जननी है बामा।
याते मन जग का विषय चाहे श्यामा॥ १७४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! माया मन एवं जगत् की जननी है इसीलिये मन सदा संसार के विषयों में ही सुख का अनुभव करता है।

बार बार भोग ते भी मिटे नाहिं कामा।
जानता हूँ फिर भी नहिं मन माने श्यामा॥ १७५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं भली प्रकार जानता हूँ कि विषयों के भोग से कामनाएँ बढ़ती ही हैं किंतु फिर भी मेरा मन नहीं मानता। यह पुनः पुनः सांसारिक विषय भोगों को ही भोगना चाहता है।

माना मैंने माना नहिं तेरा कहा श्यामा।
जग का ही दास बना रहा आठु यामा॥ १७६॥

भावार्थ—श्रीराधे! मैं स्वीकार करता हूँ–मैंने कभी तुम्हारी आज्ञा का पालन नहीं किया। मैं निरन्तर संसार की ही दासता करता रहा हूँ।

तू तो है समर्थ सर्वशक्तिमती श्यामा।
मन में समा जा आजा मेरे उर धामा॥ १७७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम तो सर्वसमर्था सर्वशक्तिमती हो अतएव तुम मेरे मन में, मेरे हृदय में आकर समा जाओ।

मेरी बन जाओ जो स्वामिनि श्यामा।
माया मेरा पिण्ड छोड़ जाये और ठामा॥ १७८॥

भावार्थ—हे स्वामिनी राधे! यदि तुम किसी प्रकार से मेरी बन जाओ तो मेरे हृदय से माया किसी अन्य स्थान पर निश्चित ही चली जायगी।

तेरा सुत तेरी गोद बैठा उर धामा।
सुत को दुःखी कैसे देखे माँ श्यामा॥ १७९॥

भावार्थ—माँ राधे! हृदय रूपी भवन में तुम्हारे अंक में ही मैं जीवात्मा–तुम्हारा पुत्र बैठा हूँ, फिर भी मैं दुःख पा रहा हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि माँ से पुत्र की दुर्दशा कैसे देखी जाती है।

दैहिक माँ भी सुत न भूले एक यामा।
तू अनादि काल ते भूली क्यों श्यामा॥ १८०॥

भावार्थ—राधे! शरीर की माँ भी अपने पुत्र को अधिक समय तक नहीं भुला पाती। तुम तो मेरी आत्मा की माँ हो, मुझे अनादि-काल से क्यों भूली हो?

मैं ही भागा भागा फिरा दूर आठु यामा।
तू तो निज बाँह पसारे खड़ी श्यामा॥ १८१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं ही तुमसे दूर भागता रहा। तुम तो अपनी भुजाओं को फैलाये हुए मेरी प्रतीक्षा में खड़ी रहीं।

मैंने तो भुलाया तोहिं सदा सदा श्यामा।
फिर भी तू सदा रही साथ उरधामा॥ १८२॥

भावार्थ—हे श्यामा! मैं अनादिकाल से निरन्तर तुम्हें भूला रहा किन्तु फिर भी तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा। सदा मेरे हृदय में मेरे साथ ही निवास करती रहीं।

बार बार अवतार लिया तूने श्यामा।
किया उपकार छोड़ा नाम रूप धामा॥ १८३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुमने अकारण करुणावश बार बार अवतार लेकर संसार का उपकार किया। क्योंकि तुम्हारे अपने धाम चले जाने पर तुम्हारे द्वारा छोड़े गये तुम्हारे नाम, रूप, एवं धाम आदि जगत् के जीवों का अवलम्ब बन जाते हैं। नाम, रूप एवं धाम आदि का चिंतन कर जीव सदा के लिये तुम्हें प्राप्त कर लेता है।

तूने दिया नाम रूप गुण लीला धामा।
तेरा तो ऋणी है सारा मर्त्यलोक श्यामा॥ १८४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुमने अवतार लेकर अपने नाम, रूप, लीला, गुण, धाम संसार को प्रदान किये। सारा मृत्युलोक तुम्हारा ऋणी ही रहेगा।

सुर नर मुनि की कौन कहे श्यामा।
विधि हरि हर भी पखारे तव पामा॥ १८५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! देवता, ऋषि-मुनि एवं मनुष्यों की कौन कहे, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भी तुम्हारे चरण धोते हैं।

सबसे बड़े हैं ब्रह्म श्याम पूर्णकामा।
वे भी बुहारी देने आवें तव धामा॥ १८६॥

भावार्थ—ब्रह्म श्रीकृष्ण सर्वोपरि हैं। पूर्णकाम भी हैं, किंतु

वे भी अत्यन्त दीन बनकर तुम्हारे महल की बुहारी देते हैं।

'तू भी मेरी' ऐसी भक्ति किया आठु यामा।
'तू ही मेरी' ऐसी भक्ति नाहिं किया श्यामा॥ १८७॥

भावार्थ—मैंने कभी तुम्हारा अनन्य आश्रय ग्रहण नहीं किया। 'तुम ही मेरी हो' ऐसा न मानकर 'तुम भी मेरी हो' इस प्रकार की भक्ति ही मैंने की।

तू ही एक मेरी बुधि माने आठु यामा।
मन नहिं माने मनमानी करे श्यामा॥ १८८॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! बुद्धि तो यह स्वीकार करती है कि एकमात्र तुम ही मेरी हो किंतु मन अपनी मनमानी करना नहीं छोड़ता।

जगत की आसक्ति है अनादि श्यामा।
वर्तमान में भी यह बढ़े आठु यामा॥ १८९॥

भावार्थ—हे करुणामयी राधे! मेरी सांसारिक आसक्ति अनादि काल से है, वर्तमान काल में भी यह निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

तेरा जब रूपध्यान करूँ उर धामा।
माता, पिता, सुता आ जायें बीच श्यामा॥ १९०॥

भावार्थ—राधे! जब हृदय में तुम्हारी छवि का ध्यान करने

बैठता हूँ, तो सांसारिक माता, पिता, पुत्री आदि बीच में ही मेरे ध्यान को भंग कर अपना स्थान जमा लेते हैं।

दीन भाव ते तो तू प्रसन्न होवे श्यामा।
अहंकार पाछा नाहिं छोड़े आठु यामा॥ १९१॥

भावार्थ—श्रीराधे! तुम्हें दीनता प्रिय है। मैं निरन्तर अहंकार से ग्रस्त रहता हूँ। मैं तुम्हें किस प्रकार प्रसन्न कर सकूंगा।

अभिमान तो इतना बढ़ गया श्यामा।
आँसू नाहिं आवें गाऊँ नाम गुण धामा॥ १९२॥

भावार्थ—राधे! मैं इतना अधिक अभिमानी हो गया हूँ कि तुम्हारे नाम गुणादि को गाते हुए भी मेरे अश्रुपात नहीं होता।

शास्त्र वेद पढ़ा सुना गुना नाहिं श्यामा।
जानि जानि अपराध करूँ आठु यामा॥ १९३॥

भावार्थ—हे लाड़िली किशोरी! मैंने नाना प्रकार के शास्त्र-वेदों को पढ़ा सुना है परन्तु उनके सिद्धान्तों को जीवन में चरितार्थ नहीं किया। जान बूझकर निरन्तर अपराध करता रहता हूँ।

जानि जानि नाम अपराध करुँ श्यामा।
यम भी न देगा मोहिं नरकहुँ ठामा॥ १९४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं जान बूझकर नामापराध करता हूँ, मुझे यमराज नरक में भी स्थान प्रदान नहीं करेंगे।

जगत का गुरु मोहिं जाने सब धामा।
जगत है गुरु मेरा तू जाने श्यामा॥ १९५॥

भावार्थ—राधे! मैं संसार में जगद्गुरु के रूप में विख्यात हूँ परन्तु वस्तुतः मैं संसार का गुरु नहीं संसार मेरा गुरु है। इस रहस्य को तुम भली प्रकार जानती हो।

मेरा तो प्राकृत सब इन्द्रिय ग्रामा।
तेरा दिव्य रूप ध्यान कैसे करूँ श्यामा॥ १९६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदि सब प्रकृति से ही निर्मित होने के कारण तुम्हारे दिव्य स्वरूप तक कैसे पहुँच सकती हैं? तुम तो चिदानन्दमयी हो। तुम्हारे चिन्मय स्वरूप का ध्यान मायिक मन द्वारा कैसे करूँ?

तोको नाहिं जानि सकीं, उमा, रमा, श्यामा।
जाने सोइ जाको जनावें ब्रज बामा॥ १९७॥

भावार्थ—हे वृषभानुनन्दिनी राधे! सर्वशक्तिमती पार्वती एवं महालक्ष्मी भी तुम्हें अपने प्रयत्न से नहीं जान सकीं। तुम्हारी अनुगता ब्रजगोपियाँ जिस पर कृपा करके तुम्हारा ज्ञान करा दें, बस वही तुम्हें जान सकता है।

तव दर्शन प्यास बढ़े नाहिं श्यामा।
यदपि बार बार गाऊँ नाम गुण धामा॥ १९८॥

भावार्थ—हे अनन्त गुणगणमयी स्वामिनी राधे! यद्यपि तुम्हारे दिव्य नाम, रूप, गुण, धामादि का रसना द्वारा बार बार गायन करता हूँ परन्तु अभी तक मेरे हृदय में तुम्हारे दिव्य दर्शन की पिपासा जाग्रत नहीं हुई।

तेरे मन्दिर में करूँ दण्डवत् प्रणामा।
किन्तु तन झुके मन झुके नाहिं श्यामा॥ १९९॥

भावार्थ—श्रीराधे! यद्यपि मैं तुम्हारे प्रतीक स्वरूप श्रीविग्रह-स्थानों पर जाकर मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ किंतु मेरा यह झुकना केवल शरीर मात्र का बाहरी दैन्य-प्रकाशन है। तुम्हारी प्रसन्नता का आधार दैन्य भाव कभी मेरे मन में नहीं आया।

भोर ते गाता तो हूँ नाम गुन धामा।
विश्वास होता नहिं नाम में हैं श्यामा॥ २००॥

भावार्थ—यद्यपि प्रातः काल से ही मैं तुम्हारे पवित्र नाम गुणादि का उच्च स्वर से गायन तो करता हूँ किंतु हृदय में यह विश्वास दृढ़ नहीं होता कि इस नाम में श्रीराधा अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित प्रतिष्ठित हैं।

तेरा नाम गाया आया बार बार धामा।
फिर भी न पाया प्रेम कृपा करो श्यामा॥ २०१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारे धाम में बार-बार आकर तुम्हारे नाम का मैंने गायन किया परन्तु अभी तक मैं तुम्हारे प्रेम को प्राप्त नहीं कर सका। मेरे ऊपर कृपा करो।

वेद कहे सत्यसंकल्प तुम श्यामा।
संकल्प कर दे दो प्रेम निष्कामा॥ २०२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! वेद तुम्हें सत्य संकल्प कहता है। मुझे भी एक बार संकल्प कर अपना प्रेम प्रदान कर दो।

ब्रजरस का चस्का लगा दे उर धामा।
आठु याम तेरा ही स्मरण करूँ श्यामा॥ २०३॥

भावार्थ—राधे! अपने ब्रजरस की ऐसी रुचि पैदा कर दो कि उसमें डूबकर रात-दिन तुम्हारा ही स्मरण करूँ।

तेरा कछु घटेगा न बढ़ेगा ही श्यामा।
प्रेमदान करवा दे कहि ब्रज बामा॥ २०४॥

भावार्थ—हे राधिके! तुम अपनी किसी अनुचरी द्वारा मुझे प्रेम-दान दिला दो। तुम्हारा प्रेमभंडार रिक्त नहीं होगा। दान देने से वृद्धि ही होती है। अतः यदि मुझे प्रेम प्राप्त होता है तो तुम्हारे दिव्य प्रेम-सिंधु में प्रेम की वृद्धि ही होगी।

अबकी जो आना ब्रजधाम श्याम श्यामा।
हमको बनाना काऊ ब्रज गोप बामा॥ २०५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! अब जब तुम अवतार लेकर ब्रजधाम

में आओ तो मुझे भी किसी ब्रज के गोप-गृह में जन्म प्रदान करना जिससे तुम्हारी सेवा का अवसर प्राप्त हो।

गोप बामा भी ना बनाना यदि श्यामा।
अष्ट सखी दासी बनाना ब्रजधामा॥ २०६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! यदि तुम मुझे ब्रज गोपी न बनाना चाहो तो ब्रज में अष्ट-सखियों में से किसी की दासी बना देना।

दास्य धर्म मेरा है अधिकार श्यामा।
याते बना देहु मोहुँ दासी ब्रज बामा॥ २०७॥

भावार्थ—श्रीराधे! आपके नित्य दासत्व को प्राप्त करना मेरा अधिकार है। अतएव अपनी अनुगता किसी ब्रजांगना की मुझे दासी बना दीजिये।

वेद की ऋचायें हैं दासी ब्रज बामा।
उनकी ही दासी बना दे मोहिं श्यामा॥ २०८॥

भावार्थ—श्रीराधे! जिन ब्रज गोपियों की सेवा वेद की ऋचायें साकार रूप धारण करके करती हैं, अपनी उन सहचरियों का ही दास्य मुझे प्रदान कर दो।

कृपा का भण्डार खोलो कृपामयी श्यामा।
मो पै करो कृपा सेवा दे दो निज धामा॥ २०९॥

भावार्थ—हे कृपा की साकार मूर्ति श्रीराधे! अब अपनी

अकारण करुणा का भंडार खोल दो। मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि तुम मुझे अपने निज धाम में रखकर सदा के लिये अपनी सेवा प्रदान करो।

कृपा करो कृपा करो कृपा करो श्यामा।
बनूँ दासी दासी दासी दासी दासी बामा॥ २१०॥

भावार्थ—हे स्वामिनी राधे! ऐसी कृपा करो जिससे कि मैं तुम्हारी दासी की दासी की दासी की दासी की दासी बन सकूँ।

मेरे तो उर को बना लो ब्रजधामा।
श्याम संग नित्य ही बिहार करो श्यामा॥ २११॥

भावार्थ—हे कुंज विहारिणी नित्य किशोरी! मेरे हृदय को ही ब्रजधाम बनाकर अपने नित्य किशोर प्रियतम के साथ उसमें नित्य विहार करो।

कृपा का स्वभाव लखि कृपा माँगुं श्यामा।
छोड़ दे स्वभाव तो मैं जाउँ और ठामा॥ २१२॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम्हारा कृपा करने का स्वभाव है इसलिये मैं तुमसे कृपा की याचना करता हूँ। यदि तुम अपने कृपा के स्वभाव का त्याग कर दो तो मैं अन्यत्र चला जाऊँगा।

कृपा करना ही तेरा काम रहा श्यामा।
कब ते कृपा का काम छोड़ दिया धामा॥ २१३॥

भावार्थ—हे श्यामा ! तुम्हारा सदा से कृपा करने का ही कार्य था। तुमने अपने इस कृपा के कार्य को कब से समाप्त कर दिया है ?

मो पै यदि कृपा नहिं करो तुम श्यामा।
लोग नहिं मानेंगे कृपालु तोहिं धामा॥ २१४॥

भावार्थ—हे श्रीराधे ! यदि तुमने मेरे ऊपर कृपा नहीं की तो तुमको कृपामयी कौन स्वीकार करेगा ?

जानना न चाहूँ वेद शास्त्र ज्ञान श्यामा।
तू ही मेरी यह ज्ञान रहे आठु यामा॥ २१५॥

भावार्थ—हे श्रीराधे ! मैं वेदशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करके क्या करूँगा ? मैं तो सदा सर्वत्र तुमको ही अपना मानूँ, ऐसी कृपा कर दो।

सब साधन वृक्ष फल प्रेम निष्कामा।
फल बिना वृक्ष व्यर्थ कहें ब्रजबामा॥ २१६॥

भावार्थ—सब साधनों रूपी वृक्ष का एकमात्र फल निष्काम प्रेम ही है। फल के बिना वृक्ष व्यर्थ ही है।

विरला ही पावे कोउ प्रेम निष्कामा।
वाको खारा लगे सुख वैकुण्ठ धामा॥ २१७॥

भावार्थ—कोई बिरला ही निष्काम प्रेम को प्राप्त करता है जिसे प्राप्त कर वैकुण्ठ के सुख भी उसे फीके जान पड़ते हैं।

जग ते भी प्रेम हो हो प्रेम श्याम श्यामा।
ऐसा भोला प्रेमी प्रेमी नाहिं कह बामा॥ २१८॥

भावार्थ—जिसका संसार से भी प्रेम है और श्यामा-श्याम से भी प्रेम है, वह प्रेमी नहीं कहा जा सकता। प्रेमी तो अनन्य भाव से एकमात्र श्यामा श्याम से ही प्रेम करता है।

जगत का प्रेम निष्काम या सकामा।
अति निन्दनीय विष तुल्य कह बामा॥ २१९॥

भावार्थ—संसार का प्रेम चाहे सकाम हो या निष्काम, वह विष के समान है। अत्यन्त निंदनीय है।

जगत के प्रेम को आसक्ति कहें बामा।
सच्चा प्रेम कहलाये प्रेम श्याम श्यामा॥ २२०॥

भावार्थ—जगत का प्रेम आसक्ति है। सच्चा प्रेम श्यामा-श्याम का प्रेम है।

जगत के प्रेम का बन्धन परिणामा।
नित्य सेवा परिणामा प्रेम श्याम श्यामा॥ २२१॥

भावार्थ—जगत के प्रेम का परिणाम बंधन है। श्यामा-श्याम के प्रेम का परिणाम उनकी नित्य-सेवा-प्राप्ति है।

देना देना प्रेम अरु लेना लेना कामा।
लेना देना दोनों तो है व्यापार नामा॥ २२२॥

भावार्थ—प्रेम में देना ही देना है। काम में लेना ही लेना है। लेना देना दोनों हों तो उसे व्यापार कहते हैं।

श्याम हैं प्रकाश सम अन्धकार कामा।
दोउ एक संग नहिं रह एक ठामा॥ २२३॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण दिव्य प्रकाश पुंज हैं, काम अंधकार स्वरूप है। दोनों एक साथ एक स्थान पर नहीं रह सकते।

कारण रहित हो जो प्रेम कह बामा।
कारण सहित हो जो वाको नाम कामा॥ २२४॥

भावार्थ—जो बिना किसी कारण (कामना) के किया जाय, वही प्रेम है। जिसमें कोई कारण छिपा हो, वह तो काम है।

कारण रहित प्रेम बाढ़ै आठु यामा।
कारण सहित प्रेम घटे मिटे बामा॥ २२५॥

भावार्थ—कारण-रहित प्रेम निरन्तर बढ़ता ही जाता है। कारण सहित प्रेम निरन्तर घटते हुए एक दिन समाप्त हो जाता है।

चन्द्रकला जिमि बाढ़ै प्रेम आठु यामा।
किन्तु यामें पूर्णिमा न कहें ब्रज बामा॥ २२६॥

भावार्थ—चन्द्रमा की कलाओं के समान वास्तविक प्रेम भी निरन्तर बढ़ता ही जाता है। किंतु अंतर यह है कि चन्द्रमा की कलायें पूर्णिमा होने पर घटने लगती हैं जबकि प्रेम में कभी पूर्णिमा नहीं होती, अत: यह कभी नहीं घटता, अनंतकाल तक बढ़ता ही जाता है।

प्रेम के हैं रोगी तीनों श्यामा श्याम बामा।
औषधि किये ते बाढ़ै रोग आठु यामा॥ २२७॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम एवं ब्रजगोपियाँ तीनों ही प्रेम के रोगी हैं। यह प्रेम-रोग औषधि किये जाने पर भी निरन्तर बढ़ता ही रहता है।

प्रेम ते ना हुआ कोई कभी पूर्ण कामा।
बढ़ती ही जाये नित प्यास आठु यामा॥ २२८॥

भावार्थ—प्रेम में कभी तृप्ति नहीं होती। प्रेम की प्यास

तो निरन्तर बढ़ती ही रहती है।

छिन छिन बाढ़ै सोई प्रेम निष्कामा।
छिन छिन घटे जोई सोइ नाम कामा॥ २२९॥

भावार्थ—निष्काम प्रेम की यही परिभाषा है कि वह निरन्तर बढ़ता ही रहता है। जो क्षण-क्षण घटता है, वह काम है।

कितना ही दुःख देवें तोहिं श्याम श्यामा।
छिन छिन बाढ़ै सोई प्रेम निष्कामा॥ २३०॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम तुझे कितना भी दुःख क्यों न प्रदान करें फिर भी उनके प्रति तुम्हारा प्रेम निरन्तर बढ़ता ही जाये उसी को निष्काम प्रेम कहते हैं।

कुलिश कठोर पिय कहें ब्रजबामा।
किन्तु पिय परखत प्रेम निष्कामा॥ २३१॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें प्रियतम श्रीकृष्ण को वज्र से भी अधिक कठोर कहती हैं परन्तु श्रीकृष्ण निष्काम प्रेम की आतुरता पूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। अतएव प्रेम की वृद्धि के लिये कठोरता का व्यवहार करते हैं।

श्याम को कठोर जनि कहो कोउ बामा।
कुबरिहुँ प्रेम किए मधुपुरि धामा॥ २३२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर को कोई कठोर मत कहो जिन्होंने

दुष्ट कंस की दासी कुब्जा को भी परम सुन्दरी बनाकर मथुरा में अपनी प्रेयसी बनाया, वह श्रीकृष्ण कठोर कैसे हो सकते हैं।

श्यामा श्याम सुख चाहे प्रेम निष्कामा।
निज सुख चाहे सो तो प्रेम सकामा॥ २३३॥

भावार्थ—निष्काम प्रेमी श्यामा-श्याम के सुख से ही सुखी रहता है। जो अपने सुख की इच्छा रखता है वह तो सकाम प्रेमी है।

प्रेम के अधीन रहें श्याम अरु श्यामा।
वेद कहें परम स्वतन्त्र पूर्णकामा॥ २३४॥

भावार्थ—वेद तो श्यामा-श्याम को परम स्वतंत्र पूर्णकाम कहता है किंतु वे ही श्यामा श्याम सर्वथा प्रेम के आधीन हैं।

प्रेम सोइ बाढ़ै जोई नित आठु यामा।
गुण दोष देखें नहिं ऐसी ब्रज भामा॥ २३५॥

भावार्थ—प्रेम तो वही है जो प्रेमास्पद के गुण-दोषों को न देखकर निरन्तर बढ़ता ही रहे। ऐसा प्रेम ब्रजगोपियों का है। नारद जी ने कहा है-१. प्रतिक्षण वर्धमानम् २. यथा ब्रजगोपिका नाम्।

प्रेम देखना जो चाहो चलो ब्रजधामा।
श्याम सुख मानें निज सुख ब्रज भामा॥ २३६॥

भावार्थ—यदि प्रेम का प्रत्यक्ष दर्शन करना है तो ब्रजधाम में जाकर प्रेम की साकार प्रतिमा ब्रजगोपियों का दर्शन करो। ये ब्रज-गोपियाँ श्यामसुन्दर के सुख को ही अपना सुख मानती हैं।

श्यामा श्याम पूछें कहा चाहो ब्रज बामा।
दोउ मुसकाते रहो चाहूँ आठु यामा॥ २३७॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम ब्रजगोपियों से उनकी अभिलाषा पूछते हैं, वे उत्तर देती हैं-तुम दोनों सदा मुस्कराते रहो, हमारी यही कामना है।

श्यामा श्याम सुख चाहें नित ब्रज बामा।
ब्रज बामा सुख चाहें नित श्याम श्यामा॥ २३८॥

भावार्थ—युगल-सरकार श्रीश्यामा-श्याम एवं उनका सखी-परिकर परस्पर 'तत्सुखसुखित्वम्' की भावना से परिपूर्ण है। अर्थात् श्यामा-श्याम तो ब्रज बनिताओं के सुख-विस्तार हेतु नित नव लीला-विधान रचते हैं एवं सखी-समुदाय निरन्तर अपने तन, मन, प्राण से अपने सेव्य श्री राधा कृष्ण को सुख पहुँचाने की चेष्टा में लगा रहता है।

ब्रज बामा महिमा जानें श्याम श्यामा।
ऋणी मानें श्याम जाको धन्य ब्रज बामा॥ २३९॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियों की महिमा को श्यामा-श्याम ही

जानते हैं, जिन ब्रज-गोपियों की महिमा का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण ने स्वयं को इनका ऋणी स्वीकार किया, वे त्रिभुवन में धन्य हैं।

ब्रज में न आतीं यदि वे ब्रज बामा।
ब्रज रस नहिं पाते हरि धामा॥ २४०॥

भावार्थ—यदि ये ब्रजांगनायें ब्रज में अवतरित न हुई होतीं तो श्रीकृष्ण ने ब्रज में जिस ब्रज रस का पान किया, वह न कर पाते। (गोपियों के बिना कोई लीला ही न हो पाती)।

श्यामा श्याम नाहिं भजे भजे ब्रजबामा।
आपु कहँ ऋणी मानें श्याम अरु श्यामा॥ २४१॥

भावार्थ—श्यामा श्याम गोपियों को इतना महत्व देते हैं कि यदि कोई व्यक्ति राधाकृष्ण की उपासना न कर किसी ब्रज-गोपी की ही शरण ग्रहण कर ले तो युगल-सरकार स्वयं को उस शरणागत जीव का ऋणी स्वीकार करते हैं।

ब्रह्म था अतनु वाय तनु दियो श्यामा।
ब्रजरस पायो जब आईं ब्रज बामा॥ २४२॥

भावार्थ—ब्रह्म निराकार ही था। उसे शरीर प्रदान तो श्रीराधा ने ही किया। वह निराकार ब्रह्म श्रीराधा-कृपा से कृष्ण रूप में प्रकट होकर गोपियों की कृपा से ब्रज रस प्राप्त करने का अधिकारी बना।

लीला नाहिं होवे कोई बिनु ब्रज बामा।
सिर हाथ धरि बैठे रहें श्याम श्यामा॥ २४३॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों के बिना राधा कृष्ण की लीलायें सम्पन्न नहीं हो सकतीं। ब्रजगोपियाँ न हों तो श्यामा श्याम सिर पर हाथ धरे असहाय होकर बैठे रहें।

श्यामा श्याम माधुर्य अरु प्रेम बामा।
होड़ करि बाढ़ैं दोऊ नित आठु यामा॥ २४४॥

भावार्थ—युगल-सरकार का माधुर्य एवं ब्रज-गोपियों का प्रेम परस्पर स्पर्धा रखते हुए निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहता है।

श्यामा श्याम रूप सुधा प्यासी ब्रज बामा।
ज्यों ज्यों पियें प्यास बढ़े चिदानन्द धामा॥ २४५॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम चिदानंदमय हैं अतः ब्रजांगनायें ज्यों ज्यों उनकी रूप-सुधा का पान करती हैं त्यों-त्यों रूप-पान करने की प्यास बढ़ती ही जाती है। संसार में ऐसा नहीं होता। सांसारिक सौन्दर्य जैसे जैसे देखा जाता है वैसे वैसे देखने की इच्छा घटती जाती है।

मंजु कुञ्ज पुञ्ज बिच बैठे श्याम श्यामा।
बाढ़ै प्यास लखि संतोष नाहिं बामा॥ २४६॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम सुन्दर कुंजों के समूह मध्य आसीन हैं। युगल-सरकार का निरन्तर दर्शन करते हुए भी सखियों की दर्शन-पिपासा प्रति पल वृद्धि को प्राप्त हो रही है। नेत्रों को यत्किंचित् भी तुष्टि नहीं हो रही है।

ब्रज बामा जब सेवा करें श्याम श्यामा।
सात्विक भाव दुरावें ब्रज बामा॥ २४७॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ जब युगल-सरकार की सेवा करती हैं, तो प्रेम के सात्विक भाव प्रकट होने लगते हैं। सेवा में व्यवधान समझकर प्रेम स्वरूपा ब्रजांगनायें शीघ्रता से अपने रोमांच, अश्रु आदि सात्विक भावों का गोपन कर लेती हैं।

माधुर्य भाव ही था ब्रज ब्रज बामा।
माधुर्य में भी रहा भाव निष्कामा॥ २४८॥

भावार्थ—ब्रजांगनाओं का माधुर्य-भाव ही था। किन्तु माधुर्य भाव में भी अत्यन्त निष्काम भाव ब्रज-गोपियों का था।

श्याम गये मथुरा ना गई ब्रज बामा।
श्याम रुचि महँ रुचि राखें आठु यामा॥ २४९॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ब्रजवासियों को छोड़कर मथुरा गये परन्तु गोपियाँ किंचित् दूर होने पर भी कभी प्रियतम का दर्शन करने मथुरा नहीं गईं। ब्रजगोपियों ने कृष्ण को संकोच

में नहीं डालना चाहा। सदा श्यामसुन्दर के सुख में ही सुखी रहना, यही गोपी प्रेम की विशेषता है।

ब्रज बामा प्रेम महँ बँधे श्याम श्यामा।
धन्य धन्य निष्काम प्रेम ब्रज बामा॥ २५०॥

भावार्थ—श्यामा श्याम ब्रजगोपियों की प्रेम-रज्जु में बँधे हुये हैं। ब्रजगोपियों के उस निष्काम प्रेम को धन्य है, धन्य है।

स्वांश ते अभिन्न रहें सदा श्याम श्यामा।
स्वांश विधि हरि हर अरु ब्रजबामा॥ २५१॥

भावार्थ—श्यामा श्याम सदा अपने स्वांश से अभिन्न रहते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं ब्रजगोपियाँ श्यामा-श्याम के स्वांश हैं।

भगवत स्वरूप दोनों श्याम अरु श्यामा।
श्यामा श्याम कायव्यूहरूप ब्रज बामा॥ २५२॥

भावार्थ—श्यामा श्याम दोनों भगवत्स्वरूप ही हैं। श्यामा श्याम की कायव्यूहरूपा ब्रज गोपियाँ हैं।

ब्रज बामा कायव्यूह रूप ब्रज धामा।
वेद की ऋचाएँ हैं दासी ब्रज बामा॥ २५३॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम की काय-व्यूह-रूपा गोपियों की दासी वेद की ऋचायें बनी हैं।

श्याम ना सुनै जो तेरी जाओ ढिग श्यामा।
श्यामा ना सुनै तो जाओ ढिग ब्रज बामा॥ २५४॥

भावार्थ—हे जीव! तेरा करुण-क्रन्दन यदि नंदनंदन के कर्णरन्ध्रों तक नहीं पहुँच पाता तो ममतामयी श्रीराधा को पुकार। यदि करुणामयी कीर्तिकिशोरी भी सुनने में आनाकानी करती हैं, तो युगल-सरकार की अनुग्रह प्राप्त किसी सखी की शरण ग्रहण कर।

श्यामा सम श्याम भी हैं श्याम सम श्यामा।
किन्तु ब्रजबामा सम नहिं कोउ बामा॥ २५५॥

भावार्थ—श्रीराधिका की समानता में श्यामसुन्दर हैं एवं श्यामसुन्दर की समानता श्रीराधिका के साथ की जा सकती है किंतु ब्रजगोपियों की तुलना में तो केवल ब्रजगोपियाँ ही हैं।

श्याम हूँ भजन करें सदा ब्रज बामा।
काके घर चोरी करूँ सोचें आठु यामा॥ २५६॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ जिस प्रकार रात-दिन श्यामसुन्दर का ही चिंतन करती हैं, उसी प्रकार श्यामसुन्दर भी सदा ब्रजगोपियों का ही चिंतन करते हैं- आज किसके घर चोरी करनी है।

धन्य प्रेम ब्रज बामा ब्रह्म श्याम श्यामा।
बना है खिलौना खेलें सब ब्रज बामा॥ २५७॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों का अद्‌भुत प्रेम धन्य है जिसने श्यामा-श्याम को खिलौना बना रखा है। ब्रजगोपियाँ युगल-सरकार रूपी खिलौनों से निरन्तर खेलती रहती हैं।

श्याम को चिढ़ाना चाहो कहो सब बामा।
द्वै बाप मैया वारो कारो कान्ह नामा॥ २५८॥

भावार्थ—यदि कभी कन्हैया को चिढ़ाने की इच्छा हो, तो सब सखियाँ मिलकर कृष्ण को काला काला, दो बाप (वसुदेव, नंद) दो मैया (देवकी, यशोदा) वाला कहकर चिढ़ाओ।

परम पुरुष को बरसाने धामा।
श्याम ते बनायो श्यामा होरी बिच बामा॥ २५९॥

भावार्थ—कभी होली के उत्सव में, बरसाना धाम में श्रीराधा की प्रिय सखियों ने पूर्णतम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण को सखी रूप में सुसज्जित कर उन्हें श्याम से श्यामा बना दिया।

साँकरी गली में श्याम छेड़ दिए श्यामा।
श्याम थे अकेले बाँध्यो मिलि ब्रज बामा॥ २६०॥

भावार्थ—कभी श्यामसुन्दर ने साँकरी खोर में श्रीराधा को अकेली जानकर छेड़ दिया। श्रीराधा की सखियाँ उनके साथ थीं। सखियों ने पकड़कर श्यामसुन्दर को बाँध दिया।

वैकुण्ठ धाम हो या द्वारवती धामा।
ब्रज धाम तजि नाहीं जायें ब्रजबामा॥ २६१॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें ब्रजधाम का परित्याग कर कभी बैकुण्ठ अथवा द्वारिका भी नहीं जातीं।

श्यामा कहें श्याम धन्य श्याम कहें श्यामा।
हम कहें तीनों धन्य श्याम श्यामा बामा॥ २६२॥

भावार्थ—श्रीराधा अपने प्राण प्रियतम श्रीकृष्ण को धन्य धन्य कहती हैं। श्रीकृष्ण श्रीराधा की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं किन्तु मेरी दृष्टि में तो श्यामा-श्याम एवं ब्रजगोपियाँ सभी प्रेम-क्षेत्र में मूर्धन्य हैं। कोई किसी से कम नहीं।

महाविष्णु से भी नहीं प्यार करें बामा।
ब्रज बामा प्राण श्यामा श्याम ब्रजधामा॥ २६३॥

भावार्थ—इस ब्रजमण्डल का कैसा माहात्म्य है! यहाँ पर श्यामा-श्याम को छोड़कर कोई ब्रजांगना महाविष्णु से भी प्रेम नहीं करती। श्यामा श्याम एवं ब्रजधाम ही गोपियों का प्राण हैं।

ब्रज बामा देह प्राण सम श्याम श्यामा।
प्राण गये देह नाहीं रह कह बामा॥ २६४॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ देह के समान हैं। युगल-सरकार

देह में प्राणों के समान हैं। प्राणों के न रहने पर देह का अस्तित्व नहीं रहता। इसी प्रकार श्यामा-श्याम के आधीन ही गोपियों का जीवन है। उनके प्राण-सर्वस्व श्यामा-श्याम ही हैं।

ब्रजबामा नाम लै लै सदा श्याम श्यामा।
खायें पियें सोयें जागें नित आठु यामा॥ २६५॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ खाते पीते सोते जागते निरन्तर श्यामा श्याम का ही नाम रटती रहती हैं।

राधे राधे गोविन्द गावें ब्रज बामा।
आँसू बहावें करें सब गृह कामा॥ २६६॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ सदैव अपने गृह-कार्य करते हुए भी नेत्रों से अश्रु-वर्षा करते हुए राधा गोविंद के पवित्र नामों का मुख से गायन करती रहती हैं।

कर्मयोग देखना हो देखो ब्रज बामा।
इन्द्रियों ते काम मुख ते श्याम श्यामा॥ २६७॥

भावार्थ—गीता का कर्मयोग तो ब्रज-गोपियों के जीवन में ही चरितार्थ होता है। इन्द्रियों से गृहस्थ के समस्त कार्य करती हुई भी वे निरन्तर श्यामा-श्याम का स्मरण-युक्त नाम उच्चारण करती रहती थीं।

भोर भये गाय दुहें सब ब्रज बामा।
धारध्वनि ताल मानें बोलें श्याम श्यामा॥ २६८॥

भावार्थ—प्रातःकाल होते ही ब्रजमण्डल में गोपियाँ अपनी गायों का दोहन-कार्य करती हैं। दूध की धार की ध्वनि को ताल मानकर सभी गोपियाँ मुख से श्यामा-श्याम का नाम गाती हैं।

मिलन या विरह में दोउ श्याम श्यामा।
प्रतिक्षण वर्धमान प्रेम ब्रज बामा॥ २६९॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम का मिलन प्राप्त हो अथवा विरह। ब्रजांगनाओं का प्रेम तो प्रतिक्षण वृद्धि को ही प्राप्त होता है।

कुलटा कहे तो कहे सारा ब्रजधामा।
लागी नहिं छूटे चाहे छूटे तनु बामा॥ २७०॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी कहती है-मैंने कृष्ण से प्रेम किया है अब यदि मुझे कोई कलंकिनी कहता है तो कहता रहे। चाहे प्राण ही चले जायँ परन्तु जोड़ा हुआ प्रेम नहीं टूटेगा।

जानती हूँ जार प्रेम का परिणामा।
नरक मिलेगा भोग लूँगी कह बामा॥ २७१॥

भावार्थ—गोपियाँ कहती है कि परपुरुष से प्रेम करने का परिणाम नरक होता है, यह मैं जानती हूँ। नरक भोग लूँगी किन्तु श्यामसुन्दर से प्यार करना नहीं छोड़ूँगी।

वस्तुतः स्वकीया ही हैं सब ब्रज बामा।
भाव परकीया रखि सेवें श्याम श्यामा॥ २७२॥

भावार्थ—वस्तुतः समस्त ब्रजगोपियाँ जो नित्यसिद्धा थीं स्वकीया ही हैं परन्तु अवतार-काल में ब्रज में वे परकीया-भाव से श्यामा-श्याम का सेवन करती हैं।

कब कौन कहाँ तप किया ब्रज बामा।
जिनके हाथों में बिका ब्रह्म बिनु दामा॥ २७३॥

भावार्थ—इन ब्रजांगनाओं ने किस काल में, किस स्थल पर, कौन सा तप किया था, जिससे कि ब्रह्म कृष्ण बिना दाम के ही सदा के लिये बिक गया इनके हाथों।

वेद कहें पूर्ण ब्रह्म सदा पूर्ण कामा।
सोइ प्रेम माँगे चले पाछे ब्रज बामा॥ २७४॥

भावार्थ—वेद जिसे पूर्णकाम पूर्णब्रह्म कहता है, वही श्रीकृष्ण ब्रजांगनाओं के पीछे पीछे घूमता हुआ उनसे प्रेम की भिक्षा माँगता है।

वेद कहें ब्रह्म तो है सदा पूर्णकामा।
सोइ ब्रज रास करे संग ब्रज बामा॥ २७५॥

भावार्थ—वेद कहते हैं-ब्रह्म सदैव ही पूर्णकाम है किन्तु वही ब्रह्म ब्रजगोपियों के साथ ब्रज में रास विहार करता है।

देखो एक अनहोनी गोकुल ग्रामा।
नाचे ब्रह्म तारी पै नचावैं ब्रज बामा॥ २७६॥

भावार्थ—एक अनहोनी घटना देखो-गोकुल गाँव में ब्रजांगनायें अपनी ताली पर पूर्ण ब्रह्म को नचा रही हैं।

गोपी प्रेम महिमा जानें ब्रज बामा।
ब्रह्म पाछे पाछे घूमे बिक्यो बिनु दामा॥ २७७॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों के प्रेम की महिमा को ब्रजांगनायें ही जानती हैं, जिस प्रेम के परवश हुआ पूर्णतम ब्रह्म उनका क्रीत दास बना उनके पीछे-पीछे घूमता है।

गोबर उठावैं सिर श्याम सुख धामा।
गाल में गोबर को टीका देयँ बामा॥ २७८॥

भावार्थ—सुखधाम श्यामसुन्दर ब्रज में गोबर का भरा हुआ टोकरा उठाकर गोपियों के सिर पर रखवा देते हैं। श्यामसुन्दर गोपी से कहते हैं- तू इस टोकरे के उठवाने का मुझे क्या देगी? गोपी उत्तर देती है-तुम्हें मक्खन प्रिय है, घर चलकर मक्खन ले लेना। श्यामसुन्दर ने कहा-मैं याद कैसे रखूँगा तूने कितने टोकरे गोबर के उठवाये हैं? गोपी ने कहा-मैं तुम्हारे गाल में प्रत्येक टोकरे के बदले एक गोबर का टीका लगा दूँगी, जितनी संख्या टीकों की होगी, उतने मक्खन के लौंदे तुम्हें दे दूँगी। इस प्रकार गणना के लिये गोपी ने

भोलेभाले कृष्ण के कपोलों को गोबर के टीकों से परिपूर्ण कर दिया। 'गोमयमंडितभालकपोलम्'।

गोपी प्रेम महिमा देखो ब्रज धामा।
गारी हित पूर्ण ब्रह्म छेड़े ब्रज बामा॥ २७९॥

भावार्थ—ब्रजधाम के अन्तर्गत गोपी-प्रेम की अनन्त महिमा का कैसे वर्णन किया जाय, जिस प्रेम के वशीभूत हुआ पूर्ण ब्रह्म गाली खाने के लिये ब्रजांगनाओं से छेड़छाड़ करता है।

ब्रज नारी गारी सुनि कह सुख धामा।
क्या कहा पुनि कहु सुना नाहिं बामा॥ २८०॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों की गाली सुनकर रसिक श्यामसुन्दर कहते हैं— हे सखी! तुमने क्या कहा? मैंने सुना नहीं। जरा फिर से तो कहो।

साँकरी खोर जनि छेड़ा करो बामा।
गारी कैसे मिले पुनि कहें सुखधामा॥ २८१॥

भावार्थ—किसी सखी ने श्यामसुन्दर से कहा, तुम साँकरी खोर में सखियों के साथ छेड़छाड़ न किया करो। श्यामसुन्दर ने उत्तर दिया-सखियों की गाली खाने में मुझे बहुत रस मिलता है। यदि छेड़छाड़ नहीं करूँगा तो गाली कैसे मिलेगी।

मीठी मीठी गारी खाऊँ मुख ब्रज बामा।
मन करे नहिं जाऊँ गोलोक धामा॥ २८२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर कहते हैं,ब्रज गोपियों के मुख से जो प्रेम भरी गालियाँ मुझे मिलती हैं, उन्हें छोड़कर मेरी गोलोक जाने की भी इच्छा नहीं होती।

उतना न प्रिय मम सुत मम बामा।
जितनी हैं प्रिय ब्रज बामा ब्रज धामा॥ २८३॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण कहते हैं, मुझे अपने पुत्र ब्रह्मा उतने प्रिय नहीं, अपनी अर्धांगिनी लक्ष्मी भी उतनी प्रिय नहीं, जितनी प्रिय ब्रज गोपियाँ हैं।

मेरी गुरु मेरी शिष्य मेरी बन्धु बामा।
मेरी आत्मा हैं ब्रज बामा ब्रज धामा॥ २८४॥

भावार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-गोपियाँ मेरी गुरु हैं, मेरी शिष्या हैं, मेरी बन्धु हैं, मेरी स्त्रियाँ हैं, मेरी आत्मा हैं।

श्याम प्रति अपराध क्षमा करें बामा।
बामा प्रति अपराध किये नाहिं ठामा॥ २८५॥

भावार्थ—यदि कोई जीव श्यामसुन्दर के प्रति अपराध करता है तो गुरु स्वरूपा ब्रज-गोपियाँ क्षमा कर देती हैं, परन्तु जो ब्रज-गोपियों के प्रति अपराध करता है उसे कहीं भी स्थान नहीं मिलेगा। कारण श्रीकृष्ण भक्तापराधी को क्षमा नहीं

करते।

गोपी जन प्रेम का ही नाम हुआ कामा।
यही कामप्रेम चह शिव ब्रज धामा॥ २८६॥

भावार्थ—ब्रज गोपियों का प्रेम ही जगत् में काम नाम से विख्यात हुआ। इस काम नामक गोपी प्रेम को ब्रज में भगवान् शिव ने भी चाहा। नारी रूप धारण कर सदाशिव रास में सम्मिलित हुए।

काम आदि भेद दो हैं कह ब्रज बामा।
एक काम मायिक एक दिव्य कामा॥ २८७॥

भावार्थ—कामादिक के दो भेद हैं एक तो सांसारिक काम, दूसरा दिव्य काम। (ब्रजगोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति दिव्य काम था, जिसकी प्रशंसा सभी रसिकों ने की।)

गोपी जन मन बसे श्याम आठु यामा।
याते कारो भयो जरि ताप ब्रज बामा॥ २८८॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर निरन्तर गोपियों के हृदय में ही रहते हैं। इसीलिये गोपियों के हृदय में जलने वाली विरहाग्नि से तपकर काले हो गये हैं।

गोपी जन लखि घनश्याम सुख धामा।
पलक बनायो काहे कोसें विधि बामा॥ २८९॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ जब श्रीकृष्ण के सौन्दर्य माधुर्य

का दर्शन करती हैं तब उन्हें पलकों का गिरना भी अच्छा नहीं लगता। पलक गिरने से दर्शन में विक्षेप होता है। वे पलक बनाने वाले ब्रह्मा को ही कोसने लगती हैं।

चुभें ना उरोज पग श्याम रस धामा।
धीरे ते लगावें उर धन्य ब्रज बामा॥ २९०॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें धन्य हैं। श्रीकृष्ण के चरण-कमलों को वक्षस्थल पर धारण करते समय इन्हें यह भय बना रहता है कि कहीं हमारे कठोर कुच दिव्य रससागर श्रीकृष्ण के कोमल चरणों में कष्ट न पहुँचा दें। अतएव अत्यन्त धीरे से हृदय से लगाती हैं।

पिय रुचि महँ रुचि राखें ब्रज बामा।
सेवा सोइ जासों सुख पावें श्याम श्यामा॥ २९१॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें श्यामा-श्याम की रुचि में ही रुचि रखती हैं। सेवा का तात्पर्य प्रेमास्पद को सुख पहुँचाना ही तो है। (ये गोपियों 'तत्सुखसुखित्वम' की भावना से परिपूर्ण हैं।)

श्याम प्यार करें चाहे तड़पावें बामा।
चाहे मारें घटे नहिं प्रेम निष्कामा॥ २९२॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियों का प्रेम अत्यन्त निष्काम है। श्रीकृष्ण चाहे उन्हें प्यार करें, चाहे उदासीन बनकर तड़पाते रहें अथवा उनके प्राण ही ले लें परन्तु ब्रजांगनाओं का प्रेम

कभी न्यून नहीं होता।

क्रोध भी कृपा है श्याम की कह बामा।
असुरों को मारि दिया निज दिव्य धामा॥ २९३॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर यदि किसी प्राणी पर क्रोध भी करते हैं तो उनका वह क्रोध भी उनका अनुग्रह ही है।

कंस द्वारा भेजे हुए जिन असुरों का वध ब्रज में निवास करते समय श्रीकृष्ण ने किया था उन सबको अपने दिव्य धाम गोलोक में भेज दिया।

कुलिश कठोर या कृपालु सुखधामा।
जो भी हो बढ़ेगा मेरा प्यार आठु यामा॥ २९४॥

भावार्थ—सुखधाम श्यामसुन्दर चाहे मेरे प्रति वज्र से भी अधिक कठोर हों या अत्यंत कोमल हों, उनके हर व्यवहार में मेरा प्रेम उनके प्रति निरन्तर बढ़ता ही जायेगा।

गीता ज्ञान दाता हों या श्याम सुखधामा।
ग्वारिया गँवार यार रहें कह बामा॥ २९५॥

भावार्थ—गोपियाँ कहती हैं—कृष्ण चाहे ग्वारिया गँवार हों, चाहे गीता ज्ञान–प्रदाता हों,वे ही उनके प्रियतम हैं। प्रियतम के गुण–दोषों से उनका कोई प्रयोजन नहीं।

कोटि काम कमनीय हों रूपधामा।
या हों कुरूप पाछा छोड़ें नहिं बामा॥ २९६॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें प्रेम करना जानती हैं। उनकी दृष्टि में कृष्ण रूप के भण्डार कामदेव को भी लज्जित करने वाले हों अथवा कुरूप हों,उन्होंने तो प्रेम किया है। अतः प्रेम का निर्वाह अन्त तक करेंगी।

अवगुण खानि हों या गुणगण धामा।
वे ही मेरे थे हैं रहेंगे आठु यामा॥ २९७॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें कहती हैं-उनके प्रियतम कृष्ण अवगुणों के भंडार हों या गुणों के धाम, वे ही सदा से उनके थे, वे ही उनके हैं, वे ही उनके रहेंगे।

मैं ही श्याम बामा या हों कोटि श्याम बामा।
श्याम का ही सुख चाहें हम आठु यामा॥ २९८॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी कहती है-चाहे केवल मैं ही कृष्ण की प्रेयसी रहूँ, चाहे करोड़ों ब्रजांगनायें प्रियतम कृष्ण की प्रेयसी बनें, मैं तो प्रियतम के सुख से ही सुखी हूँ।

चाहे हों निठुर अति चाहे सुखधामा।
लम्पट मेरे प्रेम घटे नाहिं बामा॥ २९९॥

भावार्थ—मेरे लम्पट प्रियतम कृष्ण चाहे मेरे प्रति अत्यन्त निष्ठुरता का व्यवहार करें, अथवा अत्यन्त प्रेम का, किन्तु मेरा प्रेम उनसे कभी कम नहीं होगा, अपितु निरन्तर बढ़ता ही जायेगा।

गोलोक तजि आई ब्रज ब्रजबामा।
ब्रज रस बरसाया ब्रजधामा॥ ३००॥

भावार्थ—अनादिकाल से गोलोक में ही निवास करने वाली श्रीराधा की अभिन्न सहचरियाँ भी श्यामा-श्याम के साथ ब्रज में अवतरित हुईं। इन सबने सम्मिलित रूप से ब्रजधाम में ब्रजरस की अखण्ड वर्षा की।

श्यामा श्याम आये तजि गोलोक धामा।
यह है चमत्कार प्रेम ब्रज बामा॥ ३०१॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम को अपना दिव्य गोलोक धाम त्यागकर मर्त्यलोक में अवतार लेकर आना पड़ा, यह साधनसिद्धा गोपियों के प्रेम का ही चमत्कार है। (जिन आत्माओं ने युगों से गोलोक विहारी के प्रति माधुर्यभाव अपनाया था, उनकी साधना पूर्णावस्था को प्राप्त हो चुकी थी। अब श्रीकृष्ण को उनकी साधना का फल प्रदान करना था। गोलोक में रहते हुए ऐसा सम्भव नहीं हो सकता था। अतः चिरकाल से आशा लगाये हुए जीवों को सुख प्रदान करने के लिये युगल-सरकार को ब्रजधाम में अवतरित होना पड़ा।)

श्यामा श्याम आये ब्रज लखि प्रेम बामा।
प्रेम के अधीन श्याम भानुलली श्यामा॥ ३०२॥

भावार्थ— गोपियों के प्रेम के वशीभूत होकर श्यामा-श्याम ब्रजमंडल में अवतरित हुए। वृषभानुनन्दिनी राधा एवं नंदनंदन श्यामसुन्दर दोनों ही सदा प्रेम के वशीभूत हैं।

श्याम आये मथुरा बरसाने श्यामा।
श्यामा श्याम लीला करें वृन्दावन धामा॥ ३०३॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण मथुरा में प्रकट हुए। श्रीराधा बरसाने में। और दोनों की मधुर लीलाओं की स्थली है वृन्दावन धाम।

चिन्मय तनु धरि आये श्याम श्यामा।
किन्तु वह दिव्य तनु देखें ब्रज बामा॥ ३०४॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम दोनों ही गोलोक से अवतार लेकर पृथ्वी के ब्रजमण्डल में चिदानन्दमय शरीर धारण कर पधारे। किन्तु उनके अप्राकृत शरीर की दिव्यता का अनुभव

केवल उनकी कृपापात्री ब्रज-गोपियाँ ही करती हैं।

ऐश्वर्य में ब्रह्म अज सोइ श्यामा।
माधुर्य में जन्म लिया भानुधामा॥ ३०५॥

भावार्थ—जो ब्रह्म अजन्मा है, ऐश्वर्यमय है, उसी ब्रह्म राधिका ने अपने माधुर्यमय रूप में वृषभानु-भवन में अवतार ग्रहण किया।

आ रहे हैं हरि हर बरसानो धामा।
सुना है प्रकट होंगी भानु घर श्यामा॥ ३०६॥

भावार्थ—वृषभानु के गृह में श्रीराधा प्रकट होंगी, इस समाचार को सुनकर ब्रह्मा एवं विष्णु भी बरसाने धाम में उनके दर्शन-हेतु आ रहे हैं।

श्यामा बिनु मैं ना जाऊँ कभू ब्रज धामा।
श्याम कह लीला कैसे होगी बिनु श्यामा॥ ३०७॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर कहते हैं-श्रीराधा के बिना मैं कभी ब्रज में अवतार नहीं लूँगा। बिना श्रीराधा के लीला कैसे सम्पन्न होगी?

पहले तुम जावो श्यामा बरसाने गामा।
पाछे मैं आऊँगा मधुपुरि धामा॥ ३०८॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने श्रीराधा से कहा-हे श्रीराधे! पहले तुम बरसाने ग्राम में अवतार लो। तुम्हारे जाने के पश्चात् मैं

भी मथुरा धाम में प्रकट होउँगा।

श्यामा आ गईं हैं संग लैके ब्रज बामा।
भाजे भाजे अइहैं श्याम मधुपुरि धामा॥ ३०९॥

भावार्थ— श्रीराधा अपनी सखियों सहित ब्रजमंडल में आ गईं हैं। अब श्यामसुन्दर भी अति शीघ्र मधुपुरी में अवतार ग्रहण करेंगे।

ह्लादिनी को सार प्रेम प्रेम सार श्यामा।
कीरति की गोद आई बरसाने धामा॥ ३१०॥

भावार्थ—ह्लादिनी शक्ति का सार प्रेम है। प्रेम का सार श्रीराधा हैं। वही श्रीराधा बरसाने ग्राम में कीर्ति माँ की गोद में प्रकट हुईं।

आईं आईं शोर चहुँ ओर ब्रज धामा।
भोरी भारी नथवारी प्यारी प्यारी श्यामा॥ ३११॥

भावार्थ—ब्रजमंडल में चारों दिशाओं में कोलाहल मच

गया। सभी नर-नारी 'आ गईं, आ गईं', कहकर शोर मचा रहे थे। इस प्रकार नासिका में सुन्दर नथ धारण करने वाली भोली भाली किशोरी राधा बरसाने में प्रकट हुईं।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव अरु उमा रमा बामा।
हुये सब मोहित लखि छवि श्यामा॥ ३१२॥

भावार्थ—श्रीराधा की मनोहारिणी छवि को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं उमा रमा आदि महाशक्तियाँ भी मोहित हो गईं।

ब्रह्मा वेद पाठ करें बरसाने धामा।
शिव करें ताण्डव संग गोप बामा॥ ३१३॥

भावार्थ—बरसाना धाम ब्रह्मा के वेद-पाठ से गुंजरित हो उठा। शिव गोपियों के साथ तांडव नृत्य करने लगे।

भानु ने तपस्या कौन कीन्ही कौन धामा।
जाते बने बाबा शक्ति ह्लादिनि श्यामा॥ ३१४॥

भावार्थ—वृषभानु ने न जाने किस स्थल पर कौन सी तपस्या की, जिस कारण उनको ह्लादिनी शक्ति श्रीराधा का पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कीरति के भाग की न समता बामा।
लाली को लाड़ लड़ायो आठु यामा॥ ३१५॥

भावार्थ—श्रीराधिका की जननी कीर्ति के भाग्य की

समानता भला कौन कर सकता है, जिन्होंने लाड़ली राधा को निरन्तर भाँति भाँति के लाड़ लड़ाये।

धन्य भूप भानु धन्य कीर्ति रानी बामा।
चूमें चिपटावें दुलरावें नित श्यामा॥ ३१६॥

भावार्थ—वृषभानु राजा धन्य हैं। उनकी रानी कीर्ति भी धन्य हैं, जिन्हें श्री राधा को चूमने,चिपटाने एवं अनेक प्रकार से प्यार करने का नित्य अधिकार प्राप्त हुआ।

धनि वृषभानु भूप धनि कीर्ति बामा।
धनि ब्रजवासी धनि बरसानो धामा॥ ३१७॥

भावार्थ—राजा वृषभानु भाग्यशाली हैं। कीर्तिदा भी धन्य हैं। ब्रजवासी धन्य हैं। बरसाना धाम भी धन्य है।

लाली जू की लीला लखें बड़भागी बामा।
हम भी बड़भागी लीला गुन गावें श्यामा॥ ३१८॥

भावार्थ—जो ब्रजवासिनी गोपियाँ लाड़िली श्यामा की लीलायें देखती हैं वे अत्यंत बड़भागिनी हैं। हम भी बड़भागी हैं जो श्री राधा की लीलाओं एवं गुणों का कीर्तन कर रहे हैं।

चलो करें दर्शन बरसाने धामा।
ब्रजरस बरसाने आयीं तहँ श्यामा॥ ३१९॥

भावार्थ—बरसाना धाम में श्री राधिका ब्रजरस की वर्षा

के लिये अवतीर्ण हुई हैं। अतएव दर्शनों के लिये बरसाना चलो।

भानु घर भारी भीर गोप ब्रजबामा।
सब ब्रजवासी चाहें दर्शन श्यामा॥ ३२०॥

भावार्थ—वृषभानु के गृह में ब्रज-गोप-गोपियों की भारी भीड़ एकत्र हो गई है। सभी ब्रजवासी श्री राधिका के दर्शन करना चाहते हैं।

कोऊ गावे कोऊ नाचे भानुभूप धामा।
कोउ बजावे ढोल ढप ब्रज बामा॥ ३२१॥

भावार्थ—राजा वृषभानु के गृह में श्रीराधिका के जन्मोत्सव के आनन्द में कोई गा रहा है, कोई नाच रहा है। कोई ब्रजगोपी ढोल एवं कोई ढप बजा रही है।

तिल धरने की नाहिं ठौर भानु धामा।
भारी भीर एक स्वर बोले 'जय श्यामा'॥ ३२२॥

भावार्थ—आज वृषभानु के महल में तिल भर स्थान शेष नहीं है। ब्रज के सभी नर नारी भीड़ के रूप में एकत्रित होकर श्री राधा का जय जयकार कर रहे हैं।

गोलोक ते आईं बरसाने श्यामा।
चलो री बधाई गाने सब ब्रज धामा॥ ३२३॥

भावार्थ—श्रीराधा गोलोक से अवतार लेकर बरसाना धाम को सुशोभित कर रही हैं। चलो! हम सब बधाई गाने के लिये ब्रजधाम में चलें।

बधाई लो बधाई लो बधाई कीर्ति बामा।
तेरी गोद प्रकट भई ब्रह्म श्यामा॥ ३२४॥

भावार्थ— हे कीर्ति रानी! हमारी बधाई स्वीकार करो। क्योंकि तुम्हारी गोद में ब्रह्म-स्वरूपा श्री राधा प्रकट हुई हैं।

बधाई में कौन कौन गुन गाउँ श्यामा।
तू तो है अगनित गुनगन धामा॥ ३२५॥

भावार्थ—हे श्री राधे! तुम अनन्त गुण समूहों की धाम हो। भला बधाई देते समय हम तुम्हारे कितने गुणों का गायन कर सकती हैं।

मणि मुक्ता थार लुटावें कीर्ति बामा।
लूटे न कोऊ माँगें दर्शन श्यामा॥ ३२६॥

भावार्थ—यद्यपि कीर्ति मैया श्री राधा के प्राकट्य की प्रसन्नता में थाल भर भर कर मणि एवं मुक्ता लुटा रही हैं किंतु श्रीराधा के दर्शन हेतु लालायित गोप गोपी कोई भी उन मणि मुक्ताओं को ग्रहण नहीं करता।

मणि मुक्ता नहिं चह कीरति बामा।
कुँवरि को देखे बिनु जाउँ नहिं धामा॥ ३२७॥

भावार्थ—हे कीर्ति रानी! हमें तुम्हारे मणि मुक्ताओं की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें तो केवल तुम्हारी पुत्री श्रीराधा के दर्शन की ही लालसा है। श्री राधा को देखे बिना हम अपने घर नहीं लौटेंगी।

बधाई गवाई कछु ना दे कीर्ति बामा।
गोद में लै दुलराऊँ तेरी लाली श्यामा॥ ३२८॥

भावार्थ—हे कीर्तिदा! तुम मुझे बधाई-गान करने के बदले में कोई पदार्थ मत दो। मेरी तो एक ही इच्छा है कि तुम्हारी पुत्री को गोद में लेकर एक बार प्रेम से उसे लाड़ लड़ाऊँ।

कीर्ति मैया आई मैं बधाई गाने धामा।
न्यौछावर माँगूँ प्रेम निष्काम श्यामा॥ ३२९॥

भावार्थ—हे कीर्ति मैया! मैं तुम्हारे महल में श्री राधा के जन्मोत्सव की बधाई गाने आई हूँ। मुझे न्योछावर में श्रीराधा के प्रति निष्काम प्रेम की भिक्षा दो।

युग युग ऋणी रहौं तेरी कीर्ति बामा।
एक झलक दिखला दे लाली श्यामा॥ ३३०॥

भावार्थ—हे कीर्तिरानी! मैं युगों तक तुम्हारी ऋणी रहूँगी। तुम एक बार अपनी लाड़िली राधा का दर्शन करा दो।

तेरी लाली अमर रहे ब्रज धामा।
देवें शुभकामना कीरति को बामा॥ ३३१॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ कीर्ति मैया को शुभकामना देती हुई कहती हैं-हे कीर्ति रानी! तुम्हारी लाड़िली राधा सदा अमर रहे।

काहु की नजर नहिं लागे ब्रज धामा।
राइ नोन वारूँ तो पै भानुलली श्यामा॥ ३३२॥

भावार्थ— हे भानुनन्दिनी तुम्हें इस ब्रजधाम में कभी किसी की नजर न लगे, इस लक्ष्य से मैं तुम पर राई नमक वारती हूँ।

भुक्ति मुक्ति नाहिं चह कीरति बामा।
कुँवरि को देखे बिनु जाउँ नहिं धामा॥ ३३३॥

भावार्थ—हे कीर्ति रानी! मुझे न संसार के भोगों की इच्छा है, न ही मुक्ति की। मैं तो तुम्हारी पुत्री राधा के दर्शन की भूखी हूँ। राधा का दर्शन किये बिना मैं अपने घर लौटकर नहीं जाऊँगी।

खाली झोली लै के आई श्यामा तव धामा।
झोली भर दे दे दर्शन भीख श्यामा॥ ३३४॥

भावार्थ—हे राधे! मैं तुम्हारे महल में अपनी खाली झोली लेकर आई हूँ। मेरी खाली झोली को अपने दर्शन की भिक्षा से भर दो।

दूर ते आई हूँ मैं तेरे धामा।
मेरी ओर लखि मुसका दे नेकु श्यामा॥ ३३५॥

भावार्थ—हे श्री राधे! बड़ी दूर से चलकर मैं तुम्हारे द्वार तक आ पाई हूँ। मेरी ओर देखकर थोड़ा सा मुस्कुरा दो।

कृपा की बुलाया तूने श्यामा निज धामा।
मेरी भी उमर लग जाये तोहिं श्यामा॥ ३३६॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुमने अत्यंत कृपा की जो अपने धाम तक बुला लिया। हे किशोरी राधे! तुम्हें मेरी भी आयु प्राप्त हो जाये।

बधाई गवाई दे दे मोको कीर्ति बामा।
दिन रात सेवा करूँ धाइ बनि श्यामा॥ ३३७॥

भावार्थ—हे कीर्ति रानी! बधाई गाने के उपलक्ष्य में मुझे यही दो कि मैं तुम्हारी पुत्री राधा की धाई बनकर रात दिन सेवा करूँ।

दिन रात गाऊँगी बधाई तव धामा।
बदले में वस्त्र धोऊँ नहलाउँ श्यामा॥ ३३८॥

भावार्थ— हे कीर्ति! तुम्हारे भवन में रात दिन बधाई गाऊँगी। उसके बदले में मुझे श्रीराधा को स्नान कराने एवं उनके वस्त्र धोने की सेवा प्रदान करना।

महल में दासी बना दे कीर्ति बामा।
लोरी गाके तोरी सुलाऊँ लली श्यामा॥ ३३९॥

भावार्थ—हे कीर्ति रानी! अपने महल में मुझे दासी बनाकर रख लो। तुम्हारी लाड़िली राधा को मैं लोरी गाकर सुलाया करूँगी।

बार बार गाओ बधाई न तु श्यामा।
वापस चली जायेंगी निज धामा॥ ३४०॥

भावार्थ— बार बार श्रीराधा के प्राकट्य महोत्सव में बधाई गाओ अन्यथा श्रीराधा रूठकर अपने गोलोकधाम में ही लौट जायेंगी।

रस बरसाने आईं बरसाने धामा।
तोरे ऋण उऋण न कोउ कभु श्यामा॥ ३४१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम बरसाने धाम में रस की वर्षा करने आई हो। तुम्हारे ऋण से कोई कभी भी उऋण नहीं हो सकता।

गावो सब नाम गुन लीला अरु धामा।
यही है बधाई बोलो 'जय हो जय हो श्यामा'॥ ३४२॥

भावार्थ—सब मिलकर श्रीराधा के नाम, गुण, लीला, धाम का गायन करो। यही बधाई गान है। श्री राधा की जय हो जय हो, सब ऐसा बोलो।

वृषभानु कीरति बरसानो धामा।
तीनों का ही अभिनन्दन करूँ श्यामा॥ ३४३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं आपके पिता वृषभानु, माता कीर्तिदा एवं बरसाना धाम सभी का अभिनन्दन करता हूँ।

दर्शन को गइ बरसाने धामा।
मोहिं लखि जाने काहे मुसकाइ श्यामा॥ ३४४॥

भावार्थ—मैं श्रीराधा के दर्शन करने हेतु बरसाने गई थी। मुझे देखकर न जाने क्यों श्रीराधा मुस्कुरा उठीं।

फूली न समाई लखि मुसकनि श्यामा।
किन्तु मुसकाई काहे सोचूँ आठु यामा॥ ३४५॥

भावार्थ—जब श्रीराधा मुझे देखकर मुस्कुरा उठीं तब मैं आनन्द से प्रफुल्लित हो उठी। किन्तु अब निरन्तर सोचती रहती हूँ कि श्रीराधा की मुस्कान का तात्पर्य क्या था।

तोरे जन्म दिन पै भेंट का दुँ श्यामा।
मायिक मोरा तन मन धन धामा॥ ३४६॥

भावार्थ—कोई सखी कहती है-श्रीराधे! मैं तुम्हारे जन्म दिवस पर तुम्हें क्या वस्तु भेंट करूँ? मेरा तो तन, मन, धन, धाम सब कुछ सांसारिक ही है।

मेरा तो मैं भी नहिं तेरा सब श्यामा।
तेरा तुझे दूँ तो हँसें सब ब्रज बामा॥ ३४७॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मेरे पास अपना कहने योग्य मैं स्वयं भी तो नहीं हूँ। मैं भी तो तुम्हारी ही हूँ। यदि तुम्हारी ही वस्तु

को तुम्हें देने का दम्भ करूँ तो समस्त ब्रजगोपियाँ मेरा उपहास करेंगी।

तू तेरा सब कछु चिदानंद श्यामा।
'मैं' मेरा भला तेरे आवे कौन कामा॥ ३४८॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम एवं तुम्हारा सब कुछ चिदानन्दमय है। मैं एवं मेरा सब कुछ प्राकृत है, वह तुम्हारे किस काम आवेगा?

तोहिं भेंट का दूँ श्यामा तू तो पूर्णकामा।
आँसुओं का हार उपहार ले ले श्यामा॥ ३४९॥

भावार्थ—हे श्री राधा! तुम तो स्वयं में पूर्णकाम हो। मैं भला तुम्हें उपहार-स्वरूप कौन सी वस्तु प्रदान कर सकता हूँ। मेरे पास तुम्हें भेंट करने के लिये आँसुओं का हार है, उसी को ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करो।

भली बुरी जैसी हूँ तेरी हूँ श्यामा।
भेंट में मुझे ही ले बना दे ब्रज बामा॥ ३५०॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं अच्छी हूँ या बुरी हूँ जैसी हूँ तुम्हारी हूँ। तुम मुझको ही भेंट स्वरूप स्वीकार करो एवं अपनी कृपा से ब्रज की किसी गोपी का रूप मुझे प्रदान कर दो।

तन मन प्राण तेरा दिया हुआ श्यामा।
देना क्या है ले ले दे दे प्रेम निष्कामा॥ ३५१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मेरे पास तन, मन, प्राण जो कुछ है, तुम्हारा ही दिया हुआ है। मैं तुम्हारी दी हुई वस्तु को तुम्हें क्या दूँ? तुम अपनी वस्तु को स्वयं स्वीकार कर अपना निष्काम प्रेम मुझे दे दो।

सुनते थे शास्त्रों में प्रेम रूप नामा।
सोइ प्रेम रूप, रूप धरि आइँ श्यामा॥ ३५२॥

भावार्थ—शास्त्रों में दिव्य प्रेम एवं दिव्य रूप का नाम सुना करते थे। हे राधे! वही दिव्य प्रेम एवं दिव्य रूप तुम्हारा स्वरूप धारण करके प्रकट हुआ है।

जब जब अवतार होवे ब्रज श्यामा।
मोहिं निज धाम में बनाना ब्रज बामा॥ ३५३॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! जब जब ब्रज मण्डल में तुम्हारा अवतार हो, मुझे अपने निज महल की कोई गोप किशोरी बनाना।

ब्रज धाम में भी मिले बरसाना धामा।
बरसाना में भी मिले धाइ पद श्यामा॥ ३५४॥

भावार्थ—ब्रजधाम के अन्तर्गत भी बरसाना धाम में मेरा जन्म हो एवं बरसाने में भी श्रीराधा की धात्री बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो।

श्यामा जू की देह दुति चिदानन्दधामा।
अन्धकार में भी प्रकाश करें श्यामा॥ ३५५॥

भावार्थ—श्री राधिका की देह-कान्ति चिन्मय है। अंधकार में भी उनके देह से प्रकाश निर्झरित होता है।

चम्पक बरनि जैसी गौर तनु श्यामा।
नीली नीली चमकीली झँगुली ललामा॥ ३५६॥

भावार्थ—श्रीराधा का गौर वर्ण चम्पा के पुष्प की समानता रखता है। उस गौर वर्ण पर नीले रंग की चमकीली झँगुली अत्यन्त शोभा पा रही है।

जब ते प्रकट हुइँ श्यामा भानु धामा।
महल में चहल पहल रहे आठु यामा॥ ३५७॥

भावार्थ—श्रीवृषभानु-महल में निरन्तर जब से श्रीराधा का प्राकट्य हुआ है तब से चहल-पहल बनी रहती है।

आ तो गयीं श्यामा बरसाने धामा।
देखुँ तोहिं कैसे तू तो चिदानन्द श्यामा॥ ३५८॥

भावार्थ—यद्यपि श्रीराधा बरसाने में अवतार लेकर आ तो गईं हैं किंतु चिदानन्दमयी होने के कारण वे दिव्य दृष्टि से ही देखी जा सकती हैं। प्राकृत नेत्रों से उनका दर्शन प्राप्त नहीं हो सकता।

वेद बताये जगजननी हैं श्यामा।
कीरति को जननी बताये ब्रजधामा॥ ३५९॥

भावार्थ—वेद कहता है- श्री राधा जग की जननी हैं। ब्रजधाम में उन्हीं राधा की जननी कीर्तिदा को कहा गया।

वेद कहें हम नाहिं जानें कौन श्यामा।
बामा कहें चलो दिखला दें भानु धामा॥ ३६०॥

भावार्थ—वेद श्रीराधा को जानने में अपनी असमर्थता प्रकट करता है। वही श्रीराधा वृषभानु के भवन में प्रकट रूप से वास करती हैं, चलो दिखला दें।

ब्रज में प्रकट हुआ ब्रह्म बनि श्यामा।
लाली लाली कहें ब्रजवासी ब्रजधामा॥ ३६१॥

भावार्थ—ब्रजधाम में ब्रह्म श्रीराधा रूप में प्रकट हुआ। उस ब्रह्म को ब्रजमण्डल के वासी लाली कहकर सम्बोधित करते हैं।

लाली की छठी है आज बरसाने धामा
चलो री बधाई गाने सब ब्रज बामा॥ ३६२॥

भावार्थ— अरे! आज बरसाना धाम में श्रीराधा का छठी-उत्सव मनाया जा रहा है। चलो! सभी ब्रजगोपिकायें एकत्रित होकर बधाई गान के लिये वहाँ पहुँचे।

चलो बरसाने बधाई गाने बामा।
सुनि के बधाई मुसका देंगी श्यामा॥ ३६३॥

भावार्थ—बधाई गानहेतु बरसाना धाम चलो। बधाई गान

सुनकर श्रीराधा मुस्करा उठेंगी।

नाचो गाओ छठी की बधाई ब्रज बामा।
सुनि के बधाई मुसकाईं कालि श्यामा॥ ३६४॥

भावार्थ—आज छठी के उत्सव में सभी को नृत्य करते हुए बधाई गान करना चाहिये। कल बधाई-गान सुनकर श्रीराधा मुस्करा उठी थीं।

आओ आओ आओ बधाई गाओ बामा।
रोज रोज आवे न छठी प्यारी श्यामा॥ ३६५॥

भावार्थ—आओ सभी मिलकर श्रीवृषभानुनन्दिनी के हेतु बधाई-गान करो, श्रीराधा की छठी रोज नहीं आयेगी। उत्सव को उत्साहपूर्वक मनाओ।

मायिक शिशु की बधाई गावैं गामा।
तेरा तो तन मन चिदानन्द श्यामा॥ ३६६॥

भावार्थ—संसार में प्राकृत बालकों के जन्म दिन आदि पर भी बधाई गान किया जाता है। श्रीराधा का तो तन, मन सभी कुछ दिव्य है। उनकी छठी के उत्सव को तो अत्यन्त ही धूमधाम से मनाया जाना चाहिये।

श्यामा जू को दिव्य तनु आनंदधामा।
दिव्य दृष्टि मिले तब देखे कोउ श्यामा॥ ३६७॥

भावार्थ—श्रीराधा का चिन्मय वपु आनन्द से परिपूर्ण है। किंतु जब तक दिव्य-दृष्टि न मिल जाय, कोई भी उसका अवलोकन नहीं कर सकता।

भानु को बधाई दें या दें कीर्ति बामा।
या दें बधाई श्यामा को ब्रजधामा॥ ३६८॥

भावार्थ—श्रीराधा के प्राकट्य उत्सव पर वृषभानु बाबा को बधाई दी जाये या कीर्ति मैया को अथवा ब्रजमंडल में अवतरित श्रीराधा को?

प्रथम बधाई की हैं पात्र ब्रजबामा।
जिन्हें ब्रज रस देने आये श्याम श्यामा॥ ३६९॥

भावार्थ—सर्वप्रथम बधाई प्राप्त करने की वास्तविक अधिकारिणी ब्रज गोपियाँ ही हैं जिन्हें ब्रज-रस प्रदान करने के लिये श्यामा श्याम को गोलोक धाम से अवतार लेकर ब्रजमंडल में आना पड़ा। (ये साधन सिद्धा गोपियाँ हैं, जिनमें दण्डक वन के ऋषि भी सम्मिलित हैं।)

अभी तो हुई हैं छे दिन की ही श्यामा।
बाबा मैया पहिचानें अचरज बामा॥ ३७०॥

भावार्थ—वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा अभी केवल छै दिवस की ही हैं किंतु वे अभी से अपने बाबा वृषभानु को एवं मैया कीर्ति को पहचानने लगी हैं। यह कितना आश्चर्य है!

काम, क्रोध, लोभ आदि, शत्रु छे श्यामा।
छठी को छहों को बना दे निष्कामा॥ ३७१॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मेरे मन में काम, क्रोध आदि छै शत्रुओं का निवास है। अपनी छठी के दिन इन छहों को नष्ट कर मुझे निष्काम बना दो।

एक कल्प में आवें भगवती श्यामा।
श्याम भगवान आवें साथ ब्रज बामा॥ ३७२॥

भावार्थ—श्री राधा एक कल्प में एक बार ही अवतरित होती हैं, तभी गोलोक-बिहारी श्रीकृष्ण भी ब्रजगोपियों के साथ अवतार लेते हैं।

चार भुजा धरि आये मधुपुरि धामा।
द्विभुज शिशु रूप गये गोकुल ग्रामा॥ ३७३॥

भावार्थ—श्री कृष्ण जब मथुरा के कारागार में वसुदेव देवकी के समक्ष प्रकट हुये तो चार भुजा से प्रकट हुये। किन्तु जब गोकुल नंदभवन में गये तो दो भुजा धारण कर शिशु रूप में गये।

ज्ञानियों ने कहा ब्रह्म 'अलख अनामा'।
मैंने कहा 'आ लख ब्रह्म ब्रज धामा'॥ ३७४॥

भावार्थ—ज्ञानी ब्रह्म को नाम रूप से रहित कहता है। मैं कहता हूँ -आओ ब्रजधाम में मैं तुम्हें नाम रूप से युक्त ब्रह्म

का दर्शन करा दूँ।

फल फला देवकी ने मधुपुरि धामा।
पाला यशुदा ने रस चूसा ब्रज बामा॥ ३७५॥

भावार्थ—मधुपुरी में देवकी ने कृष्ण रूप फल को फलित किया। यशोदा ने गोकुल में उसका पालन किया एवं ब्रज गोपियों ने उस कृष्ण रूप फल का आस्वादन किया।

देवकी ने जाया सुत जानें ब्रजबामा।
किन्तु श्याम देह तो है चिदानन्द धामा॥ ३७६॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ समझती हैं कि देवकी ने पुत्र को जन्म दिया किन्तु सत्य तो यह है कि श्यामसुन्दर अवतार लेकर प्रकट होते हैं, माँ के गर्भ से जन्म नहीं लेते। श्रीकृष्ण का शरीर उनकी भाँति ही चिदानंदमय है, अतः प्राकृत शरीर की भाँति माँ के गर्भ से उनका जन्म नहीं होता।

श्याम का शरीर तो है चिदानन्द धामा।
जिसकी जैसी भावना हो वैसा दीखे बामा॥ ३७७॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर का शरीर चिदानंदमय है।

उस चिदानंदमय शरीर में यह विशेषता होती है कि जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसा ही दीखता है।

अवतार लै के आया आपु ब्रजधामा।
गोपी ग्वाल संग लाया सब पूर्णकामा॥ ३७८॥

भावार्थ—पूर्णकाम श्रीकृष्ण जब स्वयं अवतार लेकर ब्रजधाम में आये तब अपने साथ अपने परिकर- सखा एवं गोपियों को भी लाये।

हलधर दक्षिण गिरिधर बामा।
स्वयं भगवान दोनों आये ब्रज धामा॥ ३७९॥

भावार्थ—बलराम दाहिने रहते हैं एंव श्रीकृष्ण उनकी बायीं ओर। ये दोनों स्वयं भगवान् हैं, जो ब्रजधाम में अवतार लेकर आये।

हलधर गौर तनु श्याम सुखधामा।
दोनों अवतारी आये कह ब्रज बामा॥ ३८०॥

भावार्थ—बलराम गौर वर्ण हैं एवं सुख की खान श्रीकृष्ण श्याम वर्ण हैं। दोनों ही अवतारी हैं।

कृष्ण बलराम एक ब्रह्म सुखधामा।
लीला हित रूप दो हैं अरु दो हैं नामा॥ ३८१॥

भावार्थ—सुखधाम ब्रह्मस्वरूप कृष्ण बलराम एक ही हैं। केवल लीला के हेतु ही दो नाम रूप धारण किये हैं।

बार बार आवें राम श्याम ब्रज धामा।
जुग जुग जिये जोरी कहें ब्रजबामा॥ ३८२॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें कामना करती हैं-राम श्याम अवतार लेकर बार-बार ब्रजमंडल में पधारें। यह जोड़ी युग युग जीवित

रहे।

श्याम सत्यसंकल्प अरु सत्यकामा।
याते जो सोचा हुआ कह ब्रज बामा॥ ३८३॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण सत्य-संकल्प एवं सत्यकाम हैं। अत: वे जो कुछ भी सोचते हैं, वही तत्काल हो जाता है।

श्याम सर्व शक्ति युक्त ज्ञान गुण धामा।
याते जब जो चाहें करें कह बामा॥ ३८४॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण समस्त शक्तियों से युक्त,ज्ञान एवं गुणों के एकमात्र भंडार हैं। अतएव वे सर्वतन्त्र स्वतंत्र ईश्वर जब जो चाहें करें।

श्याम की स्वरूप शक्ति सर्वगुण धामा।
और शक्ति दासी बनि सेवें आठु यामा॥ ३८५॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण अनन्त शक्तिमान हैं। उनकी योगमाया शक्ति-जिसे स्वरूप शक्ति भी कहते हैं-अनन्त ज्ञान एवं गुणों की खान है। इस पराशक्ति की सेवा श्रीकृष्ण की अन्य शक्तियाँ करती हैं। अन्य शक्तियाँ निरन्तर योगमाया की दासी बनी रहती हैं।

युग युग खोजा ब्रह्मादि ज्ञानधामा।
पाया नहिं अन्त याही ते अनन्त नामा॥ ३८६॥

भावार्थ—ब्रह्मा ने अपने उत्पत्ति स्थान को युगों तक

खोजकर जानने की चेष्टा की किंतु अपने प्रयत्न में वे सफल नहीं हो सके। ब्रह्मा जब श्रीकृष्ण का अन्त नहीं प्राप्त कर सके, तब भला और कौन अपने प्रयत्न से श्रीकृष्ण की खोज कर सकता है। श्रीकृष्ण का एक नाम अनन्त इसी कारण है।

तू है अनन्त शक्तिमान सुखधामा।
अन्त हो तो नाम ना अनन्त श्याम श्यामा॥ ३८७॥

भावार्थ—हे सुखधाम कृष्ण! तुम अनन्त शक्तिमान हो। यदि तुम्हारा अन्त होता तो फिर तुम्हारा अनन्त नाम क्यों होता?

श्याम लीला का मर्म जाने एक श्यामा।
ब्रह्मा को भी मोह हुआ येहि ब्रज धामा॥ ३८८॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण का लीला-रहस्य एकमात्र श्रीराधा ही जानती हैं। औरों की तो बात ही क्या है, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को भी इस ब्रजधाम में श्रीकृष्ण की लीला देखकर मोह हो गया था।

वेद कहें ब्रह्म को है रूप न नामा।
सोइ नन्दपूत नर-रूप नंद गामा॥ ३८९॥

भावार्थ—वेद ब्रह्म को नाम रूप से रहित कहते हैं। वही ब्रह्म नंदगाँव में नर रूप में नंद-पुत्र बना।

वेद कहें ब्रह्म चले किन्तु बिनु पामा।
सोइ ब्रह्म निज पद चले नंद धामा॥ ३९०॥

भावार्थ—वेद कहते हैं—ब्रह्म बिना पैर के चलता है, वही ब्रह्म नंद महल में अपने पैरों से चलता है।

जाके पग प्रेम सुधा बहे आठु यामा।
मैया पय हित सोई पटकत पामा॥ ३९१॥

भावार्थ—जिसके चरणों से निरन्तर प्रेमामृत प्रवाहित होता है वह पूर्ण ब्रह्म कृष्ण माँ यशोदा का दुग्धपान करने के लिये हठपूर्वक पृथ्वी पर पैर पटक रहा है।

हरि हर सिर धर जाकी रज पामा।
पितु पादुका सिर धर चल धामा॥ ३९२॥

भावार्थ—जिस ब्रह्म की चरण धूलि को ब्रह्मा एवं विष्णु भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं, वही पूर्णतम पुरुषोत्तम कृष्ण अपने पिता नंद के चरणों की पादुकाओं को अपने सिर पर धारण कर पिता के पास पहुँचाते हैं।

मणि खम्भ प्रतिबिम्ब लखि सुखधामा।
कह अरी मैया लखु चोर सरनामा॥ ३९३॥

भावार्थ—एक दिन बालकृष्ण ने अपने घर के मणिखंभ में अपना प्रतिबिम्ब देखा। उस समय माखन चोर चोरी से माखन खा रहे थे। अतः प्रतिबिम्ब को अन्य बालक समझकर

माँ से बोले–अरी मैया! तुम्हारे घर में कोई चोर आ गया है।

हरि हर माँगें जाकी शरणाइ बामा।
यशुमति गोद हित रोवें नंदधामा॥ ३९४॥

भावार्थ—विष्णु एवं शिव जिसकी शरण की याचना करते हैं वह पूर्ण ब्रह्म ब्रज में अवतरित होकर माँ यशोदा की गोद में जाने के लिये रो रहा है।

भावै न नवनि नव लख धेनु धामा।
खाय चोरि नवनीत घर घर बामा॥ ३९५॥

भावार्थ—कृष्ण के अपने घर में नौ लाख गायें हैं। किन्तु फिर भी ब्रजगोपियों के घरों से चुरा चुरा कर माखन खाते हैं।

सब जग को जो देवे मुक्ति अभिरामा।
ऊखल बँधे सो माँगे, मुक्ति ब्रजबामा॥ ३९६॥

भावार्थ—जो सम्पूर्ण विश्व को मुक्ति प्रदान करने में समर्थ है, वह ब्रह्म श्रीकृष्ण गोपी यशोदा द्वारा ऊखल में बाँध दिया गया है और रो रोकर ब्रजांगनाओं से बंधन मुक्त करने की प्रार्थना कर रहा है।

सनक समाधि न जायें सुखधामा।
सोइ पंक विहरत यशुमति धामा॥ ३९७॥

भावार्थ—जो सुखधाम श्यामसुन्दर सनकादिक की समाधि में भी प्रवेश नहीं करते, वे ही यशोदा के भवन में

कीचड़ में क्रीड़ा करते हैं।

पंक लपेटे लखि यशुमति भामा।
श्याम को सुअर कहा हँसे सुखधामा॥ ३९८॥

भावार्थ—एक दिन माता यशोदा ने अपने लाला को स्नान आदि कराकर शृंगार धारण करवाया। कृष्ण नंदभवन से बाहर जाकर पुनः धूल धूसरित होकर माँ के सम्मुख आ गये। उस रूप में अपने पुत्र को देखकर माँ को क्रोध आ गया। यशोदा बोलीं, तू सुअर है। अपने पूर्व शूकरावतार का स्मरण कर कृष्ण हँस पड़े।

श्रुति स्मृति सुनि नहिं बोलें सुखधामा।
सोइ धेनु बछरन बोलें ब्रजधामा॥ ३९९॥

भावार्थ—जो सुखधाम कृष्ण वेद-वाक्यों द्वारा की गई स्तुति सुनकर उत्तर में मौन ही रहते हैं, वे ही ब्रजमंडल में अवतार लेकर गायों के बछड़ों के साथ बातचीत करते हैं।

ऋषि करें यज्ञ न जायें रस धामा।
गारी सुनन जायें घर घर बामा॥ ४००॥

भावार्थ—जो रसधाम श्रीकृष्ण ऋषियों के यज्ञ में आह्वान किये जाने पर भी नहीं पधारते, वे ही ब्रजगोपियों की गालियाँ खाने के लिये हठपूर्वक उनके घर जाते हैं।

मैया सों कह बाल कृष्ण नन्दधामा।
मेरो ब्याहु करि ला दे लम्बी चौड़ी बामा॥ ४०१॥

भावार्थ—नंदभवन में बालकृष्ण अपनी मैया यशोदा से कहते हैं-मैया! मेरा विवाह किसी लम्बी चौड़ी गोपी से कर उसे अपने घर में ले आ।

तव करतूत कारी जानें ब्रज धामा।
तो सों ब्याहु कोउ नहिं करे कह बामा॥ ४०२॥

भावार्थ—एक गोपी बालकृष्ण की उपर्युक्त बात का उत्तर देती हुई कहती है, लाला! तुम्हारी चोरी आदि की बुरी आदतों को सम्पूर्ण ब्रजमंडल जानता है। फिर तुम्हारे साथ कोई भी अपनी कन्या का विवाह कैसे करेगा?

श्याम पूछें श्यामा जू सों कौन तेरो गामा।
कौन की है बेटी अरु कहा तेरो नामा॥ ४०३॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर श्रीराधा से प्रश्न करते हैं, तेरा कौन सा गाँव है, तू किसकी बेटी है, तेरा नाम क्या है?

लाला सुन मेरो गाम बरसानो धामा।
वृषभानु बाबा मेरो मेरो नाम श्यामा॥ ४०४॥

भावार्थ—वृषभानुनन्दिनी कृष्ण के प्रश्न का उत्तर देती हैं—लाला! मेरा गाँव बरसाना है। वृषभानु मेरे पिता हैं एवं मेरा नाम राधा है।

है, वह ग्वाल बालों का घोड़ा बनकर ब्रजभूमि में भाग रहा है।

गिरि को उठाया पाया गिरिधर नामा।
ग्वालों ने लगाया लठिया आठु यामा॥ ४१३॥

भावार्थ—जब श्यामसुन्दर ने गोवर्धन पर्वत को अपने बाम हस्त की कनिष्ठिका पर धारण किया, उस समय ग्वाल बालों ने भी रात-दिन पर्वत के नीचे अपनी लाठियाँ लगा रखी थीं।

गिरि को उठाया जब श्याम सुखधामा।
तनु काँपा गिरिं काँपा आगे लखि श्यामा॥ ४१४॥

भावार्थ—जब श्यामसुन्दर ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अँगुली पर धारण किया, उस समय अपने सम्मुख खड़ी श्रीराधिका पर दृष्टि पड़ जाने के कारण श्रीकृष्ण का शरीर काँप गया। शरीर काँपने से पर्वत भी काँप गया।

लख्यों एक अचरज कुञ्ज ब्रज धामा।
पइयाँ परे पूर्ण ब्रह्म मान किये श्यामा॥ ४१५॥

भावार्थ—ब्रज के किसी सघन कुंज में एक आश्चर्यमय दृश्य का मैंने अपने इन्हीं नेत्रों से अवलोकन किया। वह कैसा था? ह्लादिनी के सारभूत तत्व प्रेम की साकार प्रतिमा वृषभानुनंदिनी मान की मुद्रा में प्रियतम को पीठ दिये विराजमान थीं एवं सर्ववंदनीय परिपूर्णतम पुरुषोत्तम आनन्दकंद नंदनंदन

उनके चरणों में अपना मस्तक रखकर किसी भी प्रकार से अपनी आराध्या को प्रसन्न करने की चेष्टा में रत थे।

एक अचम्भो बड़ो लख्यो ब्रज धामा।
सर्वव्यापी ब्रह्म खोजे कुञ्ज कुञ्ज श्यामा॥ ४१६॥

भावार्थ—ब्रजरस में ओतप्रोत रसिक पुनः अपने अनुभव को प्रकट करते हैं-यह कृष्ण की क्रीड़ा भूमि ब्रज भूमि धन्य है। यहाँ पर सर्वव्यापक भगवान् अपनी भगवत्ता को भूलकर प्रति कुंज कुंज में प्रेममयी श्यामा का अन्वेषण कर रहा है।

लख्यों एक कौतुक वृन्दावन धामा।
ब्रह्म बनो याचक दाता बनीं श्यामा॥ ४१७॥

भावार्थ—ब्रज के मध्य श्री वृन्दावन धाम में मैंने एक अत्यन्त कौतूहलपूर्ण दृश्य देखा। पूर्णतम पुरुषोत्तम श्री कृष्ण वृन्दावनेश्वरी के द्वार पर याचक बनकर खड़े थे एवं किशोरी श्रीराधा दाता बनकर अपने अक्षय प्रेम भण्डार में से प्रियतम को प्रेमभिक्षा प्रदान कर रहीं थीं।

श्याम हैं कृपालु मानें अस ब्रजबामा।
श्याम कृपालु पै भी कृपा करें श्यामा॥ ४१८॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें श्यामसुन्दर को कृपा का साकार विग्रह मानती हैं परन्तु उन कृपासिंधु श्यामसुन्दर पर भी वृषभानु -नन्दिनी श्रीराधा निरन्तर कृपा की वर्षा करती रहती हैं।

खेल में जो हारो करो ब्याहु मोते श्यामा।
श्याम कह, मैं हारूँ तो करूँ ब्याह धामा॥ ४०५॥

भावार्थ—चतुर-शिरोमणि श्रीकृष्ण ने राधा से कहा-यदि तुम मेरे साथ खेल में हार जाती हो तो मेरे साथ विवाह करना होगा। यदि मैं हारता हूँ तो मैं तुम्हारे साथ विवाह करूँगा।

नव लक्ष धेनु जेहि नन्दसुत धामा।
दही की चोरी करें घर घर बामा॥ ४०६॥

भावार्थ—जिस नंद-पुत्र के घर में नौ लाख गायें हैं, वह ब्रजगोपियों के घर घर जाकर माखन की चोरी करता है।

कहाँ लौं कहौं हौं मैया कह ब्रज बामा।
नाकों चना चबवाये लाल जा जा धामा॥ ४०७॥

भावार्थ—ब्रजगोपी यशोदा जी से कहती है-हे यशोदे! तुम्हारे लाला के ऊधमों का कहाँ तक वर्णन करूँ? इसने घर-घर जाकर अपनी करतूतों से ब्रज गोपियों की नाक में दम कर दिया है।

बहुत लड़ाया लाड़ यशुमति भामा।
याही ते लँगर करें लँगरइ धामा॥ ४०८॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ कहती हैं-यशोदा ने अपने पुत्र को लाड़ करके बिगाड़ दिया है। इसीलिये ऊधमी कृष्ण सारे ब्रजमंडल में ऊधम करता है।

जेहि वश हरि हर नाचे वसु यामा।
सोइ टुक छाछ पै नाचे ब्रजधामा॥ ४०९॥

भावार्थ—महाविष्णु एवं शिव भी रात-दिन जिसकी आज्ञानुसार ही समस्त कार्यभार सँभालते हैं, वही परिपूर्णतम पुरुषोत्तम आत्माराम पूर्णकाम ब्रह्म प्रेम के वशीभूत हो ब्रजभूमि में ब्रजांगनाओं द्वारा दिये गये किंचित् छाछ के लोभ से उनके संकेत पर नृत्य कर रहा है।

भूख प्यास लगे नहिं ब्रह्म पूर्णकामा।
जूठन खायो ग्वाल बाल ब्रजधामा॥ ४१०॥

भावार्थ—जो ब्रह्म पूर्णकाम है, जिसे कभी भूख प्यास नहीं लगती, उसने ब्रज मंडल में अवतार लेकर ग्वाल-बालों की जूठन अत्यन्त रुचिपूर्वक खायी।

धन्य धनसुख, मनसुख, श्रीदामा।
कौर मुख छोरि खायें श्याम ब्रज धामा॥ ४११॥

भावार्थ—कृष्ण के सखा धनसुख, मनसुख एवं श्रीदामा धन्य हैं जिनके मुख से जूठे कौर छीनकर श्यामसुन्दर ने स्वयं अपने मुख में डाले।

जाके भय भयभीत महाकाल बामा।
सोई ग्वाल घोड़ा बनि भाजै ब्रजधामा॥ ४१२॥

भावार्थ—जिसके भय से महाकाल भी भयभीत होता

ह्लादिनी का सारभूत तत्व प्रेम नामा।
प्रेमहूँ का सार तत्व महाभाव श्यामा॥४१९॥

भावार्थ—प्रेम तत्व ह्लादिनी शक्ति का सार है। उस दिव्य-प्रेम का भी सार श्रीराधा का महाभाव है।

श्याम प्रेम महाभाव मादन हैं श्यामा।
मादन न पायो कभु श्याम सुखधामा॥४२०॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर केवल महाभाव प्रेम का ही अनुभव करते हैं। मादन भाव का रस राधिका ही जानती हैं। सुखस्वरूप नंदनंदन ने कभी मादन-रस का अनुभव नहीं किया।

धुआँ भी निकले यदि विरहाग श्यामा।
सारा जग भस्म होवे कहें ब्रज बामा॥४२१॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें श्रीराधा के गम्भीर प्रेम-सिंधु के महत्व को प्रकाशित करती हुई कहती हैं-श्रीकृष्ण के वियोग में जो अग्नि श्रीराधा के हृदय स्थल में प्रज्ज्वलित होती है, उसका किंचित् धूम्र भी यदि प्रकट हो जावे तो सम्पूर्ण विश्व उस ताप से भस्म हो जावे।

मादनाख्य प्रेमवश श्याम सुखधामा।
याते श्यामा सेवा करें श्याम आठु यामा॥४२२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर मादन प्रेम के सदा ही आधीन रहते हैं। इसीलिये श्यामसुन्दर सदा ही श्रीराधिका की सेवा किया करते

हैं।

निकले सवारी जब सिंहासन धामा।
करें अगवानी श्याम बोलें 'जय श्यामा'॥ ४२३॥

भावार्थ—सिंहासनासीन श्रीराधा की जब ब्रजधाम में कभी सवारी निकलती है तब प्रेमी प्रियतम कृष्ण श्रीराधा की जय जयकार करते हुए उनकी अगवानी करते हैं।

श्यामा जू को परखत श्याम संग बामा।
श्यामा लखि बोले 'जय हो स्वागत श्यामा'॥ ४२४॥

भावार्थ—श्रीराधिका की अन्तरंगा सखियों सहित दर्शनाभिलाषी श्यामसुन्दर प्रिया की प्रतीक्षा में पल पल कल्प के समान व्यतीत कर रहे थे। अचानक श्रीराधा नेत्रों के समक्ष दीख पड़ीं। प्रेम-धनी प्रियतम के प्राणों में प्राण आ गये। अत्यन्त आतुरता से जय जयकार करते हुए स्वामिनी का स्वागत करने लगे।

आगे चलैं अलि सँग कुंजगली धामा।
पाछे चलैं लाल चूमें पदचिह्न श्यामा॥ ४२५॥

भावार्थ—रसिक प्रियतम सखियों सहित अग्रगामिनी राधा के कुंज गलियों में विचरण करते हुए चरणों के चिह्नों का चुम्बन करते हुए सदैव उनके पीछे-पीछे चलने में ही अपने सौभाग्य की सराहना करते हैं।

छिपाये हुए श्रीराधा की सखियों में ही सम्मिलित हुए नंदनंदन अपनी मनभायी सेवा करते हैं।

श्यामा बैठीं कुंज महँ संग अष्ट बामा।
श्याम दूर ही ते खड़े पूछें 'आऊँ श्यामा ?'॥ ४३२ ॥

भावार्थ—अष्ट महासखियों सहित श्रीराधा कुंज-भवन में आसीन थीं। दूर खड़े प्रियतम श्यामसुन्दर उनका दर्शन कर निकट आने की आज्ञा माँग रहे थे।

पूछो कस प्राण प्यारे आवो कह बामा।
पल पल परखति प्राण प्यारी श्यामा॥ ४३३ ॥

भावार्थ—सखियाँ श्यामसुन्दर के भयमिश्रित निवेदन को सुनकर कहने लगीं-हे प्राण प्रियतम! तुम तो हमारी प्रिय सखी राधा के प्राण ही हो। हमारी सखी, तुम्हारी प्राणप्रिया राधा तो प्रतिक्षण तुम्हारे आगमन की ही प्रतीक्षा में रत रहती हैं। श्रीराधा के समीप आने के लिये तुम्हें आज्ञा लेने की क्या आवश्यकता है?

उठि चलि कंठ लगायो पिय श्यामा।
'जय हो जय हो' कहि कहि बलि बलि बामा॥ ४३४ ॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की कातर वाणी श्रीराधा के निकट आने की याचना से युक्त थी-जिसे सुनकर श्रीराधा स्वयं को नहीं सँभाल सकीं। वे अत्यन्त कातर होकर स्वयं ही उठकर

प्रियतम के निकट पहुँचीं एवं प्रेमी प्रियतम को अत्यन्त शीघ्रता पूर्वक हृदय से लगा लिया। इस छवि का दर्शन कर ब्रजांगनायें बलिहार जाने लगीं एवं 'जय हो, जय हो,' उच्चारण करने लगीं।

श्यामा को खवायो बीरी पान एक बामा।
श्याम माँगें मुख बीरी टुक दे दो श्यामा॥ ४३५॥

भावार्थ—एक प्रिय सखी ने श्रीराधा के मुख में पान की बीड़ी अर्पित की। रसिक प्रियतम प्रिया के अधरामृत के लोभ से श्रीराधा से उनकी मुख चर्बित बीड़ी की याचना करने लगे।

श्याम डारें निज कर पान मुख श्यामा।
आधा पान छोरि मुख खायें सुखधामा॥ ४३६॥

भावार्थ—जब कभी रसिक शेखर प्रियतम श्यामसुन्दर अवसर पाकर अपने कोमल करों से प्रिया-मुख में पान अर्पित करते हैं-तब आधे पान को उनके मुख से छीनकर स्वयं खाने में सुख का अनुभव करते हैं।

जहाँ जहाँ चरण कमल परें श्यामा।
तहाँ तहाँ शीश धरें सुखधामा॥ ४३७॥

भावार्थ—श्रीराधा मार्ग में विचरण करती हुई जहाँ जहाँ अपने चरण-कमलों को स्थापित करती हैं, वहीं वहीं उन

महल के भीतर सेवा करें बामा।
बाहर बुहारी देवें श्याम दास श्यामा॥ ४२६॥

भावार्थ—श्रीराधा के रंगमहल में सहस्त्रों सखियाँ उनकी रुचि के अनुरूप सेवा में रत रहती हैं एवं प्रिया राधा के क्रीत-दास बने प्रेम विगलित प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीराधा के महल के बाहरी प्रांगण में ही सोहनी- सेवा करते हुए स्वयं को कृतकृत्य समझते हैं।

फूल तोड़ें श्याम माला गुहे एक बामा।
ललिता जू पहिरावें सेवाकुंज श्यामा॥ ४२७॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर निज कर कमलों से अत्यन्त कोमल कोमल रंगभरे कुसुम चुनचुनकर एक सखी को प्रदान करते जाते हैं। चतुरा सखी माल्य ग्रन्थन करने में लगी है एवं सेवाकुंज स्थल में विराजमान श्री राधा के कमनीय कम्बु-कंठ में उनकी परम प्रिय ललिता उस अमूल्य माला को धारण कराती हैं।

रास करि आईं श्यामा संग ब्रज बामा।
विजन डुलावैं श्याम पोछें स्वेद श्यामा॥ ४२८॥

भावार्थ—कभी सखियों सहित भानुनंदिनी रास-नृत्य करते हुए श्रमित हो गईं। श्यामसुन्दर ने सुकुमारी राधा की इस अवस्था को लक्ष्य किया। वे श्रीराधा के मृदु अंगों के स्वेद को निज कोमल कर कमलों से पोंछ कर एवं व्यजन कर उन्हें सुख प्रदान करने लगे।

श्यामा जू को करें श्रृंगार सुखधामा।
जहाँ नाहिं आवे बतलावें ब्रज बामा॥ ४२९॥

भावार्थ—रसिक रिझवार प्रियतम अत्यन्त रसमग्न मन से प्रियतमा राधा का नख से शिख तक श्रृंगार करने बैठे। श्रीराधा की अत्यन्त निकट की सखियाँ श्यामसुन्दर की सहायता कर रहीं हैं। प्रेममग्न ब्रजेन्द्रनंदन से जहाँ भूल हो जाती है, वहाँ चतुर सखियाँ उन्हें श्रृंगार विधि बताती जाती हैं।

ललिता चरण चापैं पौढ़ीं कुंज श्यामा।
लाल ललचावें कहें धन्य धन्य बामा॥ ४३०॥

भावार्थ—किसी दिवस किसी रमणीय कुंज में सुखद शैया पर रसमूर्ति राधा शयन कर रही थीं। परम प्रिय ललिता प्राण प्रिय सखी के मृदुल चरणों का धीरे-धीरे संवाहन कर रही थीं। इतने में ही रस लोलुप भ्रमर की भाँति प्रिया चरण-कमलों के अनुरागी नंदलाल भी वहाँ आ गये। ललिता के भाग्य की सराहना करते हुए लालजी प्रिया की चरण-सेवा के लिये लालायित हो उठे।

सखी रूप धरि श्याम जायें ढिग श्यामा।
महल टहल करें संग ब्रज बामा॥ ४३१॥

भावार्थ—श्रीराधा की सेवा-वासना हृदय में धारण किये हुए प्रेमियों में अग्रगण्य श्यामसुन्दर सखी-वेष धारण कर श्रीराधा के निज-महल में प्रवेश पा जाते हैं। निज-स्वरूप को

चरणों की महिमा का ज्ञान रखने वाले श्रीकृष्ण अपने त्रिभुवन-वन्दनीय मस्तक को भूमि पर रखकर सम्मान एवं श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

श्यामा बैठीं सिंहासन वृन्दावन धामा।
आरती उतारें श्याम कहें 'जय श्यामा'॥ ४३८ ॥

भावार्थ—श्री वृन्दावन-धाम में सिंहासनासीन श्रीराधिका की जय जयकार करते हुए श्यामसुन्दर उनकी आरती उतार रहे हैं।

रास रस चहें जब श्याम संग बामा।
मुकुट धरें पग कहें चलु श्यामा॥ ४३९ ॥

भावार्थ—जब श्रीकृष्ण ब्रजांगनाओं सहित रास-रस की अभिलाषा करते हैं तब वे रासेश्वरी श्रीराधा के चरणों में

अपना मुकुट अर्पित कर उनसे रास मंडल में पधारने की नम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं।

सिंहासन बैठीं श्यामा बरसानो धामा।
चँवर ढुरावैं श्याम घूरे जाएँ श्यामा॥ ४४०॥

भावार्थ—बरसाने धाम में श्रीराधा निज-महल में सिंहासन पर विराजमान हैं। श्यामसुन्दर चँवर ढुरा रहे हैं। अपलक दृष्टि से श्रीराधा-रूप-रस का पान भी कर रहे हैं।

गहवर वन जायें श्याम सुखधामा।
डगर बुहारें तहाँ- गावें गुन श्यामा॥ ४४१॥

भावार्थ—श्रीराधा सखियों सहित गह्वर वन वीथियों में विचरण करती हैं। अतः सुखनिधान श्यामसुन्दर वहाँ जाकर मार्ग को बुहारी लगाकर स्वच्छ रखते हैं तथा श्रीराधा के दिव्य गुणों का सुमधुर स्वर से गायन भी करते रहते हैं।

श्यामा जू को सुख देयँ श्याम बनि श्यामा।
ललिता जू पोल खोलैं भाजैं तजि धामा॥ ४४२॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण श्याम-सखी का रूप धारण कर श्रीराधा के निकट जा उनकी सेवा कर उन्हें सुख प्रदान करते हैं। जब ललिता सखी इस रहस्य का उद्घाटन श्रीराधा के समक्ष करती हैं, तब लज्जित होकर श्यामसुन्दर अपने भवन को भाग जाते हैं।

श्यामा नाम महिमा जानें ब्रज बामा।
मूर्छित होवें श्याम सुनि नाम श्यामा॥ ४४३॥

भावार्थ—श्रीराधा नाम का क्या माहात्म्य है, इसे तो ब्रजगोपियाँ ही जानती हैं। जिस राधा नाम को श्रवण कर गोविंद आनन्द-मूर्च्छा को प्राप्त हो जाते हैं उस सर्व सुखदायक राधा नाम की महिमा कैसे वर्णन की जा सकती है?

ज्ञानी ढूँढ़े ऋचा ऋचा, ब्रह्म सुखधामा।
ब्रह्म ढूँढ़े कुंज कुंज, मानवती श्यामा॥ ४४४॥

भावार्थ—ज्ञानी वेद की ऋचाओं में अपने जिस आराध्य ब्रह्म का अन्वेषण करता है, वही ब्रह्म ब्रज की प्रत्येक कुंज में मानिनी राधा की खोज कर रहा है।

ज्ञानी कहे ब्रह्म बड़ो सोइ सुखधामा।
भक्त कहे सोइ ब्रह्म सेवे ब्रज श्यामा॥ ४४५॥

भावार्थ—ज्ञानी अपने आनन्द स्वरूप ब्रह्म को ही अज्ञान-वश बड़ा समझता है। भक्त अपना अनुभव प्रकट करता है कि आनन्दघन ब्रह्म ब्रज-मण्डल में अपनी सेव्या श्रीराधा का किंकर बना हुआ है।

महाभाव प्रेम पावें श्याम ब्रज बामा।
मादनाख्य प्रेम पावें एक बस श्यामा॥ ४४६॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर एवं ब्रज गोपियाँ महाभाव प्रेम का

आस्वादन करते हैं किंतु मादनाख्य महाभाव नामक प्रेम केवल श्री राधा में ही है। इसलिये श्रीकृष्ण सदा श्री राधा की दासता करते हैं।

ब्रह्म श्याम देह सम आत्मा हैं श्यामा।
देह दास आत्मा को रहे आठु यामा॥ ४४७॥

भावार्थ—ब्रह्म श्रीकृष्ण शरीर हैं। श्रीराधा उस शरीर की आत्मा हैं। संसार में भी देह, देही आत्मा की दासी के समान ही मानी जाती है। अतः प्रेमी श्यामसुन्दर यदि अपनी स्वामिनी श्यामा की दासता करते हैं तो क्या आश्चर्य है।

श्यामा पौढ़ीं सेज पै कुञ्ज ब्रज धामा।
चरण पलोटें श्याम साखी ब्रज बामा॥ ४४८॥

भावार्थ—कभी ब्रज-धाम की किसी कुंज में शैया पर श्रीराधा शयन किये हुए थीं। श्यामसुन्दर उनके चरण दबा रहे थे। ब्रजांगनायें इस सत्य की साक्षी हैं।

श्यामा जब जायें सेवाकुंज संग बामा।
बामा संग श्याम बोलें बलिहार श्यामा॥ ४४९॥

भावार्थ—जब श्रीराधा सखियों को साथ लिये सेवा कुंज पधारती हैं, तब सखियों के साथ साथ श्यामसुन्दर भी 'श्यामा की बलिहारी है', इस प्रकार उच्च स्वर से कहते हुये श्रीराधा का सम्मान करते हैं।

सेवा कुंज बिच बैठीं बामा संग श्यामा।
चँवर ढुरावें श्याम पंखा करें बामा॥ ४५०॥

भावार्थ—सेवा कुंज के मध्य में सखियों सहित भानुदुलारी सुशोभित हो रही थीं। श्यामसुन्दर श्रीराधा के ऊपर चँवर ढुरा रहे थे। सखियाँ व्यजन कर रही थीं।

सदघन चिदघन आनंदधामा।
मुरछित होवें ब्रह्म सुनि नाम श्यामा॥ ४५१॥

भावार्थ—श्री राधा के नाम में ऐसा माधुर्य है कि ब्रह्म श्रीकृष्ण जो स्वयं सदघन चिदघन एवं आनंदघन हैं, श्री राधा के नाम को सुनकर उसके अनंत माधुर्य को सहन न कर सकने के कारण मूर्छित हो जाते हैं।

श्यामा तन में ऐसा चुम्बक बामा।
श्याम खिंचे आयें बुलाये बिनु गामा॥ ४५२॥

भावार्थ—श्री राधा के शरीर में ऐसा अद्‌भुत चुम्बकीय आकर्षण है कि पूर्णतम पुरुषोत्तम कृष्ण भी बिना बुलाये ही हमारी सखी के निकट विवश हुए से खिंचे चले आते हैं।

निकले सुगन्ध तनु रोम रोम श्यामा।
सुरभित होवें सब भाग्यवती बामा॥ ४५३॥

भावार्थ—श्री राधा के दिव्य अंगों से एक अलौकिक सुगंध निरन्तर निःसरित होती रहती है जिससे उनके निकट

रहने वाली भाग्यवती ब्रजांगनायें भी सुवासित हो जाती हैं।

मधुर सुरन जब गावें गीत श्यामा।
पशु पक्षी प्रेमविभोर गिरें गामा॥ ४५४॥

भावार्थ—जब कभी वृषभानुनन्दिनी अपने कोकिल-कण्ठ से मधुर स्वर में गायन करती हैं, उस समय पशु-पक्षी भी प्रेम में मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं।

जानें कला चौंसठ भानुलली धामा।
रसिक बतावें भोरी भारी सूधी श्यामा॥ ४५५॥

भावार्थ—श्री वृषभानुलली राधा सम्पूर्ण चौंसठ कलाओं की अद्वितीय मर्मज्ञा हैं किंतु रसिक जन कहते हैं कि वे अत्यंत ही भोली भाली, सीधी सादी हैं।

गौरी सों सहस्त्र गुना गोरी मम श्यामा।
फिर भी अचम्भो लखु श्यामा कहें धामा॥ ४५६॥

भावार्थ—वस्तुतः श्याममयी अर्थात् श्याम के प्रेम में तल्लीन होने के कारण ही श्री राधा 'श्यामा' कही जाती हैं। किन्तु 'श्यामा' का एक अर्थ काले वर्ण वाली भी होता है। यहाँ इसी अर्थ को लेकर रसिक लेखक विनोद में कहते हैं- श्री राधा अत्यंत गौरवर्णा पार्वती से भी सहस्त्र गुना गोरी हैं किन्तु फिर भी आश्चर्य देखो, संसार उन्हें श्यामा कह कर पुकारता है।

रूप भी लजावे जासों ऐसी मेरी श्यामा।
किन्तु कहें असुरूपिणी ब्रज बामा॥ ४५७॥

भावार्थ—असुरूपिणी शब्द के दो अर्थ हैं। प्रथम- कुरूपा, द्वितीय- प्राणों के समान। यहाँ प्रथम अर्थ को लेकर लेखक रसिकता की भाषा में कहते हैं जिनके रूप-माधुर्य को देखकर साक्षात् रूप भी लज्जित हो जाता है, ऐसी मेरी श्री राधा हैं। किन्तु आश्चर्य देखो, उन्हें ब्रज गोपियाँ असुरूपिणी कहती हैं।

विधि हरि हर मोहे उमा रमा बामा।
औरों की बिसात क्या है त्रिभुवन धामा॥ ४५८॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण के भुवन मोहन रूप को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी मोहित हो गये। उमा, रमा आदि सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमाएँ भी अपने मन को वश में नहीं रख सकीं तब फिर अन्य किसी की क्या गणना है?

निज प्रतिबिम्ब लखि मोहें छविधामा।
छुपि छुपि देखें हँसें स्वामिनि श्यामा॥ ४५९॥

भावार्थ—छबिधाम श्यामसुन्दर जब दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं तब अपने रूप पर स्वयं ही मोहित हो जाते हैं। स्वामिनी राधा छिप कर इस झाँकी का दर्शन कर हँसती हैं।

मदनहुँ मोहे श्याम सोउ मोहें श्यामा।
रोम रोम रस चुए श्यामा अस बामा॥ ४६०॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर कामदेव को भी मोहित करने वाले हैं परन्तु श्यामा तो उनको भी मोहित कर लेती हैं। श्रीराधा के रोम-रोम से विलक्षण रस स्रवित होता रहता है

यूँ तो रोम रोम टपके रस श्यामा।
किन्तु आँख बरबस खींचे कह बामा॥ ४६१॥

भावार्थ—सखियाँ परस्पर चर्चा कर रही हैं-आह्लादिनी की सारभूता श्रीराधा के रोम रोम से ही विलक्षण रस की वर्षा अनवरत रूप से होती रहती है परन्तु नेत्रों का रस तो सर्वोपरि है जो दर्शन करने वाले के मन को बरबस आकर्षित कर लेता है।

प्रेम रसवारी, मतवारी आँखें श्यामा।
जो भी देखती देखती रह बामा॥ ४६२॥

भावार्थ—श्रीराधा की प्रेम-पीयूष-पूर्ण मतवाली आँखों का दर्शन कर ब्रजांगनायें समस्त सुध-बुध भूलकर उन आँखों को ही देखती रहती हैं।

आँखों में जाने कौन घुला रस बामा।
ब्रह्म श्याम हूँ इकटक लखें श्यामा॥ ४६३॥

भावार्थ—सखियाँ परस्पर कहती हैं-न जाने श्रीराधा के

नेत्रों में कौन सा मधुर रस ओतप्रोत है जिसके कारण सर्वतन्त्र स्वतंत्र आत्माराम, पूर्णकाम, अजित परमेश्वर भी अपलक दृष्टि से श्रीराधा के नेत्रों का रसपान करता रहता है।

सुधा भी है हलाहल भी है लखु बामा।
आँखें मधुभरी मधुशाला जनु श्यामा॥ ४६४॥

भावार्थ—श्रीराधा की आँखें मधुभरी मधुशाला के समान हैं इतना ही नहीं, नेत्रों में मधुशाला से बढ़कर विशेष विलक्षणता है। मधुशाला में तो केवल मदिरा ही प्राप्त होती है, किंतु श्रीराधा के नेत्रों में मदिरा के अतिरिक्त अमृत एवं विष भी प्राप्त है। नेत्रों की अरुणिमा मदिरा है। श्वेतिमा अमृत एवं कालिमा विष है। इन नेत्रों का दर्शन कर प्रेमी जन संयोग में अमृत, वियोग में विष एवं बाह्य संसार को विस्मृत कर मदिरा की मत्तता का अनुभव करते हैं।

प्रेम रूप रस तीनों मिलि एक ठामा।
घुलि मिलि अलि बैठे जाय आँख श्यामा॥ ४६५॥

भावार्थ—श्री राधा के नेत्र ऐसे प्रतीत होते हैं मानो प्रेम, रूप एवं रस तीनों एकत्रित होकर, घुलमिल कर श्री राधा के नेत्रों में आकर बैठ गये हैं।

ऐसी रसवारी मतवारी आँखें श्यामा।
लखि श्याम कर- वेणु गिरे कर धामा॥ ४६६॥

भावार्थ—श्रीराधिका के नेत्र ऐसे मदमत्त एवं प्रेम रस से पूर्ण हैं जिनका दर्शन कर मदन मोहन के हाथों की मुरली उनके हाथ से पृथ्वी पर गिर जाती है और उन्हें उसका स्मरण भी नहीं रहता। (वंशी में श्यामसुन्दर के प्राण ही बसते हैं परन्तु भानुनन्दिनी के नेत्रों की मदिरा उन्हें ऐसा मतवाला बना देती है कि वे अपनी प्राणप्यारी मुरली की भी सुधि भूल जाते हैं।)

श्याम कहें नैन तेरे सुख दैन श्यामा।
किन्तु सैन रैन दिन चुभें उर धामा॥ ४६७॥

भावार्थ—प्रियतम श्यामसुन्दर प्रेयसी राधा से अन्तरंग वार्ता कर रहे हैं–श्यामा! तुम्हारे नेत्र अत्यन्त सुख प्रदान करने वाले हैं किंतु उन रसीले नेत्रों के संकेत हृदय में चुभकर एक मीठी कसक उत्पन्न कर देते हैं जिससे मैं रात-दिन व्याकुल बना रहता हूँ।

श्याम कहें सैन जनि मारा करो श्यामा।
तुम भी नैन मटकाओ जनि कह बामा॥ ४६८॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर श्रीराधा के कटाक्षपात से आहत होकर उनसे विनम्र निवेदन करते हैं–हे राधे! तुम्हारे नेत्रों के आघात को सहने में मैं असमर्थ हूँ। अतः मुझ पर कृपा कर नेत्रों के बाणों से प्रहार न किया करो। सखी उत्तर देती हैं–हे

श्याम! तुम भी हम सबको देखकर रात-दिन अपने नेत्रों से वार न किया करो। श्यामसुन्दर अपनी दृष्टि के संकेत से गोपियों को मोहित कर लेते हैं परन्तु श्रीराधा की चितवन के बाण श्रीकृष्ण को भी घायल कर देते हैं।

जब कभु श्याम एकटक लखें श्यामा।
छूटे पसीना तनु काँपे हँसें बामा॥ ४६९॥

भावार्थ—जब कभी भी जगत् को आकर्षित करने वाले कृष्ण अपलक दृष्टि से श्रीराधा का दर्शन करते हैं तब सात्विक भावों के उद्रेक हो जाने से जगन्मोहन के शरीर से स्वेद की धारा प्रवाहित होने लगती है एवं शरीर में कम्प होने लगता है। परिपूर्णतम आत्माराम की इस दयनीय दशा पर ब्रजगोपियों को हँसी आ जाती है।

जब कभु श्याम करें आलिंगन श्यामा।
मूर्छा बचाने को खड़ी रहें बामा॥ ४७०॥

भावार्थ—अवसर प्राप्त होने पर जब श्यामसुन्दर श्रीराधा को अपनी भुजाओं में भरकर वक्ष पर धारण कर लेते हैं तब वे बहुधा मूर्च्छा को प्राप्त होने लगते हैं, उस समय उभय-पक्ष की चतुरा सखियाँ निकट रहकर उन्हें सम्भालती रहती हैं। (कहीं वे देहभान से रहित होकर पृथ्वी पर न गिर पड़ें इस सम्भावना से सखियाँ सावधानीपूर्वक प्रिया-प्रियतम की

प्रेम-मूर्च्छा से रक्षा करती हैं।)

श्यामा कह छुओ जनि श्याम सुखधामा।
दूर ते ही प्यार करो कारी होगी श्यामा॥ ४७१॥

भावार्थ—भोली भाली प्रेम की प्रतिमा नित्य किशोरी अपने प्रेमाधीन प्रियतम से रसमयी भाषा में कहती हैं, हे सुखसागर श्यामसुन्दर! मुझसे प्रेम करना है तो दूर से करो। यदि तुम मेरा अंग-स्पर्श करोगे तो मेरा गौर वर्ण भी तुम्हारे समान ही कृष्ण वर्ण हो जायेगा।

श्याम हैं कसौटी सम स्वर्ण सम श्यामा।
स्वर्ण में कसौटी रंग लगे नाहिं बामा॥ ४७२॥

भावार्थ—हे सखी! श्याम वर्ण के नंदनंदन तो कसौटी (स्वर्ण की जांच करने वाला पाषाण खण्ड) के समान काले हैं एवं गौरांगी राधा स्वर्ण के समान हैं। कसौटी पर कसे जाने पर स्वर्ण की वास्तविकता की परीक्षा तो हो जाती है परन्तु स्वर्ण पर कसौटी का काला रंग कभी अपना प्रभाव नहीं जमा सकता। अर्थात् कृष्ण का काला रंग राधा के गौर अंगों पर अपना प्रभाव त्रिकाल में भी नहीं डाल सकता।

चरण कमल अति कोमल श्यामा।
श्याम भी दबावें धीरे डरि उरधामा॥ ४७३॥

भावार्थ—श्री राधिका के चरण इतने कोमल हैं कि साक्षात् कोमलता को भी लज्जित करने वाले प्रियतम श्यामसुन्दर भी जब कभी उन चरणों को दबाते हैं तो इस संभावना से हृदय में भयभीत होकर कि कहीं मेरे कठोर हाथों से प्रियतमा के चरणों में कष्ट न पहुँचे, अत्यंत धीरे धीरे उन चरणों का संवाहन करते हैं।

श्याम को छकाना चाहो जाइ कहो श्यामा।
छलैं श्याम रूप धरि गोरे ग्वाल नामा॥ ४७४॥

भावार्थ—यदि श्यामसुन्दर को कोई छकाना चाहे तो वृषभानुनंदिनी से प्रार्थना करे। वे गोरे ग्वाल का रूप धारण करके श्यामसुन्दर को छलने में समर्थ हैं।

श्याम को रुलाना चाहो सखी बनो बामा।
रोतो धोतो अइहैं ढिग मान किए श्यामा॥ ४७५॥

भावार्थ—यदि तुम सर्वसमर्थ श्रीकृष्ण को भी असमर्थ की भाँति रुलाना चाहते हो तो किसी ब्रजगोपी की सखी बन जाओ। श्री राधा के मान कर लेने पर श्रीकृष्ण रोते हुये तुम्हारे पास आयेंगे और तुमसे उन्हें मनाने की प्रार्थना करेंगे।

श्यामा में हैं श्याम श्याम में हैं तीन धामा।
सबको प्रणाम हो प्रणाम किये श्यामा॥ ४७६॥

भावार्थ—श्रीराधा में श्यामसुन्दर का वास है। श्रीकृष्ण में तीनों लोक स्थित हैं। अतएव एक श्रीराधा को प्रणाम करने

मात्र से सबको प्रणाम करने का फल प्राप्त हो जाता है।

तू तो है अनन्त अनन्त तव नामा।
शक्तियाँ अनन्त अनन्त तव धामा॥ ४७७॥

भावार्थ— हे राधे! तुम्हारे नाम भी अनन्त हैं। तुम्हारी अनन्त शक्तियाँ हैं एवं तुम्हारे लीलास्थल धाम भी अनन्त हैं।

तेरा नाम रूप गुण लीला जन धामा।
सब है अनन्त अनन्त प्रणामा॥ ४७८॥

भावार्थ—हे राधे! तुम्हारे नाम, रूप, लीलाएँ, गुण, जन एवं धाम सभी अनन्त हैं। सभी के लिये मेरा अनन्तानन्त प्रणाम है।

विधि हरि हर पूज्य महाविष्णु नामा।
महाविष्णु पूज्य श्याम श्याम पूज्य श्यामा॥ ४७९॥

भावार्थ—महाविष्णु ब्रह्मा,विष्णु, शंकर के पूज्य हैं। श्रीकृष्ण उन महाविष्णु के भी पूज्य हैं। ऐसे सर्वपूज्य श्यामसुन्दर की पूजनीया श्री राधा हैं।

माना सर्व पूज्य श्याम उनते पूज्य श्यामा।
किन्तु श्यामा जू ते मिलावें ब्रज बामा॥ ४८०॥

भावार्थ—यद्यपि श्रीकृष्ण सर्वपूज्य हैं एवं उनसे भी पूज्य श्री राधा हैं। किंतु राधा से संयोग कराने वाली ब्रज-गोपियाँ ही हैं। इनकी कृपा के बिना कोई भी श्रीराधा-कृपा कटाक्ष

को प्राप्त नहीं कर सकता।

दासी नहिं बामा सम त्रिभुवन धामा।
स्वामिनि भी नहिं जग जैसी श्यामा॥ ४८१॥

भावार्थ—ब्रजांगनाओं के समान सेवा-कुशल सहचरी-गण त्रैलोक्य में नहीं हैं एवं श्रीराधा के समान कृपामयी स्वामिनी भी विश्व में कोई अन्य नहीं।

श्यामा जू के पदचिह्न देखि ब्रज धामा।
वाको बचाय चलें ब्रज की बामा॥ ४८२॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें कार्य-वश जब मार्ग में अपने चरण-स्थापन करती हैं, उस समय वे ब्रजभूमि में श्रीराधिका के जव, अंकुश, ध्वजा एवं कलश आदि चिह्नों से युक्त चरण-तल के पृथ्वी पर अंकित चिह्नों को सावधानी पूर्वक बचाते हुए चलती हैं।

दासी ते न चाहे कछु स्वामिनि श्यामा।
श्यामा ते न चाहे कछु दासी ब्रज बामा॥ ४८३॥

भावार्थ—स्वामिनी राधा अपनी दासियों से सेवा की अपेक्षा न कर उन्हें अपना प्रेम ही प्रदान करती हैं। राधा-किंकरीगण भी अपनी उदार स्वभाव वाली स्वामिनी से कोई अपेक्षा न रखकर तत्सुख वासना से युक्त सेवा ही चाहती हैं।

श्यामा आईं संग लाईं निज ब्रज बामा।
प्रेम दान हित धन्य धन्य कृपा श्यामा॥ ४८४॥

भावार्थ—श्रीराधा जब गोलोक से इस पृथ्वी पर स्थित ब्रज में अवतरित हुईं तब अपनी नित्य सखियों को भी अपने साथ ही लाईं। इन ब्रज गोपियों की कृपा से ही अधिकारी जन प्रेम को प्राप्त करेंगे। श्रीराधा की इस कृपा के लिये उनकी कितनी सराहना की जाय!

श्यामा सी कृपालु नाहिं त्रिभुवन धामा।
रास किया संग ब्रज बनचरि श्यामा॥ ४८५॥

भावार्थ—त्रिभुवन में श्रीराधा के समान कृपामयी अन्य कोई नहीं, जिन्होंने ब्रज-वन में विचरण करने वाली स्त्रियों के साथ रास विहार किया।

श्यामा जू की कृपा का स्वभाव कह बामा।
प्राण सम मानें ब्रजबामा ब्रजधामा॥ ४८६॥

भावार्थ—श्री राधा तो कृपा की मूर्ति हैं। कृपा करना उनका स्वभाव ही है। श्रीराधा अपनी ब्रज की सखियों एवं ब्रजधाम को प्राणों के समान ही समझती हैं।

ब्रज तजि श्याम गये द्वारवती धामा।
ब्रज वासिन सदा प्यार दियो श्यामा॥ ४८७॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर तो अपनी अनन्य प्रेयसी

ब्रजवासिनी गोपियों एवं ग्वाल बालों तथा नंद यशोदा जैसे माता-पिता का भी परित्याग कर द्वारिका में सुखपूर्वक बस गये परन्तु कीर्तिकुमारी ने उन विरहाकुल ब्रजवासियों को अपना स्नेह प्रदान कर सदा उनके समीप ही वास किया।

श्याम मारि असुरन देवें निज धामा।
श्यामा बिनु हेतु बाँटें प्रेम निष्कामा॥ ४८८॥

भावार्थ—नंदनंदन असुरों का वध कर तब उन्हें अपना धाम प्रदान कर पाते हैं। पूतना, शकटासुर, तृणावर्त, बकासुर, अघासुर आदि को मारकर ही श्रीकृष्ण ने उन्हें अपना धाम प्रदान किया। प्रेममयी राधा तो बिना किसी कारण के ही निष्काम प्रेम बाँटती रहती हैं।

श्याम ने किया था सदा दैत्यनाश कामा।
नये नये रसिक बने हैं कृपा श्यामा॥ ४८९॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर तो सदा से दैत्यों के संहार का ही कार्य करते आये हैं। श्रीराधा की कृपा से ही ब्रजधाम में अवतरित होकर श्यामसुन्दर ने स्वयं रस प्राप्त किया है। अतः रस-दान-दात्री तो श्रीराधा ही हैं।

ब्रह्म तो था सूखा सूखा जब आईं श्यामा।
प्रेम दे के रसिक बनायो ब्रज धामा॥ ४९०॥

भावार्थ—ब्रह्म तो अत्यन्त नीरस था। श्रीराधा ने अवतार

लेकर उस अरसिक ब्रह्म को अपना सरस प्रेम प्रदान कर रसिक बना दिया।

श्यामा जू को दूजो रूप श्याम सुखधामा।
मरम बतायो यह वेदव्यास नामा॥ ४९१॥

भावार्थ—वेदव्यास ने इस रहस्य का उद्घाटन किया कि श्रीकृष्ण श्रीराधा का ही एक अभिन्न रूप हैं।

तू मेरा मैं तेरी कहो जनि श्यामा।
तू ही मैं, मैं ही तू दोनों एक धामा॥ ४९२॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण प्रेयसी श्रीराधा के प्रति कहते हैं-हे राधे! तुम यह मत कहो कि तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ, अपितु तुम ही मैं हूँ और मैं ही तुम हो। हम दोनों परस्पर अभिन्न हैं।

श्याम हैं कपूर सम गंध सम श्यामा।
गंध उड़ि जाय तो कपूर मिटे नामा॥ ४९३॥

भावार्थ—यदि श्यामसुन्दर कपूर हैं तो श्रीराधा उस कपूर की गंध हैं। गंध के उड़ जाने पर कपूर का भी अस्तित्व समाप्त हो जाता है। श्रीराधा शक्ति हैं, कृष्ण उस शक्ति से शक्तिमान हैं। शक्ति के न रहने पर उनकी क्या विशेषता रहेगी?

दुग्ध में सफेदी जैसे वैसे श्याम श्यामा।
श्यामा श्याम प्रतिबिम्ब सब ब्रज बामा॥ ४९४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर दुग्ध हैं। श्रीराधा उस दुग्ध की श्वेतिमा हैं। सम्पूर्ण ब्रज-गोपियाँ इन युगल की प्रतिबिम्ब-स्वरूपा हैं।

निकले अनन्त ते अनन्त आठु यामा।
तो भी अनन्त बचे ऐसे श्याम श्यामा॥ ४९५॥

भावार्थ—यदि अनन्त में से निरन्तर अनन्त निकलता रहे तो भी अनन्त शेष रहेगा। ऐसे अनन्त श्यामा श्याम हैं।

श्यामा बसें बरसानो श्याम नन्दगामा।
नित नव लीला करें वृन्दावन धामा॥ ४९६॥

भावार्थ—श्रीराधा नित्य अपनी क्रीड़ा-भूमि बरसाने में वास करती हैं। श्यामसुन्दर नंदग्राम में निवास करते हैं। प्रिया-प्रियतम का सम्मिलित लीला-क्षेत्र श्रीवृन्दावन धाम है, जहाँ उनकी नित्य नवीन नवीन लीलायें होती रहती हैं।

श्याम ब्रज ठाकुर ठकुरानी श्यामा।
दोनों की है रजधानी वृन्दावन धामा॥ ४९७॥

भावार्थ—ब्रजधाम के ठाकुर (स्वामी) श्री श्यामसुन्दर हैं एवं ठकुरानी (स्वामिनी) श्रीराधा हैं। दोनों की राजधानी वृन्दावन धाम है।

तेरा सुख चाहूँ श्यामा कहें सुखधामा।
मैं भी श्याम तेरा सुख चाहूँ कह श्यामा॥ ४९८॥

भावार्थ—नंदनंदन श्रीकृष्ण श्री भानुनन्दिनी राधा के प्रति अपनी प्रीति प्रकाशित करते हुए कहते हैं–हे राधे! मैं तुम्हारे सुख की ही कामना करता हूँ। प्रेम पुत्तलिका राधा भी प्रियतम के प्रति अपना भाव प्रकट करती हैं, हे गोविंद! मैं सदैव तुम्हारे सुख से ही सुखी हूँ।

दोउ चहें दोउ सेवा श्याम अरु श्यामा।
याही सों लरैं नित दोउ आठु यामा॥ ४९९॥

भावार्थ—श्यामा श्याम में रात दिन प्रेम–कलह होता रहता है। इसका कारण बताते हुए रसिक संत कहते हैं, प्रेम–क्षेत्र में युगल–सरकार परस्पर निरन्तर सेवा–लालसा रखते हैं। श्रीराधा श्यामसुन्दर को सुख पहुँचाने हेतु व्यग्र रहती हैं, श्रीकृष्ण श्रीराधा को अधिक से अधिक सुख प्रदान करना चाहते हैं। इसी होड़ में दोनों में अनबन होती रहती है। जगत् से यह प्रीति सर्वथा भिन्न है।

श्यामा जू के रोम रोम कहें श्याम नामा।
श्याम हूँ के रोम रोम कहें नाम श्यामा॥ ५००॥

भावार्थ—श्रीराधा के रोम रोम से श्याम नाम की ध्वनि एवं श्रीकृष्ण के रोम रोम से राधा नाम की ध्वनि झंकृत होती रहती है।

श्याम आ को श्यामा कहें पुनि पुनि श्यामा।
श्यामा जू को हुआ क्या है रटें निज नामा॥ ५०१॥

भावार्थ—श्रीराधा हृदय से नंदनंदन को अपने निकट ही देखना चाहती हैं, अतः 'श्याम आ' की टेर लगाती हैं परन्तु अपने मन्तव्य को गोपनीय रखने हेतु 'श्याम आ' की संधि करके बार बार 'श्यामा' 'श्यामा' का उच्चारण करती हैं जिसे सुनकर उनके अभिप्राय को न समझकर सखियाँ भ्रमित होकर कहती हैं-आज श्रीराधा अपने ही नाम की रट लगा रही हैं उन्हें हो क्या गया है ?

श्यामा भूलीं देह सुधि रटें श्यामा श्यामा।
श्याम रटें श्याम श्याम देखें ब्रज बामा॥ ५०२॥

भावार्थ—प्रेमोन्मादमयी श्रीराधा को अपनी देह का भान नहीं रहा। वे स्वयं का श्रीकृष्ण से तादात्म्य प्राप्त कर स्वयं को कृष्ण अनुभव करती हुई अपने ही नाम 'श्यामा' 'श्यामा' की रट लगा रही हैं। इसी प्रकार नंदनंदन भी प्रेमावेश में स्वयं को राधा समझकर 'श्याम' 'श्याम' रटने लगे। सखियाँ इस विचित्र झाँकी का दर्शन कर रही हैं।

प्रेम की समाधि देखो कैसी गति बामा।
श्याम पूछैं श्याम कहाँ श्यामा पूछैं श्यामा॥ ५०३॥

भावार्थ—देखो, प्रेम की समाधि की कैसी उल्टी गति है। श्यामसुन्दर तो स्वयं को राधा समझकर कृष्ण के लिये व्याकुल होकर सखियों से प्रश्न करते हैं—श्यामसुन्दर कहाँ

हैं ? इसी प्रकार स्वयं को कृष्ण अनुभव करती राधा सखियों से पूछती हैं–राधा कहाँ हैं ?

श्याम लखि श्यामा प्यास बढ़े आठु यामा।
श्यामहूँ की प्यास बढ़ै देखि छवि श्यामा॥ ५०४॥

भावार्थ—रसनिधि श्यामसुन्दर के रूपासव से छकी हुई श्रीराधा की प्रियतम के दर्शन की उत्कण्ठा बढ़ती ही जाती है। इसी प्रकार श्रीराधा की दिव्य शोभा निरखकर नंदनंदन की दर्शन–लालसा पूर्ण न होकर निरन्तर बढ़ती ही रहती है।

श्याम तनु कारो भाये श्यामा कह बामा।
उत श्याम भाये मन तनु गोरी श्यामा॥ ५०५॥

भावार्थ—श्री राधा गोरे शरीर वाली हैं किन्तु उन्हें काले शरीर वाले श्यामसुन्दर अच्छे लगते हैं, और काले शरीर वाले श्यामसुन्दर को गौरांगी श्री राधा अच्छी लगती हैं।

कारा रंग नाहीं भाये कह सुखधामा।
गोरा रंग मोहूँ नहिं भाये कह श्यामा॥ ५०६॥

भावार्थ—कभी श्रीराधा को प्रसन्न करने हेतु टेढ़ी गति मति धारण करने वाले उनके रसिक प्रियतम ने कहा–मुझे काला रंग अच्छा नहीं लगता। ब्रजरानी श्रीराधा ने उत्तर दिया, मुझे भी गोरा रंग सुन्दर नहीं प्रतीत होता।

श्याम धारैं पीताम्बर देखि रंग श्यामा।
श्याम रंग देखि श्यामा नीलाम्बर बामा॥ ५०७॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण श्रीराधा के चम्पक पुष्प जैसे पीत-वर्ण को देखकर अपने श्री अंगों पर पीताम्बर धारण कर सुख प्राप्त करते हैं। श्रीराधा श्रीकृष्ण के नील वर्ण की समानता करने वाले नीलाम्बर को अपने शरीर पर धारण करती हैं।

तन गौर मन श्याम ऐसी मेरी श्यामा।
तन श्याम मन गौर श्याम सुखधामा॥ ५०८॥

भावार्थ—श्रीराधा का तन मात्र ही गौर है। मन तो श्यामसुन्दर की श्यामता से ही आच्छन्न है। नंदनंदन का केवल देह मात्र श्याम है। मन गौरांगी राधा की दीप्ति से दीपित है।

लोग कहें श्याम कारो गोरो रंग श्यामा।
मेरे मत दोनों तनु चिदानन्द धामा॥ ५०९॥

भावार्थ—रसिक-जन कहते हैं-यशोदानन्दन कृष्ण काले हैं। कीर्ति कुमारी राधा गौरवर्णा हैं। किंतु मेरा मत है कि श्यामा-श्याम दोनों ही चिन्मय वपुधारी हैं।

जेती बार देखो इन छवि श्याम श्यामा।
और और सुन्दर लगे कह बामा॥ ५१०॥

भावार्थ—इन श्यामा श्याम की छवि में ऐसी विलक्षणता है कि जितनी बार भी देखो, अधिकाधिक सुन्दर प्रतीत होती

है। दोनों का सौन्दर्य माधुर्य नित नवायमान है।

नित नव माधुर्य तनु श्याम श्यामा।
तृप्ति नहिं होय चाहे पियो आठु यामा॥ ५११॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम के चिन्मय वपु में नित्य नवीन माधुर्य का वास है। भक्तजन निरन्तर उस माधुर्य का पान करते हुए भी कभी तृप्त नहीं होते।

श्याम तन मन कारो प्यारो लगे बामा।
कारी करतूत सारी प्यारी लगे श्यामा॥ ५१२॥

भावार्थ—काले शरीर व मन वाले श्यामसुन्दर ब्रजगोपियों को प्राणों के समान प्यारे लगते हैं। श्यामसुन्दर की चोरी, जारी आदि करतूतें भोली भाली श्रीराधा को अत्यन्त ही प्रिय लगती है।

श्याम लँगराई करें घर घर बामा।
फिर भी कोटि प्राण वारें बामा संग श्यामा॥ ५१३॥

भावार्थ—यद्यपि श्यामसुन्दर ब्रजांगनाओं के घर जा जाकर लम्पट के समान आचरण करते हैं फिर भी ब्रज-गोपियों सहित श्रीराधा उनपर अपने कोटि-कोटि प्राण न्योछावर करती हैं।

तुम मेरी जीवन हो श्याम कह श्यामा।
सब सों ही कह अस जानें ब्रजबामा॥ ५१४॥

भावार्थ—नंदनंदन श्रीकृष्ण राधा के प्रति कहते हैं-राधे! तुम तो मेरी जीवन ही हो। श्रीराधा अत्यन्त प्रवीण हैं। वे उत्तर देती हैं, हे श्यामसुन्दर! तुम तो सभी ब्रजांगनाओं के प्रति प्रीति करते हो और सभी से इसी प्रकार कहते रहते हो। इस सत्य से सभी गोपियाँ अवगत हैं।

श्याम कहें मेरी तो तुम प्राण प्यारी श्यामा।
श्यामा कहें झूठे तुम कहे ब्रज बामा॥५१५॥

भावार्थ—ब्रजराजकिशोर वृषभानु किशोरी से कहते हैं-हे श्यामा! तुम तो मुझे प्राणों से अधिक प्रिय हो। श्रीराधा प्रत्युत्तर में कहती हैं-तुम बहुत झूठे हो।

सब ते कहत तुम प्राण प्यारी बामा।
प्राण तेरे कितने हैं पूछें प्यारी श्यामा॥५१६॥

भावार्थ—श्री वृषभानुनन्दिनी वाक्पटुतापूर्वक श्री नंदनंदन से आगे कहती हैं-तुम सभी ब्रज बनिताओं से यही कहते हो कि तू मुझे प्राणों से अधिक प्रिय है। आखिर तुम्हारे कितने प्राण हैं?

तुम ते है मेरा अनन्य प्रेम श्यामा।
ललिता ते भी यही कहा सुखधामा॥५१७॥

भावार्थ—कभी प्रियतम कृष्ण ने प्रिया राधा को प्रसन्न करने हेतु एकान्त में कहा-हे राधे मैं तुम्हारा अनन्य प्रेमी हूँ।

श्रीराधा ने अति लाघवता से उत्तर दिया-हे सुख-सागर! तुमने मेरी सखी ललिता से भी यही कहा था।

श्यामा कहें लँगरई छोड़ो सुख धामा।
श्याम कहें काहे छोडूँ, तोहिं भाये श्यामा॥ ५१८॥

भावार्थ—कभी श्रीराधा ने श्यामसुन्दर के नटखटपन से खीझकर कहा-हे सुखसिंधो! अपनी चंचलता छोड़ दो। श्री बाँकेबिहारी ने उत्तर दिया, मेरी जिस क्रिया से तुम्हें सुख मिलता है, उसे मैं क्यों छोड़ दूँ?

श्याम अवगुन खान जानें भल श्यामा।
फिर भी वही प्यारो लागे अचरज बामा॥ ५१९॥

भावार्थ—श्रीराधा भली-भाँति जानती हैं कि श्यामसुन्दर अवगुणों की खान हैं, किन्तु आश्चर्य है फिर भी श्यामसुन्दर ही उन्हें प्रिय लगते हैं।

सजि धजि सेवा कुंज चले श्याम श्यामा।
लखि बलिहार कहीं बार बार बामा॥ ५२०॥

भावार्थ—सम्पूर्ण श्रृंगार-युक्त युगल सरकार श्यामा श्याम जब सेवा-कुंज की ओर चले तब सखियों ने अपने प्रेम-पिपासु नेत्रों से उस झाँकी का दर्शन कर बार-बार 'बलिहार है, बलिहार है,' ऐसा कहा।

श्याम रूप रस पियें पूरा पूरा श्यामा।
श्यामा रूप रस पियें पूरा सुखधामा॥ ५४१॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर के रूप-रस का समग्र रूप से पान तो श्रीराधा ही करती हैं। श्रीराधा के रूपासव का सम्पूर्ण रूप से रसास्वादन श्यामसुन्दर ही करते हैं।

श्यामा तुम निष्ठुर कह सुखधामा।
जो जस होय तस कह कहें श्यामा॥ ५४२॥

भावार्थ—कभी श्यामसुन्दर ने श्रीराधा को अपने अनुकूल देख कहा-हे श्यामा! तुम अत्यन्त निष्ठुर स्वभाव वाली हो। चतुरा राधा ने उत्तर दिया-श्यामसुन्दर! जो स्वयं जैसा होता है, वह दूसरों को भी वैसा ही समझता है।

दोनों कहें दोनों को निठुर श्याम श्यामा।
दोनों की ना मानो कोऊ कहें ब्रज बामा॥ ५४३॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम एक दूसरे को अत्यन्त निष्ठुर कहते हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि ये दोनों ही अत्यन्त कोमल हैं। इनके परस्पर के बाहरी व्यवहार अटपटे हैं। उस पर कोई विश्वास न करना।

दोउ दया की सीमा हैं श्याम श्यामा।
शरण में जाओ माँगो प्रेम निष्कामा॥ ५४४॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम दोनों ही पराकाष्ठा की दया से

भरपूर हैं। उनके शरणागत होकर उनसे निष्काम-प्रेम की भीख माँगो।

✓ **आठों याम नाम जपो श्याम अरु श्यामा।**
साथ रूपध्यान करो कहें ब्रज बामा॥ ५४५॥

भावार्थ—श्यामा श्याम की कृपा प्राप्त करने के लिये निरन्तर उनके नाम का जप करो किन्तु साथ में रूपध्यान भी अवश्य करो।

✓ **श्याम नाम आगे लूँ या आगे नाम श्यामा।**
मेरे मत श्यामा-श्याम बोलो कह बामा॥ ५४६॥

भावार्थ—प्रश्न है कि पहले श्यामा नाम लेना चाहिये अथवा श्याम नाम? मेरा ऐसा मत है कि पहले श्यामा नाम ही लेना उचित है अर्थात् श्यामा-श्याम के रूप में ही युगल नाम उच्चारण करना चाहिये।

✓ **श्यामा कहें श्याम प्राण श्याम कहें श्यामा।**
श्यामा श्याम दोनों प्राण कहें ब्रज बामा॥ ५४७॥

भावार्थ—श्रीराधा के प्राण श्रीकृष्ण में ही बसते हैं। श्रीकृष्ण भी सदैव श्रीराधा को ही अपना प्राण स्वरूप मानते हैं। ब्रजांगनायें युगल-सरकार को अपने प्राण समझती हैं।

✓ **श्यामा कहें श्याम बड़ो श्याम कहें श्यामा।**
श्यामा श्याम दोनों एक कहें ब्रज बामा॥ ५४८॥

श्रीराधा श्रीकृष्ण के रूप-दर्शन के हेतु सदैव तृषातुर ही बनी रहती हैं।

दोउ हैं चकोर दोउ चन्द्र श्याम श्यामा।
कभु दोनों चन्द्र तो चकोरी ब्रज बामा॥ ५३५॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम परस्पर दोनों ही चकोर हैं, दोनों ही चन्द्र हैं। श्री राधा के लिये श्याममुख चन्द्र है, वे चकोरी हैं। श्रीकृष्ण के लिये राधा-मुख चन्द्र है, जिसके हेतु वे चकोर बनकर अपलक दृष्टि से राधा मुख-मंडल को निहारते रहते हैं। कभी-कभी युगल-सरकार दोनों ही चन्द्र के समान प्रतीत होते हैं, तब ब्रजबालायें चकोरी बनकर युगल-मुखचन्द्र-सुधा का पान करती हैं।

श्यामा मुख देखें श्याम श्याम मुख श्यामा।
श्यामा श्याम मुख देखें सब ब्रज बामा॥ ५३६॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर सदैव राधा-मुख-मंडल पर अपनी दृष्टि स्थिर किये रहते हैं। श्रीराधा कृष्णमुख पर नेत्र स्थिर किये रहती हैं। समस्त गोपियाँ इन दोनों के मुख कमल पर अपनी दृष्टि स्थिर रखती हैं।

श्याम लगें प्यारे जब लखें श्याम बामा।
श्यामा प्यारी लगें जब लखें प्यारी श्यामा॥ ५३७॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ जब श्यामसुन्दर के ऊपर अपनी

प्रेमपूर्ण दृष्टि डालती हैं तब श्यामसुन्दर उन्हें अत्यन्त प्रिय प्रतीत होते हैं। जब ये ही ब्रजांगनायें श्रीराधा-मुख-चन्द्र को निहारती हैं तो इन्हें श्रीराधा अपने प्राणों से भी प्रिय जान पड़ती हैं।

दिव्य ब्रज गोपीजन दिव्य ब्रज धामा।
दिव्य सब ग्वाल बाल दिव्य श्याम श्यामा॥ ५३८॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ दिव्य हैं, ब्रजधाम दिव्य है। ग्वाल-बाल दिव्य हैं। श्यामा-श्याम भी दिव्य हैं।

वृन्दावन आईं श्यामा संग ब्रज बामा।
वहाँ देखा श्याम बैठे जपें नाम श्यामा॥ ५३९॥

भावार्थ—एक बार श्रीराधा अपनी सखियों सहित श्री वृन्दावन आईं। वहाँ उन्होंने देखा कि श्यामसुन्दर एकान्त में बैठे हुये उनके (श्री राधा के) नाम का जप कर रहे थे।

श्याम कहँ पलक कलप बिनु श्यामा।
श्यामा का भी हाल यही कहें ब्रजबामा॥ ५४०॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ इस रहस्य से अवगत हैं कि श्यामसुन्दर श्रीराधा के वियोग में एक एक क्षण को कल्प के समान व्यतीत करते हैं तथा वृषभानुनन्दिनी भी इसी प्रकार अपने विरह-काल को असीम दुःखपूर्वक यापन करती हैं।

भावार्थ—श्री राधा कहती हैं, श्यामसुन्दर बड़े हैं, वे स्वामी हैं, मैं उनकी दासी हूँ एवं श्यामसुन्दर कहते हैं, किशोरी जी बड़ी हैं मैं तो उनका सेवक हूँ। किंतु वास्तविकता यह है कि राधा कृष्ण दोनों तत्वत: एक ही हैं। एक ही परात्पर तत्व दो बन गया है। अतएव दोनों में न कोई छोटा है, न बड़ा।

दोनों मेरे नैन दोनों श्याम अरु श्यामा।
बड़ छोट कोउ नहिं कहें ब्रज बामा॥ ५४९॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करती हुई कहती हैं-श्यामा-श्याम हमारे दोनों नेत्रों के समान हैं। अब दोनों नेत्रों में से किसको छोटा और किसको बड़ा कहा जाय। दोनों ही हमें समान रूप से प्रिय हैं। दोनों का ही समान रूप से महत्व है।

श्यामा चित चोरा श्याम श्याम चित श्यामा।
अपना ही चित चोरा जनि हँसो बामा॥ ५५०॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ने अपने दिव्य-गुणों (प्रेम, रूप, रस आदि) से श्रीराधा का मन मोह लिया। इसी प्रकार श्रीराधा ने अपने शील, सौन्दर्यादि से श्रीकृष्ण का चित्त चुरा लिया। अन्तरंगा सखियाँ इस विषय को लेकर हास-परिहास में मग्न थीं। ग्रन्थकार कहते हैं-सखियों! तुम युगल को संकोच में मत डालो। श्यामा श्याम दोनों एक ही हैं, अतएव एक दूसरे का नहीं अपितु अपना ही चित्त चुराया है।

श्यामा श्याम मन प्राण एक जब बामा।
फिर कैसे होता वियोग श्याम श्यामा॥५५१॥

भावार्थ—जब श्यामा श्याम दोनों के मन-प्राण एक ही हैं फिर इनका परस्पर वियोग किस प्रकार होता है?

यद्यपि मन प्राण एक श्याम अरु श्यामा।
योगमाया ते हो वियोग आदि बामा॥५५२॥

भावार्थ—यद्यपि श्यामा-श्याम के मन प्राण एक ही हैं, फिर भी योगमाया द्वारा उन्हें वियोग का अनुभव रसवृद्धि-हेतु कराया जाता है।

तन दो हैं मन एक कह ब्रज बामा।
श्याम हैं चपल कैसे भोरी कैसे श्यामा॥५५३॥

भावार्थ—एक ही तत्व होने के कारण श्यामा श्याम के केवल शरीर ही दो हैं, मन आदि तो दोनों के एक ही हैं। किंतु मन से अभिन्न होते हुये भी युगल के स्वभाव में बड़ा अन्तर है। श्यामसुन्दर तो अतिशय चंचल हैं, एवं श्री राधा अत्यन्त ही भोली-भाली हैं। जब दोनों के मन एक ही हैं, तब दोनों के स्वभाव में इतना विरोधाभास क्यों हैं?

दो विरोधी शक्तियों के स्वामी सुखधामा।
याते दो विरोधी कर्म करें श्याम श्यामा॥५५४॥

भावार्थ—सुख-सिंधु श्यामा-श्याम परस्पर दो विरोधी

शक्तियों के स्वामी हैं इसीलिये वे विरोधी कर्म भी करते हैं।

जन्म दिव्य कर्म दिव्य श्याम अरु श्यामा।
जाने जो मरम जाये गोलोक धामा॥ ५५५॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम के जन्म एवं कर्म दिव्य हैं। जो इस रहस्य को जान लेता है, वह भगवद्धाम गोलोक को जाता है।

श्यामा मन भाये नटखट सुखधामा।
श्याम हूँ को भाये मन भोरी भारी श्यामा॥ ५५६॥

भावार्थ—श्रीराधा को सुख की खान नटखट श्यामसुन्दर अत्यन्त प्रिय लगते हैं। श्यामसुन्दर को भी भोलीभाली राधा प्राणोपम प्रिय प्रतीत होती हैं।

श्याम का मिलन चाहो रटो श्यामा श्यामा।
भाजे भाजे अइहैं सुनि नाम सुखधामा॥ ५५७॥

भावार्थ—यदि कोई जीवात्मा श्रीकृष्ण का मिलन प्राप्त करना चाहती है तो उसे निरंतर श्रीराधा का मधुर नाम अपनी रसना से रटते रहना चाहिये। श्रीकृष्ण श्रीराधा नाम सुनकर तुरन्त ही दौड़े-दौड़े चले आयेंगे।

श्यामा भजे सुख पावें श्याम सुखधामा।
श्याम भजे सुख पावें स्वामिनि श्यामा॥ ५५८॥

भावार्थ—श्रीराधा की आराधना करने वाले बड़भागी भक्तों

पर नंदनंदन श्रीकृष्ण अत्यन्त कृपा करते हैं एवं श्यामसुन्दर की उपासना करने वाले भक्त-जन श्रीराधा-कृपा-कटाक्ष को प्राप्त करते हैं।

श्याम आपु आवें बुलाओ तुम श्यामा।
श्यामा आपु आवें बुलाओ श्याम नामा॥ ५५९॥

भावार्थ—यदि कोई श्यामसुन्दर को पुकारता है तो वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा अपने प्रियतम का नाम सुनकर भागी चली आती हैं। यदि श्रीराधा को बुलाओ तो श्यामसुन्दर प्रिया राधा का नाम सुनकर दौड़े चले आते हैं।

श्यामा तजि श्याम भजे श्याम तजि श्यामा।
नामापराधी दोनों कहें ब्रज बामा॥ ५६०॥

भावार्थ—भक्त को श्यामा श्याम दोनों की ही आराधना करनी चाहिये। यदि श्रीराधा को न भजकर कोई केवल कृष्ण की उपासना करता है अथवा कोई श्रीकृष्ण को छोटा समझकर केवल श्रीराधा की ही आराधना करता है तो वे दोनों ही नामापराध कर रहे हैं।

श्यामामय श्याम हों या श्याममयी श्यामा।
दो में कोइ एक भजो होंगे पूर्ण कामा॥ ५६१॥

भावार्थ—हाँ, यदि श्रीकृष्ण में श्री राधा का अध्याहार कर लिया जाय एवं श्री राधा में श्रीकृष्ण को बैठा दिया जाय,

तो फिर दोनों में से किसी एक की उपासना करने से भी उपासक की समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जायेंगी।

वेद कहें दोऊ एक श्याम अरु श्यामा।
श्यामा करें मान पै मनावें सुखधामा॥ ५६२॥

भावार्थ—वेद कहता है— येयं राधा यश्च कृष्णो... ।।

वेद-वाणी के अनुसार श्यामा-श्याम अभिन्न हैं। लीला के लिये ही एक से दो रूप धारण किये हैं। किंतु रस-दृष्टि से श्रीराधा की उत्कृष्टता है। श्रीराधा ने लीला-क्षेत्र में सदैव मान किया एवं पूर्ण ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण ने मानिनी के चरणों में सदा-सदा अपना मस्तक झुका कर मनाया।

वेद कहें ब्रह्म श्याम आनंद धामा।
किन्तु ब्रज रोतो बीते मान किये श्यामा॥ ५६३॥

भावार्थ—वेद-वाणी के अनुसार तो श्रीकृष्ण आनन्द-स्वरूप ब्रह्म हैं परन्तु ब्रज में अवतार लेकर उस ब्रह्म को मानिनी राधा को मनाते हुए झर-झर अश्रुवर्षा करनी पड़ी।

अबकी तुम श्याम बनो मैं भी बनुँ श्यामा।
बार-बार रूठा करूँ श्यामा आठु यामा॥ ५६४॥

भावार्थ—रँगीले नटनागर ने एक दिन प्रिया श्री राधा से कहा, मेरी ऐसी इच्छा है कि अबकी बार जब हम अवतार

लेकर आयें तो मैं श्यामा बनूँ और तुम श्याम बनो। फिर तुम्हारी ही भाँति मैं भी बार-बार मान करूँ और तुम मुझे मनाओ।

रूठने की बात सुनि बोली ब्रज बामा।
तुम जनि श्यामा बनो श्यामा रहें श्यामा॥ ५६५॥

भावार्थ—रूठने वाली बात सुन कर एक सखी ने तुरन्त श्यामसुन्दर से कहा, नहीं नहीं, तुम कभी श्यामा न बनना। श्यामा तो श्यामा को ही बने रहने दो।

इक दिन मान कियो श्याम कह बामा।
श्यामा ने मनाया नहिं लौटे निज धामा॥ ५६६॥

भावार्थ—एक ब्रजगोपी ने अपनी अन्तरंग सखी से कहा, एक दिन श्यामसुन्दर को भी मान करने की इच्छा हुई। उन्होंने मान धारण कर लिया। किन्तु श्रीराधा ने उन्हें मनाया ही नहीं। श्यामसुन्दर अपने घर लौट गये।

श्यामा श्याम लीला मर्म जानें श्याम श्यामा।
कछु कछु जानें ब्रज बामा ब्रज धामा॥ ५६७॥

भावार्थ—युगल-सरकार के परम पावन अलौकिक चरित्रों के रहस्य एकमात्र वे स्वयं ही जानते हैं। ब्रज-गोपियाँ भी श्यामा-श्याम की लीलाओं का किंचित् भेद जानती हैं।

देखें श्याम वक्ष पै प्रतिबिम्ब श्यामा।
जानि कोउ और प्रिया मान करें धामा॥ ५६८॥

भावार्थ—किसी समय श्रीराधा प्रियतम कृष्ण को अपनी भुजाओं में भरकर आलिंगन प्रदान करने जा रही थीं। अकस्मात् श्रीकृष्ण के श्रीवत्स-लांछित वक्ष पर उन्हें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। श्रीराधा भ्रम से किसी अन्य गोपी को समझ बैठीं एवं प्रियतम से मान ठान लिया।

श्यामा भौं टेढ़ी लखि श्याम सुखधामा।
तनु ते पसीना छूटे काँपें दोउ पामा॥ ५६९॥

भावार्थ—भ्रम-वश ही श्री राधा ने मान किया था। प्रेमी श्यामसुन्दर निरपराध थे। फिर भी श्रीराधा की टेढ़ी भौंहें देखकर उनके सुन्दर शरीर से स्वेद की धारायें बहने लगीं एवं भय से चरण काँपने लगे।

जाके डर डरे डर सोउ ब्रज धामा।
थर थर काँपे खड़ो लखि मान श्यामा॥ ५७०॥

भावार्थ—जिसके भय से भय भी भयभीत होता है वही सर्वेश्वर ब्रज-धाम के अन्तर्गत श्रीराधा को मान ठाने देखकर भय से थर थर काँपता है। ब्रज-प्रेम की कैसी अद्भुत महिमा है!

श्यामा जब मान करें श्याम कहें बामा।
ऋणियाँ रहूँगो तेरो मना लाओ श्यामा॥ ५७१॥

भावार्थ—जब कभी किसी कारण-वश मानिनी राधा प्रियतम से रूठकर उनसे दूर हो जाती हैं तब श्रीराधा के

विरह–दुख से कातर हुए कृष्ण सखियों से कहते हैं–हे ललिते! हे विशाखे! तुम किसी प्रकार श्रीराधा के मान को दूर कर उन्हें मेरे निकट ले आओ। मैं सदा सदा के लिये तुम्हारा ऋणी रहूँगा।

मान बानि अच्छी नहिं कह ब्रज बामा।
सदा मुसकाती रहो प्राण प्यारी श्यामा॥ ५७२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की भेजी हुई किसी सखी ने श्रीराधा के मान–भंजन की चेष्टा करते हुए कहा–हे सखी राधे! बार–बार मान करने की तुम्हारी आदत अच्छी नहीं है। तुम्हारी सखियाँ तुम्हें सदा मुस्कराते हुए ही देखना चाहती हैं।

बार बार मान करि दुःख पावो श्यामा।
तव दुःख दुःखी होवें सब ब्रज बामा॥ ५७३॥

भावार्थ—सखियाँ मानवती राधा के प्रति कहती हैं–हे राधे! तुम जब देखो तभी मान ठानकर बैठ जाती हो। इससे तुम स्वयं भी दुःख पाती हो एवं हम सब सखियाँ भी तुम्हारे दुःख से दुःखी होती हैं।

प्रेम नेम जाने नहिं श्याम छलधामा।
मीठी मीठी बातें करि छली ब्रज बामा॥ ५७४॥

भावार्थ—रूठी हुई वृषभानुदुलारी सखियों से कहती हैं–श्रीकृष्ण छल से परिपूर्ण हैं। वे प्रेम को निभाना क्या जानें। वे सदैव छल भरी मीठी मीठी बातें बनाकर ब्रजगोपियों को

ठगते रहते हैं।

संत कहे प्रेम अवतार श्याम नामा।
प्रेम पट दाग लगाया कह श्यामा॥ ५७५॥

भावार्थ—संत कहते हैं कि श्यामसुन्दर प्रेम के ही साकार विग्रह हैं। प्रेमियों की कामना पूर्ण करने के लिये ही उनका यह अवतार है। श्रीभानुनन्दिनी प्रणय-कोप के कारण कहती हैं-श्रीकृष्ण ने अपने छल और लम्पटता से प्रेम को कलंकित किया है।

श्याम न आने पायें सुनो सब बामा।
आवें तो न बोले कोऊ आदेश श्यामा॥ ५७६॥

भावार्थ—मानिनी राधा का क्रोध शान्त नहीं हुआ था। उन्होंने कुंज-भवन में स्थित अपनी सखियों को आदेश दिया-मेरे महल में श्रीकृष्ण का प्रवेश न होने पावे। यदि वे बाहर से महल तक आ भी जावें तो मेरी कोई सखी उनसे बात नहीं करेगी।

मेरा हित चाहे यदि श्यामा कहें बामा।
वाकी चर्चा न करु ले न वाको नामा॥ ५७७॥

भावार्थ—श्रीराधा अपनी सखियों के प्रति कहती हैं-यदि तुम मेरा हित चाहती हो तो मेरे समक्ष कभी श्यामसुन्दर की चर्चा न करना। मेरे सामने कोई भी सखी उनका नाम भी

न ले।

मान पर्वत पै मान किए श्यामा।
मोर बनि नाचे श्याम मोरकुटी धामा॥ ५७८॥

भावार्थ—श्रीराधा गम्भीर मान को धारण कर बरसाना स्थित मान-पर्वत पर जाकर बैठ गईं। श्यामसुन्दर उन्हें रिझाने के हेतु मयूर-कुटी पर मयूर का रूप धारण कर नृत्य करने लगे।

श्यामा जू को मान लखि श्याम सुखधामा।
कान धरि उठे बैठे हँसी आई श्यामा॥ ५७९॥

भावार्थ—गुणधाम श्यामसुन्दर श्रीराधा को मान धारण किये देखकर उन्हें मनाने के लिये कान पकड़कर बार-बार उठने बैठने लगे। यह देखकर श्रीराधा को हँसी आ गई।

मान जनि किया करो मेरी प्यारी श्यामा।
तुम भी जनि किया करो ऐसा वैसा कामा॥ ५८०॥

भावार्थ—श्रीराधा को प्रसन्न जान कर श्रीकृष्ण बोले- मेरी प्राण-स्वरूपा राधे! मान न किया करो। श्रीराधा ने उत्तर दिया-तुम भी ऐसे वैसे कार्य न किया करो।

मान करो किन्तु बेगि मान जाओ श्यामा।
मोहिं तलफत लखि हँसें ब्रज बामा॥ ५८१॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण प्रिया राधा के प्रति कहते हैं, श्री राधे! तुम्हारा स्वभाव ही मान करने का है, ठीक है तुम मान किया करो किंतु अपने मान को शीघ्र ही दूर भी कर दिया करो। मुझे तुम्हारे विरह में छटपटाते हुए देखकर ब्रजगोपियाँ परिहास करती हैं।

साँकरी गली में मिली चन्द्रावली बामा।
श्याम बोले मोरी तोरी जोरी ब्रज धामा॥ ५८२॥

भावार्थ—कभी नंदनंदन को साँकरी खोर में चन्द्रावली सखी अकेली मिल गई। श्यामसुन्दर चन्द्रावली से बोले, सखी! ब्रजमंडल में मेरी तेरी जोड़ी खूब फबेगी।

पीताम्बर भूले घर चन्द्रावली बामा।
चूनरि धारे लखि मान किए श्यामा॥ ५८३॥

भावार्थ—कभी श्यामसुन्दर चन्द्रावली सखी के यहाँ अपना पीताम्बर छोड़कर भूल से उसकी चुनरी धारण कर श्रीराधा के समीप आये। चन्द्रावली की चुनरी धारण किये श्रीकृष्ण को देखकर राधा ने मान ठान लिया।

पीताम्बर लै गयो बानर धामा।
चूनरि मैया दई मान तजो श्यामा॥ ५८४॥

भावार्थ—श्रीराधा को मनाते हुए नंदनंदन बोले— राधे! मेरा पीताम्बर तो वानर छीन ले गया। मैया यशोदा की चुनरी

मैंने धारण की है। तुम व्यर्थ ही शंका न करो। अपने मान का परित्याग करो।

बात तो बनाई बनी नाहिं कह श्यामा।
रात को न बानर दीखें ब्रजधामा॥ ५८५॥

भावार्थ—चतुर राधा श्रीकृष्ण की झूठी बातों में न आकर बोलीं-श्यामसुन्दर! तुम बातें बनाना बहुत जानते हो परन्तु तुम्हारा झूठ चला नहीं। रात्रि में तो ब्रज में बंदर कहीं दिखाई नहीं देते, फिर उन्होंने तुम्हारा पीताम्बर कैसे छीन लिया?

भोर भई तब आये श्याम ढिग श्यामा।
जहाँ रहे रैन जाओ सोइ घर बामा॥ ५८६॥

भावार्थ—कभी किसी अन्य सखी के गृह में रात्रि व्यतीत कर श्याम सुन्दर प्रात:काल श्रीराधा के भवन में पधारे। श्रीराधा ने लक्षणों को देखकर समझ लिया। राधा बोलीं–हे श्यामसुन्दर! जहाँ तुमने रात्रि व्यतीत की है-वहीं जाओ। यहाँ आने की कोई आवश्यकता नहीं।

कहीं नाहिं गये रैन रहे निज धामा।
किन्तु नींद ऐसी आयी भोर भइ श्यामा॥ ५८७॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण राधा को उत्तर देते हैं-मैं रात्रि में अन्यत्र कहीं न जाकर अपने ही भवन में रहा हूँ। रात्रि में मुझे ऐसी गहरी नींद आई कि बस अभी ही खुली है। जागते ही तुम्हारे

निकट चला आया हूँ।

मो पै न किया करो संशय श्यामा।
श्याम एक श्यामा कर बिक्यो बिनु दामा॥ ५८८॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर अत्यन्त दीन वाणी में श्रीराधा के प्रति कहते हैं-हे राधे! व्यर्थ का संदेह न किया करो। तुम्हारा कृष्ण एकमात्र तुम्हारे ही हाथों बिका हुआ है। मैं तुम्हारा बिना दाम का सेवक हूँ।

रात भर जागे ढिग चन्द्रावली बामा।
आँखें लाल लाल लखि मान किए श्यामा॥ ५८९॥

भावार्थ—कभी श्यामसुन्दर ने चन्द्रावली सखी के गृह में जाग कर रात्रि व्यतीत की। प्रात:काल श्रीराधा के निकट आये। श्रीराधा उनके अरुण नेत्र देखकर मान धारण कर बैठ गईं।

आँख में परि गइ किरकिरि धामा।
याते आँख लाल लाल मान जावो श्यामा॥ ५९०॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण श्रीराधा को मनाते हुए कहते हैं-राधे! मेरे नेत्रों में धूल या कंकड़ पड़ गया है। इसीलिये नेत्र लाल हैं। तुम मुझ पर संशय न करो।

भाल में मिहावर लगी लखि श्यामा।
कही जेहि पग रोये जाओ सोइ धामा॥ ५९१॥

भावार्थ—रात्रि कहीं किसी दूसरी सखी के घर व्यतीत कर प्रात:काल जब श्रीकृष्ण श्रीराधा के निकट पहुँचे तब उनके मस्तक पर मिहावर लगी देख कर श्रीराधा क्रोधपूर्वक बोलीं-यहाँ क्यों आये हो? जिसके चरणों में अपना मस्तक रखकर रोये हो, वहीं जाओ।

हा हा खाऊँ पैयाँ परूँ तेरे ब्रज बामा।
तू जो कहे मानूँगो मनाय लावो श्यामा॥ ५९२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर सखी से कहते हैं-हे सखी! मैं तुम्हारी हा हा खाता हूँ। तुम्हारे चरणों पर अपना मस्तक रखता हूँ। श्रीराधा को मना लाओ। मैं सदा तुम्हारा कहा किया करूँगा।

बार-बार करो तुम ऐसा वैसा कामा।
बार बार मेरा कहा मानें नाहिं श्यामा॥ ५९३॥

भावार्थ—सखी श्यामसुन्दर से कहती है—हे कृष्ण! तुम बड़े नटखट एवं लम्पट हो। तुम बार-बार अन्यान्य गोपियों से प्रेम करते हो। मैं श्रीराधा को बार-बार कैसे मनाऊँ। कभी-कभी तो मेरी बात मानकर श्रीराधा तुम्हारे अनुकूल हो सकती हैं परन्तु तुम्हारा स्वभाव तो बदलेगा नहीं फिर श्रीराधा मेरा कहा हुआ बार-बार कैसे स्वीकार करेंगी?

अबकी क्षमा करवा दे ब्रज बामा।
फिर नहिं करूँ कभु ऐसा वैसा कामा॥ ५९४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर सखी से कहते हैं-हे सखी! इस

बार श्रीराधा से किसी प्रकार मुझे क्षमा-याचना दिला दो। मैं भविष्य में कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा जिससे श्रीराधा मान करें।

श्यामा को मनाने का उपाय कहे बामा।
कान पकरि उठो बैठो ढिग श्यामा॥५९५॥

भावार्थ—प्रगल्भा सखी श्यामसुन्दर से कहती है- हे कृष्ण! यदि तुम श्रीराधा को प्रसन्न ही करना चाहते हो तो उनके समक्ष उपस्थित होकर कान पकड़कर उठुक बैठक करो।

तुम भी चलो मेरे साथ श्याम कह बामा।
डर लागे देखि विराट रूप श्यामा॥५९६॥

भावार्थ—श्रीराधा के मान से भयभीत हुए श्यामसुन्दर सखी से कहते हैं-मुझे श्रीराधा के मान-युक्त रूप को देखकर भय लगता है। तुम भी मेरे साथ चलो तो मैं श्रीराधा के समीप जाने का साहस करूँ।

अच्छा चलो चलते हैं श्याम ढिग श्यामा।
किन्तु आगे तुम चलो पाछे ब्रज बामा॥५९७॥

भावार्थ—सखी श्यामसुन्दर से कहती है-अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ श्रीराधा के निकट चलती हूँ। किन्तु तुम आगे आगे चलो, मैं पीछे चलूँगी।

तुम आगे, तुम आगे कहें श्याम बामा।
कोउ नाहिं चला मान बढ़ा जाय श्यामा॥ ५९८॥

भावार्थ—सखी एवं श्यामसुन्दर परस्पर यही कह रहे थे-तुम आगे चलो। आगे चलने को कोई तैयार नहीं था। जैसे-जैसे विलम्ब हो रहा था, श्रीराधा का मान भी वृद्धि को प्राप्त हो रहा था।

साहस करि श्याम गये पाछे श्यामा।
तनु काँपे छूटे पसीना लखें बामा॥ ५९९॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ने साहस किया। श्रीराधा की पीठ की ओर जाकर खड़े हो गये। श्यामसुन्दर भय से काँप रहे थे। स्वेद बह रहा था। ब्रज गोपियाँ इस दृश्य को देख रहीं थीं।

श्याम दशा देखि दया आई मन बामा।
बामा भी खड़ी हो गइ आगे श्यामा॥ ६००॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की यह दशा देखकर ब्रजांगना दया से द्रवित होकर श्रीराधा के आगे आकर खड़ी हो गई।

बामा लखि आगे बोलीं वक्र दृष्टि श्यामा।
दूति बनि आई होगी परे हट बामा॥ ६०१॥

भावार्थ—सखी को आगे खड़ी देखकर मानिनी राधा ने क्रोधपूर्वक उससे कहा, तू कृष्ण की दूती बनकर आई होगी।

मेरे सामने से हट जा।

दूती ऊती काऊ की न बनि आई श्यामा।
तोहिं दुःखी देखि दुःखी हम ब्रजबामा॥ ६०२॥

भावार्थ—सखी कहती है, राधे! मैं किसी की दूती बनकर नहीं आई। मैं तो तुम्हें दुखी देखकर ही तुम्हारे निकट आई हूँ।

जाकी मोहिं दूती कहे स्वामिनि श्यामा।
वो तो बिना खाये पिये रोये आठु यामा॥ ६०३॥

भावार्थ—सखी श्रीराधा से कहती है-हे स्वामिनी राधे! तुम मुझे जिसकी दूती समझ रही हो वह तो तुम्हारे वियोग में बिना खाये पिये निरन्तर आँसू बहा रहा है।

यह सुनि द्रवीभूत हो गईं श्यामा।
कही जा के अभी ही बुला ला ब्रजबामा॥ ६०४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की दयनीय दशा को सुनकर श्रीराधा का हृदय द्रवीभूत हो गया। कहने लगीं-सखी! उन्हें मेरे निकट अभी बुला ला।

ब्रज बामा बोली टुक पाछे लखु श्यामा।
पाछे लखि मान तजि बोलीं झूठी बामा॥ ६०५॥

भावार्थ—सखी ने श्रीराधा से कहा-अपने पीछे तो देखो। श्रीराधा ने अपने पीछे खड़े हुए भयभीत प्रियतम कृष्ण को

देखकर मान त्याग दिया एवं सखी से बोलीं–तू झूठी है।

गले मिले दोउ प्रेमसिन्धु श्याम श्यामा।
जय हो जय हो जय हो बलिहार कह बामा॥ ६०६॥

भावार्थ—प्रेमसिन्धु युगल-सरकार हृदय से हृदय मिलाते हुए आलिंगन-बद्ध हो गये। इस मिलन को देखकर सखियाँ बलिहार गईं एवं बारम्बार जय जयकार करने लगीं।

शयन की बेला सोने चलो श्याम श्यामा।
शयन के गीत गावो सब ब्रज बामा॥ ६०७॥

भावार्थ—रात्रि होने पर युगल-सरकार के नेत्र उनींदे देखकर सखियों ने कहा–शयन काल हो गया। हे श्यामा-श्याम! शय्या पर पधारो। हे सखियों! तुम सब शयन-गीत गाओ।

श्यामा श्याम सोय गए सोय गईं बामा।
श्याम कर पग चापैं चूमें दोउ पामा॥ ६०८॥

भावार्थ—शय्या पर युगल-सरकार ने शयन किया। सखियाँ भी निद्रित हो गईं। श्यामसुन्दर उठकर अपने कोमल करों से श्रीराधा के मृदुल चरणों का संवाहन कर मुख से दोनों चरणों का चुम्बन करने लगे।

भोर भई दोउ जागो उठो श्याम श्यामा।
दर्शन को बाहर खड़ी हैं ब्रज बामा॥ ६०९॥

भावार्थ—सखियाँ प्रातः काल होने पर युगल-सरकार को जगा रहीं हैं-हे श्यामा-श्याम! शयन-बेला समाप्त हो गई। निद्रा का त्यागकर उठकर कुंज से बाहर पधारो। सखियाँ दर्शनोत्कण्ठा से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं।

जागे नाहिं श्याम भोर जाग गईं बामा।
श्याम को जगावें बामा नाम गाके श्यामा॥ ६१०॥

भावार्थ—एक बार जब प्रातः काल होते ही शैया त्यागकर कुंजभवन की ओर गईं और जाकर देखा कि अभी श्यामसुन्दर ने निद्रा का त्याग नहीं किया तो चतुर सखियाँ श्रीराधा का नाम गा गाकर श्याम को जगाने लगीं।

देर रात सोये दोनों श्याम अरु श्यामा।
आपु ही उठेंगे उठाओ जनि बामा॥ ६११॥

भावार्थ—एक सखी कहती है, गत रात्रि श्यामा-श्याम बहुत देर तक जागते रहे थे। उन्होंने बहुत विलम्ब से शयन किया था, अतएव उन्हें जगाने की त्वरा न करो। निद्रा पूर्ण होने पर दोनों स्वयं ही उठ जायेंगे।

भोर भये बेर भई उठो श्याम श्यामा।
भूख लगी होगी खड़ी थार लिये बामा॥ ६१२॥

भावार्थ—युगल-सरकार को शय्या त्यागने में विलम्ब हुआ देख कोई सखी उन्हें जगाती हुई कहती है-हे श्यामा श्याम! आज तुम्हें जागने में अत्यन्त ही देर हो गई है। प्रात:काल कब से हो गया। सखियाँ प्रात:काल के भोग के लिये विविध व्यंजनों के थाल लिये द्वार पर प्रतीक्षा कर रही हैं। अब तो तुम्हें भूख भी लगी होगी। शीघ्र उठो।

श्यामा कान श्याम कहो श्याम कान श्यामा।
तब ही उठेंगे दोनों चौंकि कह बामा॥ ६१३॥

भावार्थ—इस पर भी जब युगल-सरकार नहीं उठे, तब एक चतुर सखी ने अन्य सखी से कहा-श्रीराधा के श्रवणों के समीप श्यामसुन्दर के नाम का उच्चारण करो एवं श्यामसुन्दर के कर्णरन्ध्रों में श्रीराधा के सुमधुर मंगलमय नाम का उच्चारण करो, तब ये दोनों अवश्य ही चौंककर जाग उठेंगे।

कान में जो नाम लो तो चौंकें श्याम श्यामा।
ढोल ढप लै के करो कीर्तन बामा॥ ६१४॥

भावार्थ—उपरोक्त बात सुन कर एक सखी बोली, कान में नाम बोलकर जगाने से श्यामा-श्याम चौंक जाऐंगे। अतएव इस उपाय से दोनों को जगाने की अपेक्षा अधिक अच्छा यह रहेगा कि ब्रजांगनायें ढोल ढप आदि वाद्यों के साथ युगल नाम संकीर्तन करें।

उठि बैठे कीर्तन सुनि ब्रजबामा।
ब्रजबामा बोली जय हो जय हो श्याम श्यामा॥ ६१५॥

भावार्थ—युगल-सरकार ने ब्रज गोपियों के उच्च स्वर से गाये हुए नाम-संकीर्तन का श्रवण किया तो अत्यन्त त्वरा से शय्या का त्याग कर दिया। गोपियाँ श्यामा-श्याम की जय जयकार करने लगीं।

नैन रतनारे मतवारे लखें बामा।
लखतहिं बनें अलसाने श्याम श्यामा॥ ६१६॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम के शय्या त्याग करने पर गोपियाँ उनके अरुणारे मतवाले नेत्रों की सौन्दर्य सुधा का पान करने लगीं। श्यामा श्याम निद्रा से जागने के कारण अलसाये हुये थे। उनकी यह मनोहर झाँकी देखते ही बनती थी।

उठो चलो हाथ मुँह धोवो श्याम श्यामा।
माखन व मिश्री लिये खड़ीं ब्रज बामा॥ ६१७॥

भावार्थ—एक सखी ने कहा, हे श्यामा श्याम! हाथ, मुँह धोकर तैयार हो जाओ। सखियाँ तुम्हारे प्रिय पदार्थ माखन मिश्री आदि लेकर खड़ी हुई हैं।

श्याम कहें पूर्व तुम आरोगो श्यामा।
श्यामा कहें पूर्व तुम खाओ सुखधामा॥ ६१८॥

भावार्थ—सखियों द्वारा प्रातःकालीन भोग प्रस्तुत करने

पर युगल-सरकार परस्पर प्रथम भोग लगाने का हठ कर रहे हैं। श्यामसुन्दर श्रीराधा से कहते हैं-हे राधे! पहले तुम ग्रास ग्रहण करो। श्रीराधा प्रियतम श्यामसुन्दर के प्रति निवेदन करती हैं, हे सुखनिधान! प्रथम तुम नैवेद्य ग्रहण करो।

श्याम डारें निज कर ग्रास मुख श्यामा।
श्यामा डारें श्याम मुख बलि जायें बामा॥ ६१९॥

भावार्थ—प्रातःकालीन कलेवा करते हुये श्यामसुन्दर श्री राधा के मुख में ग्रास दे रहे हैं एवं श्री राधा निज कर से प्रियतम कृष्ण के मुख में ग्रास दे रही हैं। सखियाँ इस झाँकी को देख-देख कर बलिहार जा रही हैं।

श्यामा श्याम कुंज बैठे संग न थी बामा।
घन लागे बरसन भीजें श्याम श्यामा॥ ६२०॥

भावार्थ—कभी युगल-सरकार किसी कुंज में एकान्त में विराजमान थे। कोई सखी वहाँ नहीं थी। अचानक बादलों से रिमझिम वर्षा होने लगी। श्यामा-श्याम जल की बूँदों से भीगने लगे।

भीजैं दोउ कुंज महँ वृन्दावन धामा।
श्यामा उर श्याम छुपे श्याम उर श्यामा॥ ६२१ ॥

भावार्थ—श्रीवृन्दावन की कुंज में श्यामा-श्याम दोनों भीगने लगे। दोनों परस्पर आलिंगनबद्ध हो एक दूसरे के वक्ष में छिपकर वर्षा से स्वयं को बचाने लगे।

श्याम करें ओट पीतपट सिर श्यामा।
श्यामा धरें नीलपट देखें छुपि बामा॥ ६२२ ॥

भावार्थ—वर्षा से भीगने पर श्यामसुन्दर अपने पीताम्बर से श्रीराधा को भीगने से बचाने लगे। श्रीराधा अपने नीलाम्बर से श्यामसुन्दर के ऊपर ओट करने लगीं। इस झाँकी का अवलोकन सखियाँ छिप-छिप कर कर रही थीं।

उमड़ि घुमड़ि घन घिरि आये श्यामा।
झूलन पधारो ढप ढोल संग बामा॥ ६२३ ॥

भावार्थ—कभी बादलों से आकाश को घिरते देखकर नंदनंदन भानुनंदिनी से बोले-राधे! आकाश मेघों से घिरा हुआ है। सखियों सहित ढोल ढप आदि वाद्यों को लेकर झूलने

पधारो।

झूलन पधारो श्याम विनती है श्यामा।
सावन में सब झूला झूलें ब्रज धामा॥६२४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ने पुनः आग्रह किया, 'हे राधे! तुम्हारे श्याम की प्रार्थना है कि झूला झूलने पधारो। सावन के महीने में ब्रजधाम में सब झूला झूलते हैं।'

विनती न कहो श्याम कहो अस कामा।
जासो श्याम सुख पावें सोइ करें श्यामा॥६२५॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की प्रार्थना सुनकर श्री राधा ने उत्तर दिया-हे श्याम! तुम मुझसे बिनती न कर मुझे आज्ञा प्रदान किया करो। राधा वही करती हैं जिसमें प्रियतम को सुख प्राप्त हो।

श्यामा कहें श्याम झूलें श्याम कहें श्यामा।
साज बाज लिये ठाढ़ी रहीं ब्रज बामा॥६२६॥

भावार्थ—झूला झूलने के अवसर पर युगल-सरकार में विवाद उठ खड़ा हुआ। श्रीराधिका ने प्रस्ताव रखा- श्यामसुन्दर झूलेंगे। श्यामसुन्दर ने विरोध करते हुए कहा-श्यामा झूलेंगी। ब्रजांगनायें समस्त साज बाज लिये हुए प्रतीक्षा ही करती रहीं।

हौं ही झुलावूँ कह दोउ श्याम श्यामा।
लरो मत दोऊ झूलो झूलवति बामा॥६२७॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम परस्पर हठ करते रहे। श्याम बोले-मैं झुलाऊँगा। श्यामा ने कहा-मैं झुलाऊँगी। ब्रज गोपियों ने कहा-तुम दोनों झूलो, हम झुलायेंगी।

यमुना के तट झूला झूलें श्याम श्यामा।
यमुना तरंगनि परसति पामा॥ ६२८॥

भावार्थ—यमुना-तट पर किसी भाग्यशाली वृक्ष की डाल पर झूला पड़ा है। श्यामा-श्याम झूला झूल रहे हैं। यमुना उल्लसित हुई निज लहरों रूपी करों से युगल सरकार के चरण छूना चाहती हैं।

झूला झूलें श्यामा श्याम गावें ब्रज बामा।
श्याम अलाप लेवें तान लेवें श्यामा॥ ६२९॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम झूला झूल रहे हैं। ब्रज-गोपियाँ गीत गा रही हैं। श्यामसुन्दर आलाप ले रहे हैं। राधा तान ले रही हैं।

सावन का महीना झूला झूलें श्याम श्यामा।
हल्की फुहार परे ओट करें बामा॥ ६३०॥

भावार्थ—सावन मास का आगमन हो चुका है। युगल-सरकार झूला झूल रहे हैं। वर्षा की हल्की हल्की फुहार पड़ रही है। ब्रज-गोपियाँ श्यामा-श्याम को भीगने से बचाने के लिये अपने आँचलों की ओट करती हैं।

रिमझिम बरसत झूलें श्याम श्यामा।
कोऊ नाहिं भाजे सब भीजें ब्रज बामा॥ ६३१॥

भावार्थ—वर्षा की झड़ी लगी हुई है। श्यामा-श्याम झूल रहे हैं। भीगने पर भी कोई अपना स्थान नहीं छोड़ रहा है। जो जहाँ पर है, वह वहीं स्थिर है।

श्याम रहे झूलत झुलवति बामा।
कूदि परे श्याम लखि आवति श्यामा॥ ६३२॥

भावार्थ—एक अन्य अवसर पर श्यामसुन्दर झूला झूल रहे थे। सखियाँ झुला रही थीं। अचानक श्रीराधा वहाँ आ गईं। श्रीराधा को देखकर नंदनंदन झूले से कूद पड़े।

श्याम झुलावें जब झूला झूलें श्यामा।
श्याम जब झूलें तो झुलावें ब्रज बामा॥ ६३३॥

भावार्थ—जब श्री राधा झूला झूलती हैं तब श्रीकृष्ण उन्हें झुलाते हैं। जब श्रीकृष्ण झूलते हैं, तब ब्रजगोपियाँ उन्हें झुलाती हैं।

श्यामा बनीं श्याम अरु श्याम बने श्यामा।
श्यामा झुलावें झूलें श्याम हँसें बामा॥ ६३४॥

भावार्थ—कभी लीला करते हुये श्यामा श्याम बन गईं एवं श्याम श्यामा बन गये। किन्तु (जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि) जब श्री राधा झूलती हैं तो श्यामसुन्दर उन्हें

झुलाते हैं, अतएव आज भी जब श्यामा बने हुये श्याम, श्याम बनी हुई श्यामा को झुलाने लगे तो ब्रजगोपियाँ हँसने लगीं।

सावन में चहुँ दिशि हरियाली श्यामा।
चलो चलें झूला झूलें संग लिये बामा॥ ६३५॥

भावार्थ—कभी श्यामसुन्दर ने श्रीराधा से अनुनयपूर्वक कहा-हे श्यामा! देखो सावन के महीने में चारों दिशायें हरियाली से परिपूर्ण हैं। ब्रज-गोपियों सहित इस अवसर पर झूला झूलने हेतु पधारो।

तुम ही झुलावो कह दोउ श्याम श्यामा।
श्याम काहे नई करो कह ब्रज बामा॥ ६३६॥

भावार्थ—कभी झूला झूलते हुए श्यामा-श्याम परस्पर हठ कर बैठे। श्यामसुन्दर ने श्रीराधा से कहा- तुम झुलाओ। श्रीराधा ने कहा-तुम झुलाओ। ब्रज-गोपियाँ श्यामसुन्दर से कहती हैं-सदा तो तुम्हीं झुलाते हो, राधा झूलती हैं। आज नई रीति, राधा झुलावें और तुम झूलो, क्यों करना चाहते हो?

श्याम झुलावें झूला झूला झूलें श्यामा।
ललिता मल्हार गावें वाद्य वृंद बामा॥ ६३७॥

भावार्थ—उपर्युक्त विवाद समाप्त हुआ। श्याम झुलाने लगे। राधा झूलने लगीं। प्रिय सखी ललिता मल्हार गाने लगीं। ब्रज-गोपियाँ वाद्यवृन्द बजा रही थीं।

तुम ना झुलावो श्याम झूला कह श्यामा।
गाय चराओ जाय कहूँ कोउ ग्रामा॥ ६३८॥

भावार्थ—श्री श्यामसुन्दर द्वारा ठीक से न झुलाये जाने पर श्री राधा ने उलाहना दिया, हे श्यामसुन्दर! तुम झूला न झुलाओ। कहीं किसी गाँव में जाकर गायें चराओ, तुममें तो बस उसी की योग्यता है।

तुमसे न झूलूँ अब भर पाइ श्यामा।
जाओ गुल्ली डंडा खेलो ग्वाल संग गामा॥ ६३९॥

भावार्थ—श्रीराधा नंदनंदन की चंचलता से खीझकर आगे कहती हैं-हे कृष्ण! मैं भर पाई। अब मैं तुम्हारे द्वारा नहीं झुलूँगी। तुम गाँव में जाकर अपने मित्र ग्वाल-बालों के साथ गुल्ली-डंडा खेलो।

सेवा न छीनो मेरी क्षमा करो श्यामा।
अब झोंटा दैहौं वैसे जैसे देवें बामा॥ ६४०॥

भावार्थ—सेवा छिन जाने के भय से आर्त हुए नंदनंदन श्रीराधा से बोले-हे राधे! क्षमा करो। जिस प्रकार ब्रज-गोपियाँ धीमी-धीमी गति से तुम्हें झुलाती हैं, वैसे ही मैं भी झुलाउँगा। मेरी सेवा मुझसे न छीनो।

तुमसे न झूलें झूला श्याम कभु श्यामा।
काऊ दिन गिरा दोगे कहें ब्रज बामा॥ ६४१॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें नंदनंदन के नटखटपन से क्रोधित

होकर उनसे कहती हैं-हे कृष्ण! तुम हमारी प्यारी सखी को झूला नहीं झुलाओगे। तुम अत्यन्त चंचल हो। कभी शीघ्रता से झोंटा देकर श्रीराधा को झूले से गिरा ही दोगे।

पहले झुलावो काऊ पहलवान बामा।
धीरे धीरे सीख लो तो आवो ढिग श्यामा॥ ६४२॥

भावार्थ—किसी मुँह लगी सखी ने श्यामसुन्दर से कहा-तुम पहले किसी हट्टी-कट्टी गोपी को झूला झुलावो। उसे झुलाते झुलाते जब भली प्रकार झूला झुलाना सीख जावो तब श्रीराधा के निकट आना।

तुम जाओ ग्वाल संग झूलो कह बामा।
बामा तो झुलावें निज स्वामिनि श्यामा॥ ६४३॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें श्री नंदनंदन को मीठी झिड़की देती हुई कहती हैं-तुम ग्वालबालों के साथ जाकर झूला झूलो। अपनी स्वामिनी श्यामा को तो हम सभी सखियाँ ही मिलकर झुलायेंगी।

ललिता झुलावें झूला झूला झूलें श्यामा।
श्याम ललचावें कहें धन्य भाग बामा॥ ६४४॥

भावार्थ—श्रीराधिका झूला झूल रहीं हैं, उनकी परम प्रिय सखी ललिता झूला झुला रही हैं। श्यामसुन्दर ललचाते हुए ललिता के भाग्य की सराहना करते हैं।

झूला झुलाना भी है कला कह श्यामा।
कहा जाने ग्वारिया गँवार बसि गामा॥ ६४५॥

भावार्थ—श्रीराधा ने मीठी फटकार लगाते हुए कृष्ण से कहा-झूला झुलाना भी एक कला है। गाँव के गँवार चरवाहे भला झूला झुलाना क्या जानें।

मुँह लटकाये श्याम लखि कह बामा।
आओ सिखा दें करो गुरु परनामा॥ ६४६॥

भावार्थ—सखियों द्वारा तिरस्कृत किये गये श्यामसुन्दर मुख लटकाये खड़े थे। ब्रज गोपियाँ परिहासयुक्त वचन बोलीं-हे कृष्ण! आओ तुम हमें प्रणाम करके अपना गुरु बना लो तो हम तुम्हें झूला झुलाने की शिक्षा दें। तब तुम हमारी प्रिय सखी राधा को झूला झुलाना।

गुरु बिनु ज्ञान नहिं होवे कहें श्यामा।
झूला झुलाना हो तो करो गुरु बामा॥ ६४७॥

भावार्थ—श्रीराधा श्यामसुन्दर से कहती हैं-हे कृष्ण! बिना गुरु के ज्ञान नहीं होता। यदि तुम झूला झुलाना ही चाहते हो तो किसी सखी को गुरु बनाकर उससे शिक्षा लो, फिर मुझे झूला झुलाना।

आज ही ते सीखूँगा मैं गुरु करि बामा।
काल ते झुलाऊँगा मैं झूला तोहिं श्यामा॥ ६४८॥

भावार्थ—सखी द्वारा वाक् ताड़ित किये गये श्यामसुन्दर ने कहा–मैं आज ही किसी ब्रज–गोपी को गुरु बनाकर उससे झूला झुलाने की कला सीखूँगा। हे श्रीराधे! कल से मैं अवश्य ही तुम्हें झूला झुलाउँगा।

झोंटा दियो जोर ते जब सुखधामा।
हौं नहिं झूलूँ डरि कह तब श्यामा॥ ६४९॥

भावार्थ—जब सुख के सागर श्यामसुन्दर ने जोर से झोंटा दिया तो अत्यंत भोरी किशोरी जी डर कर कहती हैं– 'मैं नहीं झूलूँगी।'

तोसों नाहिं झूलेंगी श्यामा कह बामा।
धीरे से झुलाओ तो झुलाओ कह श्यामा॥ ६५०॥

भावार्थ—चंचल श्यामसुन्दर श्री राधा को तीव्र गति से झूला झुलाने लगे। श्रीराधा की प्रिय सखियाँ बोल उठीं–हे श्यामसुन्दर! तुमसे हमारी प्रिय सखी राधा झूला नहीं झूलेंगी। श्रीराधा को प्रियतम पर दया आ गई। वे मंद स्वर में बोलीं, यदि धीरे–धीरे झुला सकते हो तो झुलाओ।

घन गरजत सुनु श्याम सुखधामा।
डर लागे तुम भी सँग झूलो कह श्यामा॥ ६५१॥

भावार्थ—आकाश में मेघों की गर्जना सुन कर श्री राधा सुख सागर श्रीकृष्ण से बोलीं– हे प्रियतम! मुझे अकेले झूलने

में भय लगता है, तुम भी मेरे साथ झूलो।

कदम की डार झूला झूलें श्याम श्यामा।
कदम गिरावे फूल 'जय हो' कहें बामा॥ ६५२॥

भावार्थ—कदम्ब की डाल पर झूला पड़ा है। युगल-सरकार झूल रहे हैं। कदम्ब-वृक्ष से पुष्प वर्षा हो रही है। सखियाँ जय जयकार कर रही हैं।

शुक को पढ़ावें दोनों होड़ करि धामा।
कहो श्याम नहिं श्यामा नहिं श्याम श्यामा॥ ६५३॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम किसी बड़भागी तोते को श्यामा-श्याम नाम का उच्चारण करा रहे हैं। श्यामा उस शुक से बार-बार 'श्याम' नाम बोलने का हठ पूर्वक आग्रह करती हैं श्यामसुन्दर अत्यन्त आग्रह-पूर्वक तोते को हस्त-कमल पर बिठाकर प्रेम-पूर्वक श्रीराधा नाम रटने को विवश कर रहे हैं।

धारा धारा पढ़ो शुक कहें सुखधामा।
कहु शुक खट नट खट कहें श्यामा॥ ६५४॥

भावार्थ—नटखट नंदनंदन अपने लीला-शुक को श्रीराधा का उल्टा नाम, धारा धारा कहना सिखा रहे हैं। बार-बार 'धारा' शब्द का उच्चारण करने से 'राधा' शब्द की आवृत्ति स्वतः ही होने लगेगी। चतुरा श्रीराधा ने शुक से कहा, हे शुक! बोल खट नट। नटखट का उल्टा कर खट नट शब्द

का उच्चारण कर श्रीराधा शुक को 'नटखट' 'नटखट' बोलना सिखा रही हैं।

रास में मयूर नृत्य करें श्याम श्यामा।
जय हो जय हो बार बार करें ब्रज बामा॥ ६५५॥

भावार्थ—कभी युगल-सरकार ने रास-मण्डल में मयूर-नृत्य करना आरम्भ किया। ब्रज-गोपियाँ श्यामा-श्याम की ललित झाँकी को निहार कर बार बार 'जय हो' 'जय हो' कहकर उन्हें उत्साहित करने लगीं।

होड़ करि नृत्य मोर करें श्याम श्यामा।
हार मानो अब थकि गये होंगे पामा॥ ६५६॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम परस्पर स्पर्धा से युक्त होकर मयूर नृत्य करते रहे। कुछ समय पश्चात् दोनों को ही श्रमित जान सखियाँ कहने लगीं, बस अब हार मान लो, नृत्य करते करते चरण थक गये होंगे।

दोउ कहें दोउ मेरे थके नाहिं पामा।
दोउ जीते मान लिया कहें ब्रज बामा॥ ६५७॥

भावार्थ—युगल-सरकार में से कोई भी अपने को पराजित नहीं स्वीकार करना चाहता था। अतएव दोनों ने सखियों के ऐसा कहने पर प्रत्युत्तर दिया, नही, मेरे पैर नहीं थके हैं। तब सखियाँ बोलीं, अच्छा हमने तुम दोनों को ही समान रूप

से जीता हुआ स्वीकार किया। अब तो बस करो।

यमुना विहार करें सखि संग श्यामा।
श्याम रुआँसे खड़े आओ कह बामा॥ ६५८॥

भावार्थ—कभी सखियों सहित श्रीराधा यमुना में जल-विहार कर रही थीं। श्यामसुन्दर तट पर उदास भाव से खड़े होकर श्रीराधा के जल-विहार का दर्शन कर रहे थे। ब्रजांगनाओं को दया आई। उन्होंने श्यामसुन्दर को भी यमुना-विहार में सम्मिलित होने को कहा।

यमुना बिहार करें श्याम अरु श्यामा।
जल की फुहार डारें सब ब्रज बामा॥ ६५९॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम यमुना में परस्पर जल-विहार कर रहे थे। ब्रजांगनायें युगल-सरकार पर जल की बौछार कर रही थीं।

जल की फुहार डार बामा श्याम श्यामा।
श्यामा पै श्याम श्याम पै ब्रज भामा॥ ६६०॥

भावार्थ—यमुना-विहार करते समय श्यामा-श्याम एवं सखियों ने एक दूसरे पर जल की फुहारें डालीं। श्यामा पर श्याम ने एवं ब्रजांगनाओं ने श्यासुन्दर पर जल की फुहारें डाल डाल कर उनके साथ जल-क्रीड़ा की।

नौका में बैठीं बामा नाहिं श्याम श्यामा।
इतने में आये दोनों जय हो कहीं बामा॥ ६६१॥

भावार्थ—कभी ब्रजांगनायें यमुना-जल पर तैरती हुई नौका में विराजमान थीं। उस अवसर पर श्यामा-श्याम उनके मध्य नहीं थे। अचानक युगल-सरकार को आया देख गोपियाँ आनन्द से उल्लसित होकर जय जयकार करने लगीं।

नाव में बैठे नाहिं दोउ श्याम श्यामा।
तुम पहले तुम पहले कहें लखें बामा॥ ६६२॥

भावार्थ—कभी यमुना-तट पर श्यामा-श्याम खड़े थे। नौका यमुना के वक्ष पर उपस्थित थी। श्यामा-श्याम परस्पर नौका में चढ़ने के लिये, प्रथम तुम चढ़ो, कहकर विवाद कर रहे थे। ब्रज-गोपियाँ इस कौतूहल-वर्धक दृश्य का दर्शन कर रही थीं।

नौका में बैठे सब बामा श्याम श्यामा।
नौका हिलावैं श्याम कर जोरें बामा॥ ६६३॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें एवं युगल-सरकार जब यमुना-जल में स्थित नौका पर आरूढ़ हो गये तब चंचल नंदनंदन नौका को जोर से हिलाने लगे। भयभीत हुई गोपियाँ हाथ जोड़कर ऐसी चंचलता न करने की प्रार्थना करने लगीं।

नौका विहार करें श्याम अरु श्यामा।
श्यामा पै जल डारें श्याम रोकें बामा॥ ६६४॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम नौका-विहार कर रहे थे। अचानक चंचल श्यामसुन्दर श्रीराधा पर जल उलीचने लगे। ब्रजगोपियाँ श्यामसुन्दर को जल डालने से मना करने लगीं।

नाव में उछलकूद करें सुखधामा।
नाव डगमगाये डरें श्यामा संग बामा॥ ६६५॥

भावार्थ—चंचल श्रीकृष्ण नौका में चढ़कर यमुना के मध्य उछलने कूदने लगे। उनके ऐसा करने से नाव जल में डगमगाने लगी। नाव के अस्थिर होने से श्रीराधा सहित ब्रज-गोपियाँ डूबने के भय से भयभीत हो उठीं।

बीच धार छोड़ दई नाव सुखधामा।
नाव बही पतवार थामो कह बामा॥ ६६६॥

भावार्थ—जब नौका यमुना-जल की धारा के बीचों बीच पहुँची, श्यामसुन्दर ने पतवार छोड़ दी। नौका स्वतन्त्र होकर जल में प्रवाहित होने लगी। गोपियाँ शीघ्रतापूर्वक नंदनंदन को पतवार पकड़कर नौका सम्भालने को कहने लगीं।

नाव पै बैठे सब गीत गावें बामा।
श्याम कूदें यमुना में हाय कहें श्यामा॥ ६६७॥

भावार्थ—युगल-सरकार एवं सखियाँ नौका पर विराजमान थे। गोपियाँ मधुर स्वर से गीत गा रही थीं। चंचल कृष्ण अचानक यमुना-जल में कूद पड़े। श्रीराधा भयभीत

होकर 'हाय हाय'! कह उठीं।

श्याम कहें आओ बैठो नाव पै बामा।
बामा कहें हम नहिं बैठें बिनु श्यामा॥ ६६८॥

भावार्थ—कभी यमुना -तट पर नौका में आसीन श्यामसुन्दर ने ब्रजगोपियों को भी नौका में बैठने को कहा। ब्रजांगनायें श्रीराधिका के बिना नौका पर चढ़ने को तैयार नहीं हुईं।

श्यामा मोरी स्वामिनि सुनहु सुखधामा।
जहाँ नहिं श्यामा तहाँ रहैं नाहिं बामा॥ ६६९॥

भावार्थ—गोपियों ने श्यामसुन्दर से कहा, हे सुखनिधान! श्री राधा हमारी स्वामिनी हैं। अतएव जहाँ श्री राधा नहीं, उस स्थान पर ब्रज गोपियाँ नहीं रहतीं।

श्याम मेरे प्राण सम कहें ब्रज बामा।
प्राण हूँ की प्राण मेरी स्वामिनि श्यामा॥ ६७०॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ कहती हैं-श्याम तो मेरे प्राणों के समान हैं। प्राणों की भी प्राण मेरी स्वामिनी श्यामा हैं।

श्यामा जू को पक्ष लेऊँ सदा आठु यामा।
श्याम हूँ को पक्ष लेऊँ जब कहें श्यामा॥ ६७१॥

भावार्थ—मैं सदैव अपनी स्वामिनी श्री राधा का ही पक्ष लेती हूँ। कभी-कभी श्यामसुन्दर का भी पक्ष ले लेती हूँ

किन्तु ऐसा तब करती हूँ जब श्री राधा की आज्ञा प्राप्त होती है।

चोरी चोरी प्यार करें श्याम संग बामा।
खुल्लम खुल्ला प्यार करें बामा संग श्यामा॥ ६७२॥

भावार्थ—गोपियाँ तो श्यामसुन्दर से लोक से छिपकर चोरी-चोरी प्रेम करती हैं। किन्तु श्रीराधा से तो सखियाँ निर्भय होकर प्रेम करती हैं।

बैठे नाव पै श्याम बामा संग श्यामा।
जल बरसे भीजें भागें कहाँ बामा॥ ६७३॥

भावार्थ—यमुना-जल में स्थित नौका पर श्यामसुन्दर एवं श्रीराधा गोपियों सहित विराजमान थे। अचानक वर्षा होने लगी। सब भीगने लगे किन्तु वर्षा से बचने के लिये ब्रजांगनायें कोई उपाय नहीं खोज पा रही थीं।

नाव पै बैठे भीजें श्याम अरु श्यामा।
निज निज चुनरी ते ओट करें बामा॥ ६७४॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम यमुना-जल में स्थित नौका पर वर्षा से भीग रहे थे। सखियाँ अपनी अपनी ओढ़नियों से उन पर छत्रछाया कर रही थीं।

बनि मनिहारी गये श्याम श्री धामा।
चूरी ले लो कोउ बोले ले लो कोउ श्यामा॥ ६७५॥

भावार्थ—लीला बिहारी श्यामसुन्दर कभी श्रीराधा के दर्शन हेतु चूड़ी बेचने वाली मनिहारिन का रूप धारण कर श्री राधा के भवन बरसाना गये। प्रारंभ में तो 'कोई चूड़ी ले लो-कोई चूड़ी ले लो' ऐसा कहते रहे किंतु फिर प्रेम समाधि में निमग्न हुये 'कोई श्यामा ले लो,' ऐसा कहने लगे।

मनिहारी लै गई संग ब्रज बामा।
मूरछित भये कर परसत श्यामा॥ ६७६॥

भावार्थ—मनिहारिनी बने हुए श्यामसुन्दर के अद्भुत रूप-लावण्य से खिंचकर कोई ब्रज-गोपी उन्हें अपने साथ ही श्रीराधा के निकट तक ले गई। चूड़ी पहनाने के लिये मनिहारिन ने जैसे ही वृषभानुकिशोरी का कर-कमल अपने करों में पकड़ा, तत्क्षण प्रेम की प्रगाढ़ता से मूर्च्छित हो गई।

वैद्य बनि गये श्याम बरसानो धामा।
नारी पकरत ही उठि बैठीं श्यामा॥ ६७७॥

भावार्थ—कभी दर्शनोत्कण्ठा से विकल बने नंदनंदन ने वैद्य का रूप धारण कर श्रीधाम बरसाने की ओर प्रस्थान किया। सखियाँ प्रेम-रोग से ग्रस्त भानुनन्दिनी के निकट उस अद्भुत वैद्य को ले गईं। श्याम-वैद्य के नाड़ी पकड़ते ही रोगिणी श्यामा अपनी रोग-शय्या से उठकर स्वस्थ होकर बैठ गईं।

श्यामा सखि बनि श्याम गये ढिग श्यामा।
श्यामा लखि मूर्छित भये सुखधामा॥ ६७८॥

भावार्थ—कभी नटनागर ने 'श्यामा' नामक सखी का रूप धारण किया। उस सुन्दरी के विलक्षण रूप से प्रभावित हुई श्रीराधा की कोई सखी श्यामा सखी को श्रीराधा के सर्व-सुख-सम्पन्न भवन में ले गई। श्रीराधा का दर्शन करते ही श्यामा सखी मूर्च्छा को प्राप्त हो गई।

श्यामा सखि बनि गये श्याम ढिग श्यामा।
बोले श्यामा तुम गोरी, मैं साँची श्यामा॥ ६७९॥

भावार्थ—कभी श्यामा सुन्दरी का रूप धारण कर श्यामसुन्दर बरसाना धाम पहुँचे। भानुनन्दिनी के दिव्य भवन में प्रवेश प्राप्त कर उनके निकट पहुँच कर बोले–हे श्यामा! तुम तो गौरांगी हो; अतः श्यामा नाम तुमसे सार्थक नहीं होता। वास्तविक श्यामांगी श्यामा तो मैं ही हूँ।

श्याम कह तुम हम हम तुम श्यामा।
हम तुम मिलि बैठें उर ब्रज बामा॥ ६८०॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर श्री राधा से कहते हैं, तुम मैं हो, मैं तुम हूँ। हम दोनों में अभेद है। तुम हम दोनों मिल कर ब्रज गोपियों के हृदय में निवास करते हैं।

श्यामा उर श्याम बसें श्याम उर श्यामा।
श्यामा श्याम बसें रोम-रोम ब्रज बामा॥ ६८१॥

भावार्थ—श्री वृषभानुनन्दिनी के हृदय-धाम में सदा नंदनंदन का निवास है। श्रीकृष्ण के उर-मन्दिर में भी अविचल रूप से श्री राधा ही विराजमान हैं। किंतु ब्रज गोपियों के रोम रोम में श्यामा-श्याम दोनों का ही निवास है।

श्याम पियें गौर रस श्याम रस श्यामा।
गौर-श्याम रस पियें सब ब्रज बामा॥ ६८२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर को केवल श्री राधा का ही रस मिलता है एवं श्री राधा को केवल श्यामसुन्दर का। स्वयं के नित नवायमान अनन्त सौन्दर्य माधुर्य का अनुभव दोनों में से कोई भी नहीं कर पाता। अतएव ब्रजगोपियों का सौभाग्य श्यामा श्याम दोनों से बड़ा है क्योंकि वे तो दोनों के ही रसामृत का निरन्तर पान करती रहती हैं।

तीनों हैं प्रेमधनी श्यामा श्याम बामा।
तीनों में सबसे बड़ी प्रेमधनी श्यामा॥ ६८३॥

भावार्थ—यद्यपि श्यामा-श्याम एवं ब्रजांगनायें तीनों ही प्रेम-धन के धनी हैं परन्तु इनमें भी सर्वश्रेष्ठ तो श्रीराधा ही हैं, जो बहुमूल्य प्रेम-धन की दृष्टि से सर्वोपरि हैं।

ब्रह्म श्याम को करें प्रेमदान श्यामा।
पुनि श्याम करें प्रेमदान ब्रजबामा॥ ६८४॥

भावार्थ—श्रीराधा के द्वार पर ब्रह्म श्रीकृष्ण प्रेम की भिक्षा माँगते हैं। दान-दात्री श्रीराधा इन्हें उदारता-पूर्वक प्रेम लुटाती हैं। श्रीराधा के अक्षय प्रेम-भण्डार से प्राप्त प्रेम में से ही श्यामसुन्दर ब्रज-गोपियों को प्रेम-दान करते हैं।

भुक्ति मुक्ति ते हो यदि हाथ धोना बामा।
श्याम को मनभाया लखो आठु यामा॥ ६८५॥

भावार्थ—एक चतुर सखी भोली भाली ब्रज बनिताओं से कहती है- यदि तुम श्यामसुन्दर को देखे बिना नहीं रह सकती हो तो ठीक है, उन्हें रात दिन जी भर कर देखो। किन्तु फिर ब्रह्म लोक पर्यन्त के भोगों (भुक्ति) एवं मुक्ति से सदा सदा के लिये हाथ धोने के लिये तैयार रहो (जो एक बार भी श्यामसुन्दर के दर्शनादि (प्रेमानंद) का लवलेश भी प्राप्त कर लेता है वह फिर भुक्ति एवं मुक्ति के प्रति अनंतकाल तक, स्वप्न में भी, एक क्षण को भी आकर्षित नहीं हो सकता।)

श्याम की चितवनि मुसकनि बामा।
मुरली भी जादू भरी बचो आठु यामा॥ ६८६॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर की चितवन, मुस्कान एवं मुरली सभी कुछ जादू से भरी हुई है। तुम्हें निरन्तर इन सबसे बचकर

रहना चाहिये।

मुरली की तान जनि सुनो कोउ धामा।
कान में लगा लो रुई सब ब्रज बामा॥ ६८७॥

भावार्थ—कोई भी गोपी श्यामसुन्दर की वंशीध्वनि न सुने। सभी ब्रजगोपियाँ अपने कानों में रुई लगा लें।

आँखि जनि देखो कोउ श्याम सुखधामा।
आँख में है चुम्बक खींचे ब्रज बामा॥ ६८८॥

भावार्थ—हे ब्रजगोपियों! कोई भी श्यामसुन्दर के नेत्रों की ओर न देखो। कृष्ण की आँख में एक प्रकार का चुम्बक है जिसके द्वारा वे ब्रजांगनाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

मुख भी जो देखो देखो देखो आठु यामा।
किन्तु मुसकनि जनि देखो कोउ बामा॥ ६८९॥

भावार्थ—यदि कोई सखी श्यामसुन्दर के मुख की ओर देखना चाहती है तो भले ही निरन्तर देखती रहे किंतु उनके मुख की मुस्कान को कोई मत देखना।

वक्षःस्थल को भी देखो जनि बामा।
इच्छा बढ़े आलिंगन आठु यामा॥ ६९०॥

भावार्थ—हे सखी! श्यामसुन्दर के विशाल वक्षःस्थल की ओर भी भूलकर भी दृष्टिपात न करना। यदि तुमने उस

ओर देखा तो फिर निरन्तर प्रियतम के आलिंगन की अभिलाषा बढ़ती ही जायेगी।

चरण कमल भल देखो सुखधामा।
किन्तु मतवाली चाल देखो जनि बामा॥ ६९१॥

भावार्थ—हे सखी! सुखधाम श्यामसुन्दर के चरण कमलों का दर्शन भले ही करो परन्तु गजराज जैसी उनकी मतवाली चाल मत देखना। यदि तुमने देख ली तो तुम उस गज गति को देखकर मदमत्त हो जगत् से बेकाम हो जाओगी।

अंग अंग देखो बलि जाओ आठु यामा।
किन्तु श्याम तनु जनि छुओ कोउ बामा॥ ६९२॥

भावार्थ—अरी सखी! तुम निरन्तर प्रियतम कृष्ण के प्रत्यंग की शोभा को निरखकर अपने प्राणों को उस नटनागर पर न्योछावर कर दो, परन्तु कभी उनके अंग स्पर्श का विचार मत करना। यदि नहीं मानोगी तो फिर उस के जादू से बचना कठिन होगा।

अपनी सुनाओ दिन रात आठु यामा।
उनके मधुर बैन सुनो जनि बामा॥ ६९३॥

भावार्थ—हे सखी! यदि अपने जीवन को कलंक से बचाना चाहती हो तो नंदनंदन के मधुर वाग्जाल से बचकर रहना। यदि वे कभी मिलें तो उनको अपनी ही वाणी सुनाने का प्रयास करना। यदि तुम उनके मनोहर वचनों को सुन

लोगी तो फिर संसार के कार्य नहीं कर सकोगी। श्यामसुन्दर के शब्द सुनने के बाद फिर संसार का कोई शब्द अच्छा नहीं लगेगा।

इकली न जाओ कभु भूलि नंदगामा।
चलो नीची आँख करि सब ब्रज बामा॥ ६९४॥

भावार्थ—सखी! भूलकर भी कभी अकेली नंदगाँव न जाना। यदि जाना ही पड़े तो नेत्रों को नीचे करके जाना। श्यामसुन्दर के नेत्रों से नेत्र न मिलने पावें अन्यथा फिर तुम उनकी दृष्टि के जादू से बच नहीं सकोगी।

मारग में आके जब छेड़े सुखधामा।
वाते कोउ कछु जनि बोलो ब्रजबामा॥ ६९५॥

भावार्थ—यमुना-जल भरते समय अथवा दही, दूध बेचते हुए मार्ग में यदि चंचल कृष्ण तुम्हारे साथ छेड़छाड़ करे तो तुम उससे कुछ भी मत कहना। कुछ कहने से वह और अधिक चंचलता करेगा।

छेड़ने की यदि अति करे सुखधामा।
दारी के गारी दै के आगे बढ़ो बामा॥ ६९६॥

भावार्थ—यदि नंदलाल अत्यन्त चंचलता पूर्वक तुम्हारे साथ छेड़छाड़ की अति कर दें, तो तुम 'दारी के' गाली देकर अपने मार्ग में शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ जाना।

यदि बरबस मन मोहे सुखधामा।
यह बात काहू सों बतावो जनि बामा॥ ६९७॥

भावार्थ—सखी अन्य सखियों के प्रति कह रही है-यदि चंचल कृष्ण अपने अलौकिक माधुर्य से तुम्हें मोहित होने को विवश ही कर दें तो इस रहस्य को अन्यत्र कहीं प्रकट मत करना।

यदि चाहो बचना ही वाते ब्रज बामा।
ब्रजधाम छोड़ो जाओ अंत बसो गामा॥ ६९८॥

भावार्थ—एक सखी कहती है, यदि श्यामसुन्दर के जादू से बचना हो तो ब्रजधाम छोड़ कर किसी और ग्राम में निवास करो। (ब्रजधाम में रह कर तो श्याम के जादू से बचना असंभव ही है।)

देवी देवता की मनौती करो बामा।
अब कभु जन्म ना होवे ब्रजधामा॥ ६९९॥

भावार्थ—हे सखियों! देवी देवताओं को प्रसन्न कर उनसे याचना करो कि हमें कभी ब्रजमण्डल में जन्म न लेना पड़े। यदि ब्रज के अन्तर्गत कहीं जन्म हुआ तो मदनमोहन नंदपुत्र के रूप जाल से बचना असम्भव ही होगा।

उससे न बची कोउ उमा रमा बामा।
फिर भी यथा सम्भव बचो आठु यामा॥ ७००॥

भावार्थ—शिव की अर्धांगिनी पार्वती एवं महालक्ष्मी भी कृष्ण के तीव्र आकर्षण से नहीं बच सकीं। फिर भी तुम उस नंदपुत्र से बचने की यथा संभव चेष्टा निरन्तर करती रहो।

फिर भी जो बन जाओ उनकी ही बामा।
औरों को बनाओ उनकी घूमि धामा॥ ७०१ ॥

भावार्थ—हे सखी! यदि तुम प्रयत्न करने पर भी नंदनंदन के अपूर्व सौन्दर्य, माधुर्य एवं प्रेम-जाल से न बच सको एवं उन पर अपना तन मन प्राण लुटाकर उनकी बन ही जाओ तो फिर ब्रजमंडल में घूमघूम कर अन्य सखियों को भी उन प्रियतम की गुणावली सुनाकर श्यामसुन्दर की ही बना देना।

अपना बनावे न बनावे सुखधामा।
तुम उन्हें अपना बनाओ ब्रज बामा॥ ७०२ ॥

भावार्थ—हे सखियों! श्यामसुन्दर तुम्हें अपना मानें या न मानें, इसकी चिंता न करो। तुम तो उनको अपना बनाने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानो।

कारे के पाछे काहे परी गोरी बामा।
द्वै तात मात वारो जाने सब धामा॥ ७०३ ॥

भावार्थ—रस पूर्ण विनोद करती हुई एक ब्रजगोपी किसी अन्य ब्रजांगना से कहती है-सखी! तू अत्यन्त गौर वर्ण की सुन्दरी है और कृष्ण काला है। भला उसके साथ तूने प्रेम-

संबंध क्यों जोड़ा ? फिर उसके दो पिता (वसुदेव, नंद) एवं दो माता (देवकी, यशोदा) भी सारे ब्रज में प्रसिद्ध हैं।

कारे ते प्यार काहे करे ब्रजबामा।
वो तो ग्वारिया गँवार चरवाहा गामा॥ ७०४॥

भावार्थ—हे सखी ! कृष्ण वर्ण से काले हैं केवल इतना ही नहीं। उनके कर्म भी कोई विशेष गौरव पूर्ण नहीं हैं। ग्वाल बालों के साथ गाँव गाँव गायें चराना ही उनका कार्य है। तूने क्या सोच समझ कर उनसे प्रेम-संबंध स्थापित किया।

कामरी वारे पै का मरी जात बामा।
वो तो घर घर चोरी करे ब्रज धामा॥ ७०५॥

भावार्थ—अरी सखी ! काले रंग की कामरी ओढ़ने वाले कृष्ण के ऊपर तू क्यों बलिहार जा रही है। कारी कामरी के समान उनके कर्म भी काले हैं। नंदनंदन बाल्यावस्था से ही ब्रज में घर घर चोरी करते फिरते हैं।

कारे ते काहे जोरा नात ब्रज बामा।
तेरी जैसी वाके हैं अनेकों ब्रज धामा॥ ७०६॥

भावार्थ—अरी सखी ! तूने अपना प्रेम-संबंध उस काले कृष्ण से क्यों जोड़ा है ? वह किसी एक का नहीं है। उसके तो तुम्हारी जैसी असंख्य प्रेयसी-गण हैं।

कान्हा को पिया माना सुना नाहिं बामा।
शूर्पणखा के नाक कान कटवाया रामा॥ ७०७॥

भावार्थ—हे सखी! तू नहीं जानती कि राम रूप में इन्हीं कृष्ण ने अपने से प्रेम करने वाली शूर्पणखा के नाक कान कटवा लिये थे। फिर तूने कृष्ण को अपना प्रियतम कैसे बना लिया? क्या ये तेरे प्रति प्रेम का निर्वाह कर सकेंगे?

लठधारी पै हो वारी काहे ब्रज बामा।
वो तो चौर जार शिखामणि ब्रज धामा॥ ७०८॥

भावार्थ—अरी सखी! उस लकुटी धारण करने वाले कृष्ण पर क्यों बलिहार जा रही है। वह तो ब्रज में चोर-जार शिखामणि (चोरों और लम्पटों के सरदार) के रूप में प्रसिद्ध है।

तेरे तो पति हैं तू थी पतिव्रता बामा।
तूने क्यों बनाया पिया श्याम छलधामा॥ ७०९॥

भावार्थ— सखी! तू तो पतिव्रता थी। तेरे पति जीवित भी हैं। तूने श्यामसुन्दर को अपना प्रियतम क्यों बनाया?

तू तो थी चतुर क्यों ठगाई गइ बामा।
कान्हा प्यार करे छोड़े जाय और ठामा॥ ७१०॥

भावार्थ—सखी कहती है-हे सखी! तू तो चतुरा थी फिर कृष्ण की ठगाई में कैसे आ गई। कृष्ण एक से प्रेम करता है,

फिर उसे छोड़कर दूसरी से करने लगता है।

तूने चुना पिया जैसा सालिगरामा।
तू तो गोरी जोरी नहिं नीकी बनी बामा॥ ७११॥

भावार्थ—सखी! तू अत्यन्त गौरवर्ण की सुन्दरी थी। तूने काले कृष्ण को अपना प्रियतम बनाया। यह काले और गोरी की जोड़ी अच्छी नहीं बनी।

कारा गोरा अच्छा बुरा जो हो सुखधामा।
लागी नाहिं छूटे चाहे प्राण जाये बामा॥ ७१२॥

भावार्थ—उपर्युक्त सखी की बात का उत्तर देते हुए प्रेम मार्ग की विलक्षणता को समझने वाली गोपी उसे उत्तर देती है-सखी! तू नहीं जानती। प्रेम अच्छा बुरा, काला गोरा नहीं देखता। मेरा प्रेम कृष्ण से हो गया। अब चाहे प्राण चले जाँय, पर यह प्रेम-संबंध तो अमर ही रहेगा।

जिसने भी देखा श्याम बिकी बिनु दामा।
तेरा भी गर्व चूर-चूर होगा बामा॥ ७१३॥

भावार्थ—हे सखी! जिसने एक बार भी श्यामसुन्दर की बाँकी झाँकी का दर्शन किया है, वह जीवात्मा स्वयं को उसके हाथों अर्पण कर देती है। बिना मोल के ही नंदनंदन उसे खरीद लेते हैं। कभी नंदनंदन कृष्ण तेरे गर्व को अवश्य ही धूल में मिलाकर तुझे भी अपनी बिना मोल की दासी बना

लेंगे।

मैं तो नाहिं बिकी देखा श्याम नन्दगामा।
तेरे बड़े पाप आड़े आये होंगे बामा॥ ७१४॥

भावार्थ—गोपी ने बड़े गर्व से उत्तर दिया मैंने तो नन्दगाँव में श्याम को देखा। मेरे ऊपर तो उसका जादू नहीं चला। इस पर सखी ने उत्तर दिया-तुम्हारे पूर्व जन्म के महान् पापों के कारण तुम्हारा हृदय श्रीकृष्ण के प्रति आकर्षित नहीं हुआ होगा।

मेरा काम रोकने का था रोका बामा।
नहीं मानो रोते बीतेगा आठु यामा॥ ७१५॥

भावार्थ—पुनः अनुभवी गोपी अपनी सखियों से कहती है-मैंने तो तुम्हें समझा बुझाकर नंदलाल के जाल में फँसने से बचाना चाहा था परन्तु यदि तुम फिर भी मेरी बात नहीं स्वीकार करती हो तो अपने किये का फल भोगोगी। तुम्हें नंदनंदन से प्रेम कर सदा के लिये रोना ही हाथ लगेगा।

तेरे रोकने ते नहिं मानूँ कह बामा।
रोने में जो रस वह नाहिं मोक्ष धामा॥ ७१६॥

भावार्थ—हे सखी! मैं श्यामसुन्दर से प्रेम अवश्य ही करूँगी। तुम्हारे द्वारा निवारण किये जाने से मैं रुकूँगी नहीं। प्रियतम श्यामसुन्दर के वियोग में रोने में जो सुख है,वह मोक्ष

में भी नहीं है।

लोक वेद कुल कानि तजि अब बामा।
खुल्लमखुल्ला प्यार करें सुखधामा॥ ७१७॥

भावार्थ—हे सखी! अब तो मैं लोक, वेद एवं कुल की मर्यादा का भी परित्याग कर निर्भय होकर श्यामसुन्दर से प्रेम करूँगी।

मन ते बनाया पिया श्याम सुखधामा।
तन ते न होवे पतिव्रतधर्म बामा॥ ७१८॥

भावार्थ—अपने शरीर के स्पर्श से श्रीकृष्ण को रोकती हुई एक विवाहित ब्रजगोपी कहती है- हे सुखसागर श्यामसुन्दर! मैं पतिव्रता हूँ। मैनें तुम्हें मन से ही प्रियतम माना है, शरीर से नहीं, अतएव मेरे शरीर को छूकर मेरे पतिव्रत धर्म को भंग नहीं करो। श्रीकृष्ण कहते हैं, कोई भी धर्म मन से ही होता है। जब तूने मन से मुझे अपना प्रियतम मान लिया तो तू पतिव्रता कहाँ रही? अतएव मुझे क्यों रोकती है।

परम पति ते प्यार करो आठु यामा।
पतिव्रत धर्म भंग होय नाहिं बामा॥ ७१९॥

भावार्थ—ग्रन्थकार कहते हैं, हे गोपियों! तुमने तो परम पति 'पतिं पतीनाम्' से प्रेम किया है। तुम्हारा पतिव्रत भंग नहीं होगा अपितु उस कर्मफलदाता की ओर से दिव्य-प्रेम का पुरस्कार ही प्राप्त होगा। गोपियों! तुम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण

से ही रात-दिवस अनन्य प्रेम करो।

पतिव्रत धर्म आदि त्यागो ब्रजबामा।
तब हो अनन्य व्रत श्याम सुखधामा॥ ७२०॥

भावार्थ—हे ब्रजांगनाओ! जब तुम पतिव्रत आदि सभी धर्मों का पूर्णतः त्याग कर श्रीकृष्ण से प्रेम करोगी, तभी श्रीकृष्ण के प्रति तुम्हारा अनन्य प्रेम सिद्ध होगा। 'सर्व धर्मान् परित्यज्य... ।।'

तू तो लोक वेद ते परे है सुखधामा।
मैं तो जग की हूँ जग में हूँ कह बामा॥ ७२१॥

भावार्थ—किसी गोपी ने कभी कृष्ण से कहा-हे प्रियतम! तुम तो लोक-वेद से अतीत हो। मैं तो संसार के बंधनों में हूँ, मुझे संसार में ही रहना है। फिर किस प्रकार लौकिक वैदिक धर्मों का परित्याग कर दूँ?

तो को पाप पुण्य नाहिं व्यापे सुखधामा।
मोको डर नरक का कह ब्रज बामा॥ ७२२॥

भावार्थ—हे प्रियतम! तुम तो शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य से अतीत हो परन्तु मुझे तो लोक-वेद के त्याग से नरक भोगना पड़ेगा।

गँवार ग्वार संग किया आठु यामा।
मारग में मोते कहे प्यार करु बामा॥ ७२३॥

भावार्थ—किसी ब्रज-गोपी ने अपनी सखी से अपनी अन्तरंग कथा कही-हे सखी! यह कृष्ण पशु चराने वाले गँवार ग्वालों के साथ रहता है। अतएव प्रेम की रीति से सर्वथा अनभिज्ञ है। मैं मार्ग में जा रही थी। वहीं आकर मुझसे बोला मुझसे प्यार कर।

ढोर चराना जाने बस सुखधामा।
खुल्लम खुल्ला कहे मेरी प्यारी बामा॥ ७२४॥

भावार्थ— नंदनंदन केवल गायें चराना ही जानते हैं, प्रेम की रीति नहीं जानते। सबके सामने ही मुझसे 'प्यारी' कहकर बोलने लगते हैं। इन्हें लाज संकोच तो जैसे छू भी नहीं गया।

कालि ही आई ससुराल नन्दगामा।
आज आयो श्याम कह्यो 'मेरी प्यारी बामा'॥ ७२५॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी अपनी सखी से कह रही है-मैं कल ही अपनी ससुराल (नंदगाँव) आई थी और आज ही मेरे घर आकर कृष्ण ने एकांत में मुझसे 'मेरी प्यारी' ऐसा कहा।

बार बार कहे मोहिं 'प्यारी' सुखधामा।
लाज न आवे मैं पराई ब्याही बामा॥ ७२६॥

भावार्थ—कोई नववधू अपनी सखी से कहती है-श्यामसुन्दर जब देखो तभी मुझे 'प्यारी' कहकर सम्बोधित

करते हैं। मैं विवाहिता हूँ, पराई स्त्री को प्यारी कहते हुए नन्दपुत्र को लज्जा नहीं आती।

ब्याही ते न कहा करो 'प्यारी' सुखधामा।
सुनेगा जो पति लठ मारे कहे बामा॥ ७२७॥

भावार्थ—एक विवाहिता गोपी ने छेड़खानी करने वाले नंदकिशोर से कहा—हे सुखनिधान श्यामसुन्दर! तुम मुझ विवाहिता को 'प्यारी' कह कर सम्बोधित न किया करो। यदि मेरे पति ने कभी सुन लिया तो लाठी से तुम्हारी पिटाई करेगा।

ब्याही ते प्यार क्यों न करूँ ब्रज धामा।
ब्याही ने त्यागा लोक वेद धर्म बामा॥ ७२८॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर उपर्युक्त सखी के वचनों का उत्तर देते हुए कहते हैं-जिस विवाहिता गोपी ने मेरे निमित्त लोक, वेद धर्म सभी का परित्याग कर मुझसे प्रेम किया है मैं भला उससे प्रेम क्यों न करूँ?

तू मोहिं 'प्यारी' क्यों कहे कह बामा।
जार ते प्यार महापाप ब्रज धामा॥ ७२९॥

भावार्थ—एक भोली भाली गोपी अपने प्रति प्रेम करने वाले कृष्ण से कहती है-हे कृष्ण! मुझे प्यारी कहकर सम्बोधित क्यों करते हो? इस पवित्र ब्रजधाम में पर-पुरुष से प्यार करना

महापाप माना जाता है।

तोको मैं पति कैसे मानूँ सुखधामा।
मेरा पति हट्टाकट्टा बैठा है गामा॥ ७३०॥

भावार्थ—किसी विवाहिता गोपी के समक्ष श्यामसुन्दर ने अपना प्रेम-प्रस्ताव रखा। गोपी ने उत्तर दिया-हे श्यामसुन्दर! मेरा हट्टा कट्टा पति जीवित है, मैं तुम्हें अपना पति कैसे बना लूँ।

निलज कहे मैं हूँ तेरा परम पति बामा।
चोरी चोरी प्यार करु कह सुखधामा॥ ७३१॥

भावार्थ—सखी कहती है-यह कृष्ण कितना निर्लज्ज है? सभी गोपियों से कहता है-मैं ही तेरा परम पति हूँ तू मुझसे छिपकर प्रेम कर।

लोक लाज छोड़ मेरी बन जा ब्रज बामा।
मेरे जैसा पिय नहिं मिले ब्रजधामा॥ ७३२॥

भावार्थ—गोपी कह रही है-कृष्ण कहता है-हे ब्रजबामा! संसार की लज्जा छोड़कर तू मेरी बन जा। ब्रज में मेरे जैसा प्रियतम तुझे और कहीं नहीं मिलेगा।

सब सों कहत फिरे मेरी प्यारी बामा।
किन्तु ब्याह काहू सों ना करे सुखधामा॥ ७३३॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी अपनी सखी से कह रही है-कृष्ण सभी गोपियों को प्यारी कहकर सम्बोधित करता है परन्तु विवाह किसी के साथ नहीं करता।

सबते ही प्यार करे कैसे सुखधामा।
तेरे भी अनेक सुत प्यार करे बामा॥ ७३४॥

भावार्थ—किसी गोपी ने श्यामसुन्दर से प्रश्न किया-तुम अकेले अनेक गोपियों से प्रेम कैसे कर लेते हो? श्यामसुन्दर ने उत्तर दिया-तू भी तो अपने अनेक पुत्रों से एक अकेली ही प्रेम कर लेती है, इसी प्रकार मैं भी एक होकर अनेक से प्रेम करता हूँ।

चलो सखि दधि बेचें सब नन्दगामा।
दधि बेचें श्याम मिलें इक पंथ दो कामा॥ ७३५॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें एकत्र होकर योजना बनाती हैं –हे सखी! सब मिलकर दही बेचने के लिये नंदगाँव चलो हमारा दही भी बिक जायेगा , श्यामसुन्दर के दर्शन भी हो जायेंगे। इस प्रकार 'एक पंथ दो काम' हो जायेंगे।

दही बेचने को जाएँ सखी नन्द गामा।
दही लो न कहें कहें श्याम ले लो बामा॥ ७३६॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ दही बेचने के बहाने से नंदलाल का दर्शन करने नंदग्राम जाती हैं। 'दही लो' न कहकर प्रेम की समाधि में 'श्याम लो श्याम' ऐसा पुकारती हैं।

दधि दान काहे माँगो श्याम ब्रज बामा।
श्याम कह खट्टो है या मीठो चखुँ गामा॥ ७३७॥

भावार्थ—गोपियाँ कृष्ण से पूछती हैं–तुम हमसे दही का दान क्यों माँगते हो? श्यामसुन्दर उत्तर देते हैं–मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम खट्टा दही बेचती हो या मीठा।

दधि बेचन को गई थी नन्दगामा।
वाने आँख ऐसी मारी मर गई बामा॥ ७३८॥

भावार्थ—कोई गोपी अपनी सखी से बताती है–अरी सखी! एक दिवस मैं दही बेचने हेतु नंदगाँव गई थी। वहाँ अचानक यशोदानंदन मिल गये। उन्होंने न जाने अपने नेत्रों में कैसा जादू भरकर मेरी ओर देखा कि बस मेरे तो प्राणों पर ही

चोट लग गई है।

ऐसी आँख मारे श्याम जादूगर बामा।
जिये भी न मरे भी न जरे आठु यामा॥ ७३९॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर जादूगर हैं। वे अपने नेत्रों से ऐसा जादू करते हैं कि जिस पर यह जादू हो जाता है वह न तो जीवित ही रह पाता है, न मरता ही है, निरन्तर विरहाग्नि में जलता ही रहता है। (प्रेम की अग्नि हृदय में धधकती रहती है।)

जाकी आँखि लगी नाहिं आँखि लगी बामा।
ऐसी लगे आग बामा जरे आठु यामा॥ ७४०॥

भावार्थ—जिसने नंदनंदन का दर्शन नहीं किया ,वही सुख से सो सकती है। जिसने नेत्र भरकर श्यामसुन्दर का दर्शन एक बार भी कर लिया उसके हृदय में तो विरह की ऐसी आग धधकती है कि फिर वह रात दिन उसी अग्नि में जलती रहती है।

नैन-नैन लड़े दोउ श्याम अरु बामा।
अचरज यह आग लगी उरधामा॥ ७४१॥

भावार्थ— सखी के नेत्र एवं श्यामसुन्दर के नेत्र परस्पर मिले परन्तु आग हृदय में लगी, यह कैसा आश्चर्य है?

आँख लड़ाने का है शौक उसे बामा।
ऐसी लड़ाओ आँख रोता जाय गामा॥ ७४२॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी दूसरी से कहती है-अरी सखी! नंद-पुत्र को आँख से आँख लड़ाने का बड़ा चसका लगा हुआ है। तुम भी ऐसे नेत्र लड़ाओ कि बस! वह रोता हुआ ही अपने गाँव वापस लौट जाय।

आँख ना मिलाना कोऊ वाते ब्रजधामा।
आँख में है जादू टोना बचो सब बामा॥ ७४३॥

भावार्थ—किसी अन्य सखी ने उपरोक्त बात के विरोध में कहा, नहीं, ब्रज में कोई गोपी नंदनंदन की दृष्टि से दृष्टि न मिलाना। सब ऐसा कहते हैं कि उस कृष्ण के नेत्रों में कुछ ऐसा जादू है कि जो उसे एक बार देख लेता है, वह फिर उसका ही हो जाता है।

जिसने भी आँख लड़ाई ब्रजधामा।
ऐसी लागी आग बुझे ना कभु बामा॥ ७४४॥

भावार्थ—जिस किसी ब्रजांगना ने एक बार भी नेत्रों से श्यामसुन्दर के नेत्र देख लिये-उसके हृदय में ऐसी विरहाग्नि प्रज्ज्वलित होती है कि वह अग्नि फिर कभी बुझती ही नहीं।

देखूँगी हजार बार श्याम सुखधामा।
परिणाम जो भी होगा भोग लूँगी बामा॥ ७४५॥

भावार्थ—प्रेम के पथ पर दृढ़तापूर्वक चलने वाली किसी सखी ने दूसरी के द्वारा निवारण किये जाने पर उत्तर दिया- अरी सखी! सुखधाम नंदपुत्र को मैं अपने नेत्रों से हजारों बार देखकर अपने नेत्रों को सफल करूँगी। दर्शन का परिणाम जो भी होगा उसे बाद में भोग लूँगी।

नैनों ते श्याम नैन देखो जनि बामा।
नैन नैन लड़ें आग लगे उर धामा॥ ७४६॥

भावार्थ—गोपी ने पुनः सावधान करते हुये कहा, अरी सखी! अपने नेत्रों से श्यामसुन्दर के रसीले नेत्रों को मत देखना। नेत्र परस्पर मिलते हैं, फल हृदय को भोगना पड़ता है। प्रथम नेत्रों से दर्शन होगा, फिर वियोग की अग्नि हृदय में प्रज्ज्वलित होगी। तब तू दुःख से छटपटायेगी। उस समय तुझे उस दुःख से कौन मुक्त करेगा?

देखें तो वो सैन चलावें छलधामा।
ना देखें तो विरह सतावे ब्रज बामा॥ ७४७॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें परस्पर अपनी स्थिति का वर्णन करती हुई कहती हैं-यदि हम श्रीकृष्ण की ओर दृष्टिपात करती हैं तो वे अपनी बंक चितवनि के संकेतों से हमें आहत कर देते हैं और यदि हम नंदनंदन का दर्शन नहीं करतीं तो उनका विरह हमें व्यथित करता है।

देखने ते मन को चुरावें सुखधामा।
देखे बिनु प्राण जाय कहा करें बामा॥ ७४८॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ परस्पर कहती हैं-यदि श्याम सुन्दर का दर्शन करने जायें तो वे हमारे चित्त को चुरा लेते हैं। यदि दर्शन न करें तो भी उनके दर्शन के बिना हमारे प्राण निकलने लगते हैं।

श्याम के नैन ते लड़ावो नैन बामा।
मीठी मीठी वेदना मिलेगी उरधामा॥ ७४९॥

भावार्थ—प्रेम-संबंध जोड़ने का निषेध करने वाली गोपी से प्रेम का रसास्वादन करने वाली ब्रजांगना कहती है-अरी सखी! श्यामसुन्दर के नेत्रों से नेत्र मिलाने वाली सखियाँ धन्य हैं-वे दर्शन करते समय उस मनोहर रूप का नेत्र पुटों से पान करती हैं, पुनः उस रूप को हृदय में धारण कर प्रेम की मीठी पीड़ा में भी विलक्षण रस का अनुभव करती हैं।

आँख लड़ावो वाते डरो जनि बामा।
याते प्रेमानन्द भर जाये उरधामा॥ ७५०॥

भावार्थ—अरी सखी! निर्भय होकर श्यामसुन्दर की प्रेम भरी चितवन को देखो। नेत्रों से उनके रूप माधुर्य का दर्शन करने से हृदय प्रेम और आनंद से परिपूर्ण हो जाता है।

नैन ते नैन मिले चैन मिले बामा।
विलग भये ते आग लगे उरधामा॥ ७५१॥

भावार्थ— अरी सखी! श्यामसुन्दर के नेत्रों से जब नेत्र मिलते हैं तब एक विलक्षण तृप्ति प्राप्त होती है। किन्तु जब पुनः नेत्र उनके नेत्रों से पृथक् होते हैं, तब हृदय में विरह की अग्नि धधकने लगती है।

मिले नैन नैन मिले चैन ब्रज बामा।
करके नैन नैन रैन दिन आठु यामा॥ ७५२॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी अपनी अंतरंगा सखी के प्रति श्रीकृष्ण-दर्शन से होने वाली अवस्था का वर्णन करती है। अरी सखी! जब श्यामसुन्दर के नेत्रों की ओर मेरे नेत्रों ने देखा तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि सदा सदा का मनभाया हो गया। अतीव आनन्द एवं शान्ति की प्राप्ति हुई। किन्तु अब वियोगकाल में श्यामसुन्दर के वही चैन देने वाले नेत्र मेरे नेत्रों में निरन्तर करकते रहते हैं अर्थात् मीठी-मीठी वेदना प्रदान करते रहते हैं। मुझे अब एक पल को भी चैन नहीं मिलता।

नंदछोरा मैंने चोरा तोरा कहा गामा।
जाते मोरा कोरा चित चोरा कह बामा॥ ७५३॥

भावार्थ—ब्रजांगना कृष्ण से कहती है-हे नंदपुत्र! मैंने तुम्हारा क्या चुराया था, जो तुमने मेरा पवित्र मन चुरा लिया।

चोरी चोरी चित चोरा जोरा नात बामा।
पति जो सुनेगा मारे धरि लठ धामा॥ ७५४॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी श्रीकृष्ण से कहती है-तुमने चोरी से मेरा चित्त चुराकर मुझसे प्रेम संबंध जोड़ा है। मेरा पति यदि सुन लेगा तो तुम्हारी लाठी से पिटाई करेगा।

वज्र ते कठोर है शरीर मेरा बामा।
मारा करे लठ चाहे कोई आठु यामा॥ ७५५॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर सखी से कह रहे हैं-सखी! मेरा शरीर तो वज्र से भी अधिक कठोर है। तुम्हारा पति निरन्तर मुझे लाठी मारे तो भी मेरा क्या बिगाड़ लेगा।

लठ का न डर डर अपयश धामा।
बिना एक सात लगावें ब्रज बामा॥ ७५६॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर कहते हैं-सखी! मुझे कोई गोप लाठी से मारेगा, इस बात का भय मुझे बिलकुल नहीं है। थोड़ा सा यही भय है कि ब्रज-गोपियाँ एक की सात बात करके फैलाती हैं।

मोरा चित चोरा नंदछोरा नंदगामा।
तोरा चित चोरा नहिं कैसे बची बामा॥ ७५७॥

भावार्थ—कोई सखी दूसरी सखी से कहती है- मेरा चित्त तो नंदग्रामवासी नंदपुत्र ने चुरा लिया है। तू उससे कैसे

बच गई। तेरा चित्त उसने क्यों नहीं चुराया?

चोरी करत फिरे नित ब्रज धामा।
कभू कंस कारागार डार देगा बामा॥ ७५८॥

भावार्थ—कोई गोपी अपनी सखी से कहती है-सखी यह नटखट नंदकिशोर नित्य ही ब्रजधाम में चोरी करता रहता है। कभी कंस को पता चल गया तो अपने कारागार में इसे बंद कर देगा।

नंद यशोदा साहूकार ब्रज धामा।
उनके घर चोर कैसे पैदा हुआ बामा॥ ७५९॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ परस्पर चर्चा कर रही हैं- ब्रजमंडल में नंद एवं यशोदा तो साहूकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। आश्चर्य है-उनके घर में यह चोर कृष्ण कैसे उत्पन्न हो गया?

मोते कह चोरी चोरी प्यार करु बामा।
मोहुँ सिखावे चोरी चौर सरनामा॥ ७६०॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी अपनी सखी से कहती है, श्यामसुन्दर मुझसे कहते हैं-चोरी चोरी मुझसे प्रेम कर। वह चौर शिखामणि मुझे भी चोरी करना सिखाता है।

दूध दही माखन चुराओ ब्रज धामा।
चित को चुराओ जनि कहें ब्रज बामा॥ ७६१॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ श्रीकृष्ण से कहती हैं-तुम हमारे

दूध, दही, मक्खन आदि भले ही चुराओ, परन्तु हमारे चित्त हमारे पास ही रहने दो। इन्हें न चुराया करो।

परमहंस चितचोर है तव नामा।
मोरा चित काहे चोरा मैं तो गृही बामा॥ ७६२॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी श्रीकृष्ण से कहती है- हे गोविंद! तुम्हारा नाम परमहंस-चितचोर है अर्थात् तुम ज्ञानी परमहंसों (शुक, सनकादि) के चित्त चुराते हो। मैं तो गृहस्थ में रहने वाली एक गोपी थी। तुमने मेरा चित्त क्यों चुरा लिया?

मोरा चित चोरा बरबस छल धामा।
कौन मुँह लै के जाऊँ ससुराल गामा॥ ७६३॥

भावार्थ—हे छली नंदकिशोर! तुमने अत्यन्त कपटपूर्ण ढंग से विवश करके मेरा हृदय तो मुझसे छीन लिया। अब मैं अपने पति के निकट क्या मुख दिखाऊँगी? मेरा हृदय तुम्हारे निकट ही रहेगा। जब यह सत्य मेरे पति को ज्ञात होगा तब ससुराल में मेरा निर्वाह कैसे होगा?

चितचोरा अच्छा किया चौर सरनामा।
वापस न देना कभु कह ब्रज बामा॥ ७६४॥

भावार्थ—सखी कहती है, हे ब्रजराज किशोर! तुम तो

चोरों के शिरोमणि हो। यदि मेरा मन मुझसे छीन लिया तो अच्छा ही किया, परन्तु अब कभी उसे फिर मुझे वापस न करना।

भोरे भोरे कोरे कोरे चित चोरें गामा।
सुनेंगी तो बाँध देंगी यशुमति बामा॥ ७६५॥

भावार्थ— एक सखी कहती है, हे कृष्ण! अत्यन्त भोली भाली गोपियों के परम पवित्र चित्त चुराते फिरते हो। यशोदा मैया यदि सुन लेंगी तो तुम्हें ऊखल से बाँध देंगी।

छोरी छोरा चित चोरा तोरा यही कामा।
सेर को मिलेगा कभु सवा सेर श्यामा॥ ७६६॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी श्रीकृष्ण से कहती है-हे नंदनंदन, तुम्हारे पास एक यही काम है कि गोपी, ग्वाल बालों के चित्त चुराते रहते हो। कभी तुम्हारा चित्त चुरानेवाला भी तुम्हें प्राप्त होगा।

अबला का चित चोरा कौन बड़ा कामा।
चित चोर मानें जब चित चोरो श्यामा॥ ७६७॥

भावार्थ—कोई सखी श्यामसुन्दर से कह रही है- तुमने बेचारी सीधी सादी गोपी का चित्त चुरा लिया, इसमें तुम्हारी क्या वीरता प्रमाणित हुई? जब तुम श्रीराधा के चित्त को चुराकर दिखाओगे तब मैं तुम्हें वास्तविक चितचोर समझूँगी।

भावार्थ—कोई गोपी अपनी सखी से कह रही है उस छली नंदलाल का मेरे सामने नाम न लेना यदि चर्चा ही करनी है तो कोई दूसरी चर्चा करो। श्यामसुन्दर की चर्चा तो मैं भूलकर भी नहीं करना, सुनना चाहती।

श्याम को अकेली मिली कुंजगली बामा।
चुनरी को छीनि गये भाजि निज धामा॥ ७७९॥

भावार्थ—एक दिन श्यामसुन्दर ने ब्रज की किसी गली में किसी सखी को अकेली देखा। नटखट ने उसकी चुनरी छीन ली और शीघ्रता से घर भाग गये।

कालि तूने चुनरी छीनी निज गामा।
आज पीत पट वेनु छीनी हम बामा॥ ७८०॥

भावार्थ—जिस गोपी की चुनरी श्रीकृष्ण ने छीनी थी, वह कह रही है-कल तुमने मेरी चुनरी छीनी थी,इसलिये आज हम गोपियों ने तुम्हारा पीताम्बर एवं वंशी छीन ली।

पीत पट जनि देहु राखो निज धामा।
बेनु को तो दे दो कर जोरूँ ब्रज बामा॥ ७८१॥

भावार्थ—पीताम्बर एवं वंशी सखी द्वारा छीन लिये जाने पर नंदनंदन बोले-हे सखी! तुम मेरा पीताम्बर भले ही अपने घर ही रख लो परन्तु मेरी वंशी दे दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ।

ओझा को बुलाओ कोउ भूत लग्यो बामा।
भूत नहिं नन्दपूत लग्यो कह श्यामा॥ ७७५॥

भावार्थ—किसी प्रेम-दीवानी गोपी को विरह-विकल अवस्था में देखकर उसके परिवारी जनों ने भूत भगाने वाले ओझा को बुलाने के लिये कहा -यह सुन कर किशोरी जी बोलीं -सखी को भूत नहीं लगा। इस पर नंदपुत्र सवार है।

जित देखुँ तित दीखे श्याम आठु यामा।
अस कछु करु भूलें कछु क्षण बामा॥ ७७६॥

भावार्थ—गोपियाँ परस्पर कह रही हैं जिधर दृष्टि जाती है उधर ही निरन्तर श्यामसुन्दर का दर्शन होता है। कुछ ऐसा उपाय करो, जिससे कुछ समय के लिये तो श्यामसुन्दर विस्मृत हो जायँ।

नन्दलाल देखा नहीं बीते चार यामा।
रात कैसे काटेंगी देखे बिनु बामा॥ ७७७॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम करने वाली ब्रजगोपियाँ परस्पर कहती हैं—हे सखी! आज का दिन बड़ा ही अशुभ था। आज हमें नंदनंदन के दर्शन नहीं प्राप्त हुए। हमारी रात्रि किस प्रकार व्यतीत होगी?

बामा कहे नाम ना लो श्याम छलधामा।
और कोई बात करो भर पाइ बामा॥ ७७८॥

चितचोर श्याम! तुमने हमारे चित्त क्यों चुरा लिये। चित्त के अभाव में हम गृह-कार्य किस प्रकार सम्पन्न करें?

चित था अनादि एक साथी सुखधामा।
उसे भी चुराया अब कहाँ जायें बामा॥ ७७२॥

भावार्थ—एक चित्त ही तो अनादि काल से जीवात्मा का साथी था, उसको भी तुमने चुरा लिया। अब हम किसका अवलम्ब लें?

मेरा अशुद्ध चित चोरा सुखधामा।
वो तो तुम्हारे नहिं आवे कछु कामा॥ ७७३॥

भावार्थ—हे सुख-सागर कृष्ण! मेरा मलिन मन तुमने चुराया, वह मलिन मन तुम्हारे किस काम का है ?क्योंकि तुम तो दिव्य चिन्मय स्वरूप वाले हो।

चित ने घुमाया लख चौरासी बामा।
भला किया चित को चुराया सुखधामा॥ ७७४॥

भावार्थ—कोई गोपी दूसरी गोपी से कह रही है -इस चित्त ने ही तो जीव को चौरासी लाख योनियों में भ्रमण कराया है। यदि श्रीकृष्ण ने तेरे चित्त को चुरा लिया तो अच्छा ही तो किया, अब तुझे चौरासी में नहीं जाना पड़ेगा।

तोरा चित चोरा बरसाने वारी श्यामा।
खिसिया के मोरा चित चोरा कह बामा॥ ६६८॥

भावार्थ—एक सखी ने श्यामसुन्दर से कहा, सत्य यह है कि श्री वृषभानुकिशोरी ने तुम्हारा मन चुरा लिया है। इसी कारण खिसिया कर तुमने मेरा मन चुरा लिया।

चोर साकार निराकार चित बामा।
कैसे किया फिर ऐसा विपरीत कामा॥ ६६९॥

भावार्थ—ब्रज-गोपी का चित्त निराकार है। चुराने वाले श्रीकृष्ण साकार हैं। यह विपरीत क्रिया अर्थात् साकार ने निराकार वस्तु की चोरी की, कैसे क्रियान्वित हुई।

अगनित चित चोरा छोरा ब्रज धामा।
बिना चित कैसे करें ध्यान श्याम श्यामा॥ ७७०॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ परस्पर कह रही हैं- ब्रजधाम में नंद के लाड़िले ने असंख्य चित्तों की चोरी की है। बिना चित्त के हम अपने ध्येय युगल-सरकार का ध्यान किस प्रकार करें?

चित को चुराया काहे चितचोर नामा।
चित के बिना कर्म कैसे करें बामा॥ ७७१॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रति कहती हैं-हे

चुनरी प्रथम लावो जावो निज गामा।
पाछे पीत पट बेनु माँगो कह बामा॥ ७८२॥

भावार्थ—जिस गोपी की चुनरी श्यामसुन्दर द्वारा चुराई गई थी, वह कहती है-हे नटखट कृष्ण! पहले अपने गाँव जाकर मेरी चुनरी लेकर आओ, तब अपना पीताम्बर एवं वंशी माँगना।

रोज रोज छेड़ें श्याम एक एक बामा।
सब मिलि बाँधि लो चलो ढिंग श्यामा॥ ७८३॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ परस्पर कह रही हैं -श्यामसुन्दर प्रतिदिन ही किसी न किसी गोपी के साथ छेड़छाड़ करते हैं। अतएव सब मिलकर इनको बाँध लो और भानुकिशोरी के निकट ले चलो।

छेड़ा छेड़ी छोड़ो श्याम कहलाया श्यामा।
मानो न तो दुर्गति करें ब्रज बामा॥ ७८४॥

भावार्थ—श्रीराधा ने भी नंदनंदन की अत्यन्त नटखटपन की चर्चा जब सुनी तो अपनी किसी सखी द्वारा उन्हें संदेश भेजा-हे श्यामसुन्दर! अधिक ऊधम न किया करो। यदि अपनी चंचलता कम नहीं करोगे तो ब्रज-गोपियाँ तुम्हारी दुर्गति करेंगी।

अति अति बुरी कान्ह कह ब्रज बामा।
एक दिन भोगना पड़ेगा परिणामा॥ ७८५॥

भावार्थ—ब्रजगोपी कृष्ण से कहती है-हे कृष्ण 'अति' अच्छी नहीं होती। तुमने जो नटखटपन की अति की है, इसका परिणाम तुम्हें एक दिन भोगना पड़ेगा।

साँकरी गली में नित छेड़े ब्रज बामा।
इक दिन बाँध्यो हरि सखि संग श्यामा॥ ७८६॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर नित्य ही साँकरी खोर में सखियों के साथ छेड़छाड़ किया करते थे। एक दिन सखियों सहित श्रीराधा ने उन्हें बाँध दिया।

सीधा किया एक भंगी कुबरिहिं बामा।
श्याम हैं त्रिभंगी उन्हें सीधा करें श्यामा॥ ७८७॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने कुब्जा के एक ही अंग के टेढ़ेपन को सीधा किया था। श्रीराधा ने त्रिभंगी लाल (तीन अंग-ग्रीवा, कटि एवं चरण से टेढ़े) को सीधा किया है।

श्याम जू को टेढ़ा जनि मानो कोउ बामा।
हम उन्हें सीधा कर देंगे कह श्यामा॥ ७८८॥

भावार्थ—श्रीराधा ब्रजगोपियों से कहती हैं सखियों! तुम श्रीकृष्ण को टेढ़ा न मानो। मैं उन्हें सीधा कर दूँगी।

मैं तो था सीधा सादा गोलोक धामा।
टेढ़ा बनाया मोहिं टेढ़ी ब्रज बामा॥ ७८९॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण कहते हैं-मैं तो अपने गोलोकधाम में अत्यन्त सीधे ढंग से ही रहता था। ब्रज की टेढ़ी गोपियों ने ही तो मुझे टेढ़े काम सिखाकर टेढ़ा बनाया है।

घूँघट में देखे कैसे श्याम सुखधामा।
घूँघट हटाये बुरा माने बूढ़ी बामा॥ ७९०॥

भावार्थ—कोई ब्रज-गोपी मुख पर घूँघट डाले बैठी थी। श्यामसुन्दर उधर से निकले। दर्शन के लिये उत्कंठित गोपी असमंजस में पड़ गई। यदि वह घूँघट नहीं हटाती तो श्यामसुन्दर के दर्शन से वंचित रह जाती है, यदि घूँघट हटाती है तो वृद्धा गोपियों द्वारा की गई निन्दा का भय लगता है।

किसी की सुना न करो सब ब्रज बामा।
एक की तो सात लगावें बूढ़ी गामा॥ ७९१॥

भावार्थ—एक सखी अन्य सखियों के प्रति कहती है-तुम नंदनंदन के दर्शन का लाभ अवश्य ही प्राप्त करो। वृद्धा गोपियों के कहने सुनने की परवाह न करो। वृद्धाओं का तो स्वभाव ही एक की सात लगाने का होता है। उन्हें अपना कार्य करने दो।

लोक लाज भार डारो देखो सुखधामा।
निन्दा सुनि बुरा जनि मानो कोउ बामा॥ ७९२॥

भावार्थ—संसार की लज्जा से हमें क्या प्रयोजन है? यह

संसार हमारा न कभी हुआ,न होगा। हम श्यामसुन्दर के दर्शन के सौभाग्य से वंचित क्यों रहें ? यदि हम मनहर कृष्ण का दर्शन करती हैं और इससे कोई हमारी निन्दा करता है तो किया करे।

मन भरि देखि ना पाये श्याम भामा।
आगे सास पाछे नन्द कहा करे बामा॥ ७९३ ॥

भावार्थ—एक विवाहिता गोपी सास एवं नन्द के साथ मार्ग में जा रही थी। नंदनंदन भी अचानक उधर आ निकले। ब्रज़वधू के मन में कन्हैया को एक बार जी भरकर देखने का बड़ा चाव था। उसके आगे सास एवं पीछे नन्द थी, अतः उनके भय से श्यामसुन्दर को भरपूर दृष्टि से नहीं देख सकी, इसी का पश्चाताप उसे है।

कैसे देखें नयनाभिराम श्याम बामा।
एक डर पति एक लोक ब्रज धामा॥ ७९४ ॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर से परकीया-भाव से प्रेम करने वाली एक ब्रजवधू कहती है-अरी सखी! नेत्रों को अत्यन्त प्रिय प्रतीत होने वाले मनमोहन को ठीक से देख भी नहीं पाती हूँ। एक तो मेरा पति यदि सुन लेगा तो मेरे साथ जाने कैसा व्यवहार करे ? दूसरे ब्रज मंडल में मेरे गूढ़ प्रेम की चर्चा चलेगी।

घूँघट उठा के कैसे देखूँ छविधामा।
पति खड़ा घूर-घूर देखे निज बामा॥ ७९५॥

भावार्थ—कोई विवाहिता वधू अपने पति के साथ में ही थी। नंदनंदन भी वहाँ उपस्थित थे। ब्रज-वधू के मन में कृष्ण-दर्शन की लालसा जाग्रत हो उठी। गोपी सोचती है-छविधाम कृष्ण को यदि घूँघट उठाकर देखती हूँ तो निकट में ही खड़ा हुआ पति मेरी इस क्रिया को देख लेगा। वह कृष्ण के प्रति मेरे प्रेम को जान लेगा तो मेरा जीवित रहना भी कठिन हो जायगा। इधर दर्शन की चाह भी बलवती है। बेचारी गोपी बड़े असमंजस में पड़ी है।

घूँघट उठा के देखा श्याम एक बामा।
आया पति बोला चलो खबर लूँगा धामा॥ ७९६॥

भावार्थ—कभी कहीं मार्ग में किसी ब्रजवधू ने अपने मुख पर पड़े घूँघट को उठाकर प्राण-प्रियतम कृष्ण का दर्शन किया। इतने में ही उसका पति वहाँ आकर बोला, घर चलकर तुम्हें ठीक करूँगा।

मैं नाहिं बनुँ तोरी सुन सुखधामा।
मेरा पाछा छोड़ ढूँढ़ और कोउ बामा॥ ७९७॥

भावार्थ—एक गोपी श्रीकृष्ण से कहती है—हे सुन्दर कृष्ण! मैं तुम्हारी कभी नहीं बन सकती हूँ। मेरा पीछा करना

छोड़ दो। कोई और सखी ढूँढ़ो।

पनघट पै घट फोरा मोरा सुखधामा।
सास फोरे सिर बिनु घट गये गामा॥ ७९८॥

भावार्थ—एक ब्रज-गोपी दूसरी से कह रही है- श्यामसुन्दर ने जल भरते समय पनघट पर आकर चंचलता करते हुए मेरा घड़ा फोड़ दिया। अब यदि बिना घड़ा लिये खाली हाथ घर जाती हूँ, तो मेरी कर्कशा सास मेरा सिर ही फोड़ देगी।

प्यारी जनि कहा करो सुनें ब्रज बामा।
ब्याहहूँ न करे कोइ मोते ब्रज धामा॥ ७९९॥

भावार्थ—गोपी श्रीकृष्ण से कहती है-हे श्यामसुन्दर! मुझसे 'प्यारी' कहकर न बोला करो। ब्रजांगनायें सुन लेंगी तो चर्चा होगी। जिसके परिणामस्वरूप इस ब्रज में कोई मेरे साथ विवाह भी नहीं करेगा।

मन तो चुराया तूने श्याम सुखधामा।
तन का ब्याह कासों कैसे करे बामा॥ ८००॥

भावार्थ—किसी अविवाहिता गोपी ने कृष्ण से कहा-हे सुखधाम कृष्ण! मेरा मन तो तुमने चुरा लिया, अब शरीर का विवाह किसके साथ, कैसे करूँगी?

एक हरि सौंदर्य लखि गिरे बामा।
एक लखि रूप विराट गिरे धामा॥ ८०१॥

भावार्थ—अपनी अपनी भावना के अनुसार कोई श्रीहरि के मनभावन-सौन्दर्य का दर्शन कर प्रेम मूर्च्छा से पृथ्वी पर गिर पड़ा, किसी को उन्हीं श्रीहरि के विराट रूप के दर्शन से भयभीत होकर पृथ्वी पर गिरना पड़ा।

यमुना पै खड़ी बामा आये सुखधामा।
देखा देखते ही गिरी मुरछित बामा॥ ८०२॥

भावार्थ—कभी कोई गोपी यमुना-तट पर खड़ी हुई थी। इतने में ही नंदनंदन कृष्ण वहाँ आ पहुँचे। ब्रजगोपी उस मुनि-जन मोहन रूप-लावण्य के दर्शन कर मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

मूर्छित बामा को उठाया सुखधामा।
श्याम का परस पाके मुर्छा गइ बामा॥ ८०३॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ने मूर्च्छित हुई सखी को अपने कोमल करों से पृथ्वी पर से उठाया। श्यामसुन्दर का स्पर्श पाते ही उस गोपी की मूर्च्छा भंग हो गई।

यमुना नहाने गई वहाँ सुखधामा।
देखा देखते ही लुटि गइ ब्रज बामा॥ ८०४॥

भावार्थ—एक सखी यमुना-स्नान करने गई थी। वहाँ

श्री कृष्ण पहले से ही उपस्थित थे। सखी ने जैसे ही उन्हें देखा, अपना सर्वस्व न्यौछावर कर बैठी।

जमुना नहा के बैठीं ब्योरे बार बामा।
चोरी चोरी देखे श्याम बिकीं बिनु दामा॥ ८०५॥

भावार्थ—कभी एक ब्रजांगना यमुना-स्नान कर रही थी। स्नान कर उसने अपने केश सुलझाये। केश सुलझाने के बहाने से बीच-बीच में श्यामसुन्दर के हाथ बिकी हुई उस गोपी ने चोरी से बालों के बीच में से झाँक झाँक कर प्रियतम श्यामसुन्दर के दर्शन भी किये।

आनंदजल लखि श्याम सुखधामा।
बिनु देखे पुनि दृग जल भरे बामा॥ ८०६॥

भावार्थ—ब्रजांगनाओं के नेत्र सदैव ही अश्रुपूर्ण रहते हैं। जब श्यामसुन्दर का दर्शन करती हैं तब दर्शन के अत्यधिक आनंद से नेत्रों में शीतल जल कण झलक आते हैं। दर्शन न प्राप्त होने पर विरह की उष्णता से नेत्रों से गरम आँसू छलक पड़ते हैं। संयोग एवं वियोग दोनों ही अवस्थाओं में गोपियों के दृग जल से भरपूर रहते हैं।

यमुना तट परस चह बामा सुखधामा।
श्याम ने उठाया गिरी झूठमूठ बामा॥ ८०७॥

भावार्थ—कोई गोपी कभी यमुना के तट पर खड़ी हुई

मन ही मन सुख-निधान प्रियतम श्यामसुन्दर के शीतल स्पर्श की अभिलाषा से व्यथित हो रही थी। सखी ने जान बूझकर गिरने का बहाना किया। अन्तर्यामी गोविंद ने तत्क्षण उस गोपी को अपनी भुजाओं में भरकर उठा लिया। इस प्रकार नंदनंदन ने उस गोपी को अपना दिव्य सुखदायक स्पर्श प्रदान कर आनन्द में सराबोर कर दिया।

मैं गोरी तुम कारे देखें ब्रज बामा।
काग हंसा जोरी कैसी जाओ निज धामा॥ ८०८॥

भावार्थ—किसी ब्रज-गोपी से श्यामसुन्दर ने कोई प्रेम-प्रस्ताव किया। धृष्ट गोपी ने उत्तर दिया-कृष्ण! मुझसे छेड़छाड़ न करो। सब सखियाँ देख रही हैं। मैं गौरवर्णा हूँ, तुम काले कलूटे हो मेरी तुम्हारी जोड़ी काले कौए एवं हंस के समान लगेगी।

श्याम बोले कारे तो हैं सालिगरामा।
पूजा करें ब्रजवासी अरु ब्रज बामा॥ ८०९॥

भावार्थ—कृष्ण ने गोपी के उपर्युक्त चतुराईपूर्ण कथन का उत्तर देते हुए कहा, जिन सालिगराम की पूजा गोपियाँ एवं समस्त ब्रजवासी करते हैं, वे भी तो काले ही हैं।

कारे ते बैर है तो जाओ काशी धामा।
मूँड़ मूड़ाय ले लो सन्यास बामा॥ ८१०॥

भावार्थ— यदि तुम्हें मुझ काले से शत्रुता है तो सिर के काले केशों को कटवा दो और संन्यास लेकर काशी नगरी में चली जाओ। ब्रज में वास क्यों करती हो ?

बात ना बनाया करो श्याम सुखधामा।
श्याम कह याते मिले मीठी डाट बामा॥ ८११॥

भावार्थ—किसी गोपी से नंदनंदन छल-चातुरी-पूर्ण मीठी मीठी बातें कर रहे थे। उस चतुर सखी ने मधुर भर्त्सना करते हुए श्यामसुन्दर को फटकारा-हे श्यामसुन्दर! बातें न बनाया करो। मैं तुम्हारे कपट व्यवहार को खूब जानती हूँ तुम सबसे ऐसी ही मधुर-रस-पूर्ण बातें करके उनके चित्त चुरा लेते हो। तुम किसी एक के नहीं हो। रस-लम्पट मधुप की भाँति कभी किसी के साथ कभी किसी के साथ विहार करते हो। चतुर-शिरोमणि नवल किशोर बोले- अगर बातें बनाना बंद कर दूँ तो फिर ऐसी मीठी फटकार कैसे मिलेगी ?

झूठ नाहिं बोला करो श्याम सुखधामा।
प्रेम में न देखा जाय झूठ साँच बामा॥ ८१२॥

भावार्थ—कोई गोपी कृष्ण से कहती है-हे नंदनंदन! तुम झूठ न बोला करो। श्यामसुन्दर ने त्वरापूर्वक उत्तर दिया- सखी! प्रेम में झूठ सच नहीं देखा जाता।

चोरी जारी अवगुन छोड़ो सुखधामा।
प्रेम गुन अवगुन देखे नाहिं बामा॥ ८१३॥

भावार्थ—किसी गोपी ने कभी प्रितयम श्यामसुन्दर को शिक्षा दी-हे नंदनंदन! तुम्हारी चोरी, जारी की आदतें अच्छी नहीं हैं। इनका परित्याग कर दो। वचन-रचना-नागर ने उत्तर दिया, हे सखी! प्रेम कभी गुण-अवगुण नहीं देखता।

आँखों ते जो बचि जावे कोऊ बामा।
मुरली बजा के मन मोहे ब्रज धामा॥ ८१४॥

भावार्थ—यदि कोई सखी श्रीकृष्ण के नेत्रों की ओर न देखे तो फिर मुरली बजाकर कृष्ण उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

मुरली बजाओ जनि श्याम सब ठामा।
सूखी लकरी भी गीली होय मम धामा॥ ८१५॥

भावार्थ—एक गोपी कहती है हे श्यामसुन्दर! सब समय

मुरली न बजाया करो। मुरली की ध्वनि सुनकर सूखी लकड़ी भी गीली हो जाती है। रसोई तैयार करने में कठिनाई होती है।

वेद कहें सर्वविद श्याम सुखधामा।
मुरली की चोरी भई पूछें प्रति बामा॥ ८१६॥

भावार्थ—वेद तो ब्रह्म को सर्वज्ञ कहता है। ब्रज में वही ब्रह्म अपनी चोरी गई मुरली के लिये प्रत्येक गोपी से पूछता फिरता है।

मुरली चुराई मेरी कोउ ब्रज बामा।
चोर को तो दीखें सब चोर कहें श्यामा॥ ८१७॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर ने राधा के निकट जाकर कहा-किसी सखी ने मेरी मुरली चुरा ली है। श्रीराधा उत्तर देती हैं-चोर को सब चोर ही दिखाई देते हैं।

मुरली की चोरी सुनि हुआ दुःख श्यामा।
चोर घर चोरी अचरज ब्रज धामा॥ ८१८॥

भावार्थ—श्रीराधा श्यामसुन्दर की मुरली की चोरी हुई जानकर दुःख प्रकट करने लगीं। कहने लगीं-ब्रज में महान् आश्चर्यपूर्ण घटना घट गई। चोर के घर भी चोरी हो गई।

मुरली चुराई नाहिं कहूँ कोउ बामा।
कछनी में देखो टुक छुपी कह श्यामा॥ ८१९॥

भावार्थ—श्रीराधा श्यामसुन्दर से कहती हैं-किसी ने तुम्हारी मुरली चुराई नहीं है। अपनी कमर में काछनी के बीच देखो, छिपी होगी।

मुरली तो देखी मैंने कहीं कही बामा।
कहाँ देखी अब सुधि नाहिं ब्रजबामा॥ ८२०॥

भावार्थ—किसी सखी ने कहा-मैंने कहीं मुरली देखी अवश्य है, परन्तु यह ध्यान नहीं कि कहाँ देखी है।

मुरली तो मुर ली है कही एक बामा।
मुर 'अरि' सब जानें तोहिं ब्रज धामा॥ ८२१॥

भावार्थ—एक गोपी बोली-श्यामसुन्दर! तुम्हारी मुरली 'मुर' नामक असुर ने चुरा ली है। ब्रज में सब जानते हैं कि तुम 'मुर' के शत्रु हो।

वंशी गइ जाने भी दो श्याम सुखधामा।
दूसरी मँगाय दूँगी कहे एक बामा॥ ८२२॥

भावार्थ—एक गोपी कहती है-कृष्ण तुम्हारी वंशी खो गई है तो खो जाने दो। मैं तुम्हें नयी वंशी मँगा दूँगी।

मुरली चुराई अच्छा हुआ कह श्यामा।
तुम भी सोवो चैन ते औ सोने देहु बामा॥ ८२३॥

भावार्थ—श्रीराधा कहती हैं-श्यामसुन्दर! अच्छा हुआ जो किसी ने तुम्हारी मुरली चुरा ली। अब तुम भी शांति से

सोओ और गोपियाँ भी शान्ति से विश्राम करेंगी। मुरली गोपियों को तंग किया करती थी।

इक तो चुराई मेरी वंशी ब्रज बामा।
दूजे ये चिढ़ावैं सब मिलि संग श्यामा॥ ८२४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर खीझकर कहते हैं, एक तो किसी सखी ने मेरी वंशी चुरा ली। दूसरे श्रीराधा के साथ मिलकर सब मुझसे परिहास करती हैं।

शरद की चाँदनी है चलो कहें श्यामा।
रास करने पधारो वृन्दावन धामा॥ ८२५॥

भावार्थ—श्रीराधिका कह रही हैं-हे श्यामसुन्दर! शरद की चंद्रिका छिटक रही है। श्रीवृन्दावन-धाम में रास के लिये पधारो।

रास में बुलाया बनचरि ब्रज बामा।
कमला को नाहिं बुलाया श्याम श्यामा॥ ८२६॥

भावार्थ—श्रीश्यामा-श्याम ने रास करने के लिये ब्रज-वन में विचरण करने वाली ब्रज-गोपियों का तो आह्वान किया किंतु महालक्ष्मी को नहीं बुलाया।

ब्रह्म था आत्माराम परिपूर्णकामा।
फिर भी किया था रास संग पर बामा॥ ८२७॥

भावार्थ—ब्रह्म तो आत्माराम (अपनी आत्मा में ही रमण

करने वाला) एवं परिपूर्णकाम ही था। किन्तु ब्रज में उसी ब्रह्म ने पर स्त्रियों के साथ रास किया।

गोपी संग रास कियो वृन्दावन धामा।
जिमि निज प्रतिबिम्ब खेले शिशु गामा॥ ८२८॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने अपनी आत्मा स्वरूपा ब्रज-गोपियों के साथ, श्री वृन्दावन की दिव्य-भूमि में रास-क्रीड़ा की, ठीक वैसे ही जैसे कोई अबोध शिशु अपने प्रतिबिम्ब के साथ खेले।

रास में अनन्त रूप धरे सुखधामा।
किन्तु श्याम मेरे ही संग जानीं बामा॥ ८२९॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने महारास के समय अनन्त रूप धारण कर प्रत्येक गोपी के साथ विहार किया किन्तु प्रत्येक गोपी ने यही समझा कि श्रीकृष्ण केवल मेरे ही साथ हैं।

योगमाया शक्ति ते ही श्याम श्यामा बामा।
नाचें गावें स्वर ताल भूलें नहिं धामा॥ ८३०॥

भावार्थ—रासमण्डल में योगमाया की शक्ति से ही श्यामा-श्याम एवं ब्रजांगनाओं ने ताल एवं स्वर से युक्त होकर नृत्य एवं गायन किया।

रास बिच नृत्य करि थकि गइँ श्यामा।
चरण पलोटें श्याम धरि गोद पामा॥८३१॥

भावार्थ—जब रास मंडल के मध्य श्याम के साथ नृत्य करते-करते श्यामा श्रमित हो उठीं तब नंदनंदन ने उनके कोमल चरणों को अपने अंक में धारण कर मृदुल करों से संवाहन किया।

रास ते अलक्षित हुए श्याम श्यामा।
रोते हुए नाम गुण गाईं ब्रज बामा॥८३२॥

भावार्थ—जब श्यामा-श्याम रासमंडल से अदृश्य हो गये, तब ब्रजांगनाओं ने करुण-क्रन्दनपूर्वक उनके नाम, गुणादि का गायन किया।

गोपी गीत सुनि आये श्याम सुखधामा।
धन्य धन्य गोपी गीत धन्य धन्य बामा॥८३३॥

भावार्थ—जयति तेऽधिकं जन्मना... ।।

आदि गोपियों के करुणगीत सुनकर भक्तवत्सल श्यामसुन्दर उनके मध्य में ही प्रकट हो गये। गोपी-गीत धन्य है। ब्रज-गोपियाँ भी धन्य हैं।

चारि भुजा धरि रास छलीं ब्रज बामा।
दुइ भुजा उड़ि गइँ आईं जब श्यामा॥८३४॥

भावार्थ—गोपियों के साथ छल कर श्रीकृष्ण चार भुजा धारण कर उनके मध्य में प्रकट हुए। श्रीराधा जब निकट आईं तो श्री हरि की दो भुजा स्वतः ही गायब हो गईं।

विरह न होवे कभु मिले श्याम श्यामा।
विरह तो देवें प्रेमवृद्धि हित बामा॥ ८३५॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम का कभी वियोग नहीं होता। ब्रज-गोपियों को जो वियोग श्यामसुन्दर ने प्रदान किया वह उनके प्रेम की वृद्धि हेतु ही था।

विरह में और बढ़े प्रेम ब्रज बामा।
याते गोपी प्रेम पायो महाभाव नामा॥ ८३६॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों का प्रेम श्रीकृष्ण सुखार्थ ही था। ऐसा निष्काम प्रेम वियोग में और अधिक बढ़ जाता है। इसी कारण श्रीकृष्ण वियोगिनी गोपियाँ प्रेम की सर्वोच्च कक्षा-महाभाव तक पहुँच गईं।

मिलन में पाछे डोलें द्वारिका की बामा।
विरह में पाछे डोलें श्याम सुखधामा॥ ८३७॥

भावार्थ—द्वारिका की रानियों को संयोग प्राप्त हुआ, जिसमें वे श्यामसुन्दर के पीछे लगी रहती थीं किन्तु ब्रज-गोपियों की विरहावस्था में स्वयं श्यामसुन्दर उनके पीछे-पीछे घूमते थे।

मिलन में विरह का डर उर बामा।
विरह में मिलन की आस आठु यामा॥८३८॥

भावार्थ— मिलन के समय हृदय में प्रियतम के विरह का भय बना रहता है। किंतु वियोग में निरन्तर मिलन की आशा लगी रहती है।

विरह में मिलन होत वसु यामा।
यह रस जानें बस गोपी ब्रज धामा॥८३९॥

भावार्थ—विरह में निरन्तर मिलन होता है। इस प्रकार के मिलन में जो रस है, उसे गोपियाँ ही जानती हैं।

मिलन में एक दिशा दीखें श्याम श्यामा।
विरह में दसों दिशा दीखें आठु यामा॥८४०॥

भावार्थ—संयोग में श्यामा-श्याम केवल एकदेशीय ही प्रतीत होते हैं। वियोग में दसों दिशायें श्यामसुन्दर से परिपूर्ण दिखाई देती हैं।

जग जाने श्याम गये मधुपुरि गामा।
गोपी देखे कन कन वृन्दावन धामा॥८४१॥

भावार्थ—संसार की दृष्टि में श्यामसुन्दर मथुरा चले गये थे परन्तु ब्रजगोपियाँ तो कण-कण में श्यामसुन्दर को देखती थीं।

आ क्रूर अक्रूर यम जनु धामा।
ले गया श्याम राम कहा करें बामा॥ ८४२॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ श्यामसुन्दर के विरह से व्यथित होकर कहती हैं-यमराज के समान क्रूर अक्रूर ब्रज में आकर राम-श्याम को ले गया। अब हम सब किस प्रकार जीवित रहें?

अक्रूर बड़ा क्रूर कहें ब्रज बामा।
मेरा प्राण ले गया मधुपुरि धामा॥ ८४३॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें कहती हैं, अक्रूर अत्यन्त ही क्रूर हैं। हमारे प्राण-स्वरूप श्रीकृष्ण को मथुरा ले गया।

परसों को कहि गये मधुपरि धामा।
बरसों बिताये नहिं आये ढिग बामा॥ ८४४॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर मथुरा जाते समय ब्रजवासियों से यह कहकर गये थे कि मैं परसों लौटकर आ जाऊँगा। वर्षों व्यतीत हो गये परन्तु श्यामसुन्दर लौटकर नहीं आये।

राज सुख में ज्यों भूले सुग्रीव रामा।
वैसे भूले सुख महँ श्याम हम बामा॥ ८४५॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ कह रही हैं-जैसे सुग्रीव किष्किंधा का राज्य पाकर श्रीराम की मित्रता को भूल गये थे, उसी प्रकार मथुरा में ऐश्वर्य पाकर श्रीकृष्ण हम गोपियों को भूल

गये हैं।

कारे रंग वारे सब बुरे सखि धामा।
याही ते लगावैं सिर ब्रज रज श्यामा॥ ८४६ ॥

भावार्थ—गोपियाँ परस्पर कहती हैं-हे सखी! काले रंग वाले सभी बड़े बुरे होते हैं। इसलिए श्रीराधा कभी- कभी अपने काले रंग के केशों मे भी श्वेत रंग की ब्रज-रज लगा लेती हैं।

श्याम की बुराई जनि करो कोउ बामा।
सेवा ते निकार देंगी स्वामिनि श्यामा॥ ८४७ ॥

भावार्थ—एक सखी दूसरी से कह रही है-अरी सखी! श्यामसुन्दर को बुरा न कहो, अन्यथा श्रीराधा हमें अपनी सेवा से वंचित कर देंगी।

नहीं आये काहे जाके मधुपुरि धामा।
कुबरी के डर नहिं आये कह श्यामा॥ ८४८ ॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ कह रही हैं-श्यामसुन्दर मथुरा से पुनः लौटकर ब्रज क्यों नहीं आये? श्रीराधा ने कहा-कुब्जा के भय से श्रीकृष्ण ब्रज नहीं आये।

कुबरी ने कौन तप किया पूछे बामा।
जाओ उसी कुबरी ते पूछो कह श्यामा॥ ८४९ ॥

भावार्थ—किसी ब्रज-गोपी ने श्रीराधा से पूछा-कुब्जा ने कौन सा तप किया था जिससे श्रीकृष्ण ने उसका वरण किया। श्रीराधा ने उत्तर दिया, जाकर उसी कुब्जा से ही पूछो।

शुक को पढ़ाया 'राधा कृष्ण' ब्रज बामा।
'कुब्जा कृष्ण' कहा करो कहीं शुक श्यामा॥ ८५०॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियों ने किसी शुक को 'राधाकृष्ण' रटना सिखाया। श्रीराधा ने उस शुक से कहा,'कुब्जा-कृष्ण'कहा कर।

ब्रज गोपियों का तो था प्रेम निष्कामा।
पुनि कत मन भाई कुबरी सकामा॥ ८५१॥

भावार्थ—गोपियाँ परस्पर विचार करती हैं-हमने तो श्रीकृष्ण से उनके सुख के लिये ही निष्काम प्रेम किया था। कुब्जा तो अपनी इच्छा-पूर्ति चाहती थी। वह कृष्ण को कैसे भा गई?

मोहि नाहिं पाई जेहि कमला सी बामा।
मोही तेहि कुबरिहुँ मधुपुरि धामा॥ ८५२॥

भावार्थ—जिस ब्रह्म कृष्ण को महालक्ष्मी भी अपने सौन्दर्य-आदि गुणों से वशीभूत नहीं कर सकीं उसे मथुरा में कुब्जा ने मोहित कर लिया।

कोटि कमला हूँ वारौं जा पै अस श्यामा।
उनहुँन तजि बरी कुबरी सकामा॥ ८५३॥

भावार्थ—कोई गोपी कह रही है-जिस श्रीराधा पर करोड़ों महालक्ष्मी न्यौछावर की जा सकती हैं-उनका त्यागकर श्यामसुन्दर ने कामना-युक्त कुब्जा का वरण किया।

माया बड़ी बलवती कह ब्रज बामा।
ब्रह्म हूँ कुबरी लिप्त मधुपुरि धामा॥ ८५४॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ व्यंग्यपूर्वक कहती हैं,ईश्वर की माया बड़ी बलवान है। देखो! मथुरा में ब्रह्म कृष्ण भी कुब्जा में आसक्त हो गये।

रास में हरायो काम श्याम पूर्णकामा।
कुबरी ते हारे बलिहार कह बामा॥ ८५५॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ परस्पर चर्चा कर रही हैं— जिन श्रीकृष्ण ने महारास-क्रीड़ा करते हुए अपने निकट आये हुए मूर्तिमान काम को भी परास्त कर दिया था, वे अब स्वयं कुब्जा से पराजित हो गये। बलिहारी है।

कुबरी ते प्यार करें श्याम सुखधामा।
कूबर बनाय चलो सब ब्रज बामा॥ ८५६॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ वियोग के कष्ट से पीड़ित होकर कुब्जा पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं- यदि श्यामसुन्दर को

कुबरी नारी ही प्रिय है तो हम सब भी कृत्रिम कूबड़ बनाकर मथुरा चलें। वे हमें भी प्रेमपूर्वक अपना अंग-संग प्रदान करेंगे।

कुबरी की भक्ति करो सब ब्रजबामा।
कुबरी को भजे पूर्णब्रह्म पूर्णकामा॥ ८५७॥

भावार्थ—ब्रजांगनायें श्रीकृष्ण एवं कुब्जा पर कटाक्ष करती हुई कहती हैं-अरी सखियों! सब मिलकर कुब्जा की भक्ति करो। पूर्णकाम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण भी कुब्जा का सेवन करते हैं।

कुबरी के पास मन्त्र वशीकार नामा।
कुबरी को गुरु करि सीखो मन्त्र बामा॥ ८५८॥

भावार्थ—गोपियाँ परस्पर कह रही हैं, कुब्जा के पास वशीकार नामक मंत्र है। इसी मंत्र से उसने कृष्ण को वश में कर लिया है। कुब्जा को अपना गुरु बनाकर हम सब भी उससे वशीकार मंत्र सीखकर कृष्ण को अपने वश में कर लें।

कुबरी को जनि कोउ कोसो ब्रज बामा।
कुबरी को सुन्दरि किये सुखधामा॥ ८५९॥

भावार्थ—एक ब्रज-गोपी दूसरी से कह रही है-कुब्जा को भला बुरा न कहो। कुब्जा का भाग्य तो देखो उसे श्यामसुन्दर ने सुन्दरी बनाकर अपना प्रेम प्रदान किया।

'कु' का अर्थ विश्व 'बरी' अर्थ श्रेष्ठ बामा।
विश्व सुन्दरी को कुबरी कहें धामा॥ ८६०॥

भावार्थ—'कुबरी' शब्द की व्याख्या करते हुए ग्रन्थकार कहते हैं-'कु' का अर्थ है 'विश्व', 'बरी' का अर्थ 'सुन्दरी'। अतएव कुबरी का अर्थ हुआ विश्वसुन्दरी।

श्याम लखि मोहे सो तो मायामुक्त बामा।
कुबरी की निन्दा नाम अपराध नामा॥ ८६१॥

भावार्थ—ग्रन्थकार कहते हैं-जो स्त्री श्यामसुन्दर को देखकर मोहित हो जाय वह तो माया मुक्त ही है। अतः कुब्जा की निंदा करना नामापराध है।

प्रेम ही सों प्रेम करे श्याम सुखधामा।
कुबरी के मन रहा प्रेम सकामा॥ ८६२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर का स्वभाव है-वे अपने से प्रेम करने वाले से प्रेम करते हैं। कुब्जा का प्रेम भले ही सकाम था किंतु था तो श्रीकृष्ण के ही प्रति। फिर श्यामसुन्दर उससे प्रेम क्यों न करते?

प्रेम निष्काम हो या प्रेम सकामा।
श्याम मिलेंगे जैसे कुबरिहिं बामा॥ ८६३॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर के प्रति निष्काम प्रेम किया जाये अथवा सकाम, वे अवश्य मिलेंगे, जिस प्रकार कुब्जा ने अपने

सकाम प्रेम से ही श्रीकृष्ण की प्राप्ति की।

कमला सी बामा अरु श्याम पूर्णकामा।
फिर भी बनायो कुबरिहिं निज बामा॥ ८६४॥

भावार्थ—जिन श्यामसुन्दर की अर्धांगिनी श्री एवं सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी हैं, जो स्वयं आत्माराम, पूर्णकाम हैं, उन्होंने कंस की दासी कुब्जा पर कृपा कर उसे अपना अंग-संग प्रदान किया।

भक्तों की इच्छा पूर्ण करें सुखधामा।
कुब्जा हित कामी बना ब्रह्म पूर्णकामा॥ ८६५॥

भावार्थ—भगवान् भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु हैं। वे स्वयं पूर्णकाम थे किंतु कुब्जा को सुख प्रदान करने हेतु कामी की भाँति उसके गृह पधारे एवं दासी कुब्जा की समस्त मनोकामनायें पूर्ण कीं।

वेद तो बतायें ब्रह्म श्याम पूर्णकामा।
कुबरी बताये ब्रह्म पूर्ण सकामा॥ ८६६॥

भावार्थ—वेद के अनुसार तो श्रीकृष्ण पूर्णकाम ब्रह्म ही हैं परन्तु कुब्जा के साथ व्यवहार कहता है कि ब्रह्म कृष्ण पूर्ण सकाम थे अन्यथा कुब्जा के साथ प्रेम-व्यवहार क्यों करते?

आत्माराम पूर्णकाम श्याम सुखधामा।
कुब्जा प्रेम बस भये ब्रज में सकामा॥ ८६७॥

भावार्थ—सुखनिधान श्रीकृष्ण आत्मा में रमण करने वाले पूर्णकाम ही हैं। कुब्जा ने उन्हें पति रूप में वरण किया था अतः भक्तवांछा कल्पतरु भगवान् उसकी इच्छा पूर्ण करने के लिये सकाम बन गये।

कुबरी ते ईर्ष्या जनि करो ब्रज बामा।
मैं तो सब ब्रज बामा पग धूरि कामा॥ ८६८॥

भावार्थ—कुब्जा कहती है, हे ब्रजगोपियों! मुझसे ईर्ष्या न करो। मैं तो तुम सब ब्रज गोपियों की चरण-धूलि चाहती हूँ।

साधारणि रति कुब्जा मधुपुरि धामा।
किन्तु समर्था रति वारी ब्रज बामा॥ ८६९॥

भावार्थ—मथुरा में कुब्जा की मधुर रति सकाम भाव से युक्त थी। अतः वह साधारणी रति की कोटि में ही रही। ब्रजांगनाओं का मधुर भावयुक्त प्रेम निष्काम होने के कारण समर्था रति के अन्तर्गत माना गया।

कुबरी का सकाम प्रेम निम्न ब्रज धामा।
धन्य धन्य गोपी जन प्रेम निष्कामा॥ ८७०॥

भावार्थ—कुब्जा का प्रेम सकाम होने के कारण निम्न कक्षा का है, किन्तु सर्वथा धन्य तो ब्रजगोपियों का निष्काम प्रेम है जो एकमात्र श्रीकृष्ण-सुखार्थ ही था।

जादू की है नगरी यह ब्रजधामा।
शिव हूँ शिवानी बने फिरे संग बामा॥ ८७१॥

भावार्थ—यह ब्रजभूमि जादू की नगरी है। यहाँ पर योगेश्वर शिव भी शिवानी बनकर गोपी मंडल में सम्मिलित हो गये।

ऊधो ब्रह्मज्ञान देने गये ब्रज धामा।
ब्रह्मज्ञान बूड्यो तहाँ प्रेमसिन्धु बामा॥ ८७२॥

भावार्थ—उद्धव अपना ब्रह्म-ज्ञान प्रदान करने हेतु ब्रज गये। ब्रजांगनाओं के प्रेम-समुद्र में उद्धव का ब्रह्म-ज्ञान बह गया।

अच्छा किया आये ऊधो येहि ब्रज धामा।
ह्याँ करें स्वागत गारी दै बामा॥ ८७३॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं— उद्धव! बड़ा अच्छा हुआ तुम ब्रज में आये किन्तु तुम यह नहीं जानते कि ब्रज की गोपियाँ तुम्हारे सखा ब्रह्म कृष्ण का भी स्वागत 'दारी के' आदि गालियों द्वारा करती हैं।

ऊधो हम जानें ब्रह्म श्याम पूर्णकामा।
अवतार लै के आये मधुपुरि धामा॥ ८७४॥

भावार्थ—गोपियाँ कह रही हैं, हे उद्धव! हम भली प्रकार जानती हैं कि श्यामसुन्दर पूर्णब्रह्म हैं। वे मथुरा में अवतार

लेकर आये हैं।

उधो हम जानें माधो हैं पूर्णकामा।
उन ते न कछु कम हैं ब्रजबामा॥ ८७५॥

भावार्थ—गोपियाँ उद्धव से कहती हैं-हम जानती हैं श्रीकृष्ण पूर्णकाम हैं। परन्तु गोपियाँ भी उनसे कुछ कम नहीं हैं।

श्याम को बुलाती नहिं ऊधो ब्रज बामा।
जहाँ सुख मिले रहें बोल उठीं श्यामा॥ ८७६॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों के मध्य विराजमान श्रीराधा उद्धव से बोलीं-हे उद्धव! यदि श्यामसुन्दर को यहाँ आने में जरा भी कष्ट हो तो हम कभी नहीं चाहेंगी कि वे लौट कर आयें। उन्हें जहाँ सुख मिले वहाँ रहें। उनका सुख ही हमारा सुख है।

ऊधो तुम्हें छला भल श्याम छल धामा।
जोग जोग कोउ नहिं जाओ और ठामा॥ ८७७॥

भावार्थ—गोपियाँ उद्धव से कहती हैं-हमें ऐसा प्रतीत होता है कि छली कृष्ण ने तुम्हें ब्रज में भेजकर तुम्हारे साथ छल किया है। ब्रज में योग के योग्य कोई नहीं है। अपने योग का प्रचार ब्रज के बाहर कहीं और जाकर करो।

नित्यसिद्ध योगिनी हैं सब ब्रज बामा।
योग अधिकारी नहिं मिले ब्रज धामा॥ ८७८॥

भावार्थ—समस्त ब्रजांगनायें नित्य सिद्ध योगिनी हैं अतएव तुम्हें अपना योग प्रदान करने के लिये ब्रज में कोई अधिकारी नहीं मिला।

योग सिखाओ ऊधो मधुपुरि धामा।
भोग में लिप्त कृष्ण कुबरिहुँ बामा॥ ८७९॥

भावार्थ—हे उद्धव! यदि तुम्हें योग की शिक्षा देनी ही है तो सर्वप्रथम मथुरा में अपने मित्र कृष्ण को दो। वे कुब्जा के साथ भोग में रत हैं। उन्हीं के लिये योग की शिक्षा उचित होगी।

योग सिद्धि नहिं चाहें ऊधो ब्रज बामा।
मुक्ति न चाहें नहिं वैकुण्ठ धामा॥ ८८०॥

भावार्थ—हे उद्धव! हम योग की सिद्धियों की इच्छा नहीं करतीं। हम मुक्ति की भी कामना नहीं करतीं। हमें वैकुण्ठ भी नहीं चाहिये। फिर हम तुम्हारे योग का क्या करेंगी?

ज्ञान ते मिलेगी मुक्ति कैवल्य नामा।
मुक्ति को पिशाची मानें ऊधो ब्रज धामा॥ ८८१॥

भावार्थ—हे उद्धव! तुम्हारे ज्ञान से कैवल्य नामक मुक्ति प्राप्त होगी। उस मुक्ति को तो ब्रजवासी पिशाची के समान समझते हैं।

ऊधो मुक्ति दासी स्वामी श्याम सुखधामा।
दासी की शरण जाना महामूर्ख कामा॥ ८८२॥

भावार्थ—उद्धव! तुम्हारे ज्ञान से प्राप्त मुक्ति हमारे स्वामी श्यामसुन्दर की दासी है। स्वामी को छोड़कर दासी की शरण जाना तो महामूर्खता का कार्य है।

ज्ञानी चहे मुक्ति याते ज्ञानी है सकामा।
ऊधो ब्रज बामा करें प्रेम निष्कामा॥ ८८३॥

भावार्थ—ज्ञानी मुक्ति की कामना करता है अत: वह सकाम है। ब्रजांगनायें तो अपने प्रियतम कृष्ण से निष्काम प्रेम करती हैं।

श्यामबस मुक्ति भक्तिवस सुखधामा।
तुम ही कहो तो कहाँ तुम कहाँ बामा॥ ८८४॥

भावार्थ—हे उद्धव! तनिक विचार तो करो। मुक्ति श्यामसुन्दर के आधीन है। श्यामसुन्दर भक्ति के आधीन हैं। अब तुम ही विचार करो कि मुक्ति की कामना करने वाले तुम कहाँ हो और निष्काम प्रेम करने वाली गोपियाँ कहाँ हैं?

भक्तियुक्त ज्ञान ते ही मिले मुक्ति धामा।
भक्तिहीन ज्ञान तो अज्ञान कहें बामा॥ ८८५॥

भावार्थ—हे उद्धव! तुम मुक्ति प्राप्त करना चाहते हो, वह तो भक्तियुक्त ज्ञान से ही प्राप्त होती है। भक्ति-रहित ज्ञान तो कोरा अज्ञान ही है।

जीवनमुक्त भी ऊधो बँधे कर्म कामा।
भक्त ही की मुक्ति कहें वेदव्यास नामा॥ ८८६ ॥

भावार्थ—हे उद्धव! जीवनमुक्त पुरुष भी कर्म एवं कामनाओं के बंधन में हैं। वेदव्यास के अनुसार भक्ति द्वारा ही मुक्ति प्राप्त होगी।

भक्ति ते ही कृपा करें ऊधो सुखधामा।
श्याम कृपा ते ही मुक्ति मिले कह बामा॥ ८८७ ॥

भावार्थ—हे उद्धव! सुखधाम कृष्ण भक्ति से ही रीझते हैं। जब वे प्रसन्न हो जाते हैं, तब उनकी दासी मुक्ति तो स्वयं ही प्राप्त हो जाती है।

ब्रह्म तो अकर्ता ऊधो कहें ब्रज बामा।
कृपा तो करेंगे एक श्याम सुखधामा॥ ८८८ ॥

भावार्थ—हे उद्धव! तुम्हारा ब्रह्म तो अकर्ता है। यदि कृपा चाहते हो तो श्यामसुन्दर की ही शरण ग्रहण करनी होगी।

ऊधो योगमाया शक्ति ते सुखधामा।
कर्म सृष्टि आदि करें रहे पूर्णकामा॥ ८८९ ॥

भावार्थ—हे उद्धव! योगमाया की शक्ति से युक्त होकर श्रीकृष्ण सृष्टि-रचना आदि के कार्य करते हुए भी पूर्णकाम ही रहते हैं।

ऊधो तव ब्रह्म तो है आनन्द नामा।
श्याम तो हैं आनन्दकन्द कह बामा॥ ८९०॥

भावार्थ—ब्रजांगनाओं ने उद्धव से कहा–हे उद्धव! तुम्हारा ब्रह्म तो केवल आनन्दरूप ही है किन्तु श्यामसुन्दर तो आनन्द के भी सार हैं।

ऊधो तोहिं ज्ञान महँ भान कस बामा।
ज्ञानी को सब ब्रह्म दीखे कह श्यामा॥ ८९१॥

भावार्थ—श्रीराधा कहती हैं–हे उद्धव! तुम कैसे ज्ञानी हो जो तुम्हें ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य भी कुछ दिखाई पड़ता है? ज्ञानी को तो सब कुछ ब्रह्म ही दिखाई देता है। तुम्हें तो ब्रजगोपियाँ दिखाई दे रही हैं। तुम ज्ञानी कैसे हो?

ऊधो तुम्हें ज्ञान नहिं ज्ञान ब्रज बामा।
श्यामा श्याम प्रेम ही तो ज्ञान परिणामा॥ ८९२॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ उद्धव से कहती हैं- उद्धव! तुम स्वयं को ज्ञानी समझते हो किन्तु वस्तुतः तुम्हें ज्ञान है नहीं। ज्ञान तो ब्रजगोपियों को है। क्योंकि श्यामा श्याम से प्रेम होना ही तो ज्ञान का फल है।

ऊधो ज्ञान ते जो मिले मुक्ति सुखधामा।
सोइ मुक्ति कहे दासी पद देहु बामा॥ ८९३॥

भावार्थ—हे उद्धव! तुम्हारे ज्ञान से जिस मुक्ति की प्राप्ति होती है, वह मुक्ति ब्रजगोपियों की दासी बनने की कामना करती है।

ज्ञान फल मुक्ति मुक्ति फल ब्रह्म नामा।
ऊधो सोइ ब्रह्म डोले पाछे ब्रज बामा॥ ८९४॥

भावार्थ—हे उद्धव! जिस ज्ञान को तुम हमें प्रदान करना चाहते हो, उसका फल मुक्ति है। उस मुक्ति का भी फल ब्रह्म है वही ब्रह्म ब्रजगोपियों के पीछे-पीछे घूमता है।

ऊधो दें बुहारी चारों वेद ब्रज धामा।
वेद की ऋचाएँ दासी बनीं ब्रज बामा॥ ८९५॥

भावार्थ—श्रीराधा कह रही हैं-हे उद्धव! हमारे ब्रजधाम में चारों वेद ब्रज की धूल को अपने मस्तक पर धारण करने हेतु झाड़ू लगाते हैं। वेद की ऋचायें ब्रज-गोपियों की दासता कर रही हैं।

तव दादा गुरु लोग ऊधो ब्रज धामा।
सनकादि वृक्ष बने ठढ़े एक पामा॥ ८९६॥

भावार्थ—हे उद्धव! इस ब्रज में तुम्हारे गुरुजन सनकादि ज्ञानी भी वृक्ष बनकर एक पैर से खड़े हैं।

संदेश लाये ऊधो धन्य भइँ बामा।
जहाँ रहें सुखी रहें संदेश श्यामा॥ ८९७॥

भावार्थ—श्रीराधा उद्धव से कह रही हैं-उद्धव! तुम अपने सखा का संदेश लेकर आये हो। हम सब तुम्हारा दर्शन कर धन्य हो गईं। हमारा भी संदेश अपने सखा से कह देना कि वे जहाँ रहें सुखपूर्वक रहें, बस हमारी यही कामना है।

ऊधो कन-कन बसे श्याम ब्रज धामा।
तुम जानो माधो गये मधुपुरि गामा॥ ८९८॥

भावार्थ—गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं-हमारे ब्रज के कण-कण में श्यामसुन्दर का सदा ही वास है। उद्धव! तुम भोले-भाले हो, तुम समझ रहे हो कि श्रीकृष्ण ब्रजवासियों से पृथक् मथुरा में हैं।

ऊधो दुःख विरह को नहिं ब्रज बामा।
मिलन के मारे नाकों दम आठु यामा॥ ८९९॥

भावार्थ— उद्धव! हमें श्रीकृष्ण-विरह की पीड़ा किंचित् भी कष्ट नहीं देती। हम तो उनके अखण्ड मिलन से परेशान हैं। उन्हें भूलना चाहती हैं।

ऊधो ज्ञान देने भेजा श्याम छलधामा।
दे दो ज्ञान ले लो गोपी प्रेम निष्कामा॥ ९००॥

भावार्थ—हे उद्धव! श्यामसुन्दर अत्यन्त टेढ़े हैं। उनका कोई भी कार्य सीधा नहीं होता। उन्होंने तुम्हें ज्ञान देने भेजा है। ज्ञान देकर गोपियों से निष्काम प्रेम ले लो।

ज्ञान डारो यमुना में ऊधो कहें श्यामा।
ब्रजरस माँगो करो गुरु ब्रज बामा॥ १०१॥

भावार्थ—श्रीराधा उद्धव से कह रही हैं-हे उद्धव! अपना ज्ञान यमुना में प्रवाहित कर दो। ब्रज-गोपियों को अपना गुरु बनाकर उनसे ब्रज-रस की भिक्षा माँगो।

ऊधो माधो यद्यपि हैं प्रेमधामा।
किन्तु दान अधिकार दिये ब्रज बामा॥ १०२॥

भावार्थ—श्री राधा कह रही हैं-उद्धव! यद्यपि तुम्हारे मित्र कृष्ण प्रेम की खान हैं परन्तु वह किसी को प्रेमदान नहीं दे सकते। यह अधिकार तो उन्होंने भक्तों को ही दे रखा है।

ऊधो पायो दिव्य प्रेम कृपा ब्रज बामा।
लतन लिपटि रोवें हाय श्याम श्यामा॥ १०३॥

भावार्थ—उद्धव ने ब्रजांगनाओं की कृपा से दिव्य-प्रेम प्राप्त किया। ब्रज की लताओं से लिपट लिपट कर वे भी हाय श्यामा-श्याम कहकर रोने लगे।

ऊधो गुरु बनि गये ढिग ब्रज बामा।
शिष्य बनि लौटे पाये प्रेम निष्कामा॥ १०४॥

भावार्थ—उद्धव गोपियों के गुरु बनकर ब्रज गये थे। मथुरा जब वापस अपने सखा श्रीकृष्ण के निकट लौटकर आये, तब वे गोपियों के शिष्य बनकर उनसे प्रेम प्राप्त कर

लौटे।

माधो हम धन्य भये जा के ब्रजधामा।
धन्य ब्रज बामा अरु धन्य धन्य श्यामा॥ १०५॥

भावार्थ—ब्रज से लौटकर उद्धव मथुरा पहुँचे। सखा कृष्ण से कहते हैं-हे माधव! तुमने मुझे ब्रज भेजा। मैं वहाँ जाकर धन्य हो गया। वहाँ की गोपियाँ धन्य हैं। श्री राधा धन्य धन्य हैं।

ज्ञान की पोथी मेरी छोरि ब्रजबामा।
फेंकि यमुना में दियो प्रेम निष्कामा॥ १०६॥

भावार्थ—हे मित्र कृष्ण! ब्रजगोपियों ने मेरी ज्ञान की पोटली मुझसे छीनकर यमुना में प्रवाहित कर दी एवं मुझे तुम्हारा निष्काम प्रेम प्रदान कर दिया।

माधो ज्ञान काँच देना चाहा ब्रजबामा।
मिला प्रेम पारस बलि ब्रजधामा॥ १०७॥

भावार्थ—हे मित्र! मैंने ब्रजगोपियों को ज्ञान रूपी काँच प्रदान करना चाहा था। करुणामयी ब्रजांगनाओं ने मुझे प्रेम रूपी पारस प्रदान किया। ब्रजधाम पर मैं बलिहार जाता हूँ।

श्याम तुम ही तो ब्रह्म आनन्दधामा।
जानि न पातो जातो जो ना ढिग बामा॥ १०८॥

भावार्थ—प्रेम प्राप्त उद्धव कह रहे हैं-हे श्यामसुन्दर!

तुम्हीं तो आनंदस्वरूप ब्रह्म हो। यदि मैं ब्रज में गोपियों के समीप न जाता तो इस रहस्य को कैसे समझ पाता।

कोटि ब्रह्म सुख वारौं प्रेम ब्रजबामा।
ऊधो गोपी पद रज माँगें ब्रजधामा॥ १०९॥

भावार्थ—उद्धव ने जब ब्रजगोपियों से निष्काम-प्रेम प्राप्त कर लिया तब वे उस गोपीप्रेम पर कोटि ब्रह्मसुख को न्योछावर करने लगे। उद्धव ने ब्रजधाम एवं गोपियों की पद-रज की याचना की।

ऊधो लता तनु माँगे वृन्दावन धामा।
पद रज परै जब चलें ब्रजबामा॥ ११०॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण के निकट पहुँचकर उद्धव ने उनसे याचना की— आसामहो... ।।

मैं वृन्दावन में कोई लता बन जाऊँ। ब्रजगोपियों की पावन चरण-रज मेरे ऊपर पड़ेगी तो मैं स्वयं को कृतार्थ मानूँगा।

श्याम गये द्वारिका ना मानें ब्रज बामा।
देखे छन छन कन कन ब्रजधामा॥ १११॥

भावार्थ—ब्रज-गोपियाँ इस सत्य को स्वीकार ही नहीं करतीं कि श्यामसुन्दर कभी ब्रज से बाहर द्वारिका भी गये। वे तो प्रतिक्षण ब्रज के कण-कण में श्यामसुन्दर का दर्शन करती हैं।

बहुत नचाए नाच ब्रज ब्रजबामा।
याते द्वारिका ते नहिं आए ब्रजधामा॥ ११२॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर को ब्रज में गोपियों ने नाना प्रकार से नाच नचाये थे। अपने प्रेम के आधीन बनाकर खूब छकाया था। इसीलिये द्वारिका में बसकर पुनः ब्रजेन्द्रनंदन ब्रज में कभी नहीं आये।

छप्पन भोग खावें द्वारवती धामा।
गारी खाने काहे श्याम आवें कह बामा॥ ११३॥

भावार्थ—कोई गोपी कह रही है–श्यामसुन्दर द्वारिका में छप्पन व्यंजनों का भोग लगाते हैं, वे ब्रज की गाली खाने क्यों आवेंगे?

रास में हुआ था मद मन ब्रजबामा।
याते ब्रज तजि गये द्वारवती धामा॥ ११४॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ कहती हैं–हमें रास करते हुए अभिमान हो गया था। सम्भवतः इसीलिये श्यामसुन्दर ब्रज त्यागकर द्वारिका चले गये।

पूतना को गति दीन्ही क्या दूँ ब्रजबामा।
कौन मुँह लै के जाऊँ पुनि ब्रजधामा॥ ११५॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर विचार करते हैं—विषपान कराने की इच्छा से आई हुई पूतना को तो मैंने अपना धाम दे दिया।

अब निष्काम प्रेम करने वाली ब्रज-गोपियों को क्या दूँ? मैं ब्रजवासियों का ऋणी हूँ, अतः किस मुँह से दुबारा ब्रज में जाऊँ?

रुक्मिणी की गोद लेटे श्याम पूर्णकामा।
राधे राधे रटें कहें धन्य ब्रजधामा॥ ११६॥

भावार्थ—पूर्णकाम ब्रह्म श्रीकृष्ण द्वारिका के भवन में रुक्मिणी के अंक में शयन किये हुए भी 'राधे राधे' की रटना करते हुए कहते हैं-ब्रजभूमि धन्य है।

द्वारिका की पटरानी रुक्मिणि बामा।
माँगे गोपी पदरज मिले ब्रजधामा॥ ११७॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण की पट्टमहिषी रुक्मिणी भी ब्रजधाम में गोपियों की चरणरज की कामना करती हैं।

द्वारिका में निज सुख चहें सब बामा।
केवल पिय सुख चहें ब्रजबामा॥ ११८॥

भावार्थ—द्वारिका में श्रीकृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ अपना सुख चाहती हैं, किंतु ब्रजगोपियाँ तो एकमात्र श्रीकृष्ण का ही सुख चाहती हैं।

श्याम ही हैं मेरे यह भाव ब्रजबामा।
श्याम की मैं यह भाव द्वारवती धामा॥ ११९॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों का भाव है-'श्यामसुन्दर ही मेरे

हैं'। द्वारिका की रानियों का भाव है, 'मैं श्यामसुन्दर की हूँ।'

ब्रजबामा प्रेम सम प्रेम ब्रजबामा।
उपमा नहीं है कोइ त्रैलोक्यधामा॥ १२०॥

भावार्थ—ब्रजगोपियों के प्रेम के समान केवल ब्रजगोपियों का ही प्रेम है। उनके प्रेम की समानता करने वाला और कोई तीनों लोकों में नहीं हुआ।

नयनाभिराम पूर्णकाम श्याम श्यामा।
गोपी प्रेमवश भये ब्रज में सकामा॥ १२१॥

भावार्थ—कोटि काम-कमनीय श्यामा श्याम पूर्णकाम हैं। किंतु गोपियों के प्रेम के पराधीन हुए ये ब्रज में सकाम से प्रतीत होते हैं।

श्यामा श्याम नयनाभिराम पूर्णकामा।
किन्तु ब्रज रस की हैं दाता ब्रज बामा॥ १२२॥

भावार्थ—यद्यपि नेत्रों को अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होने वाले श्यामा-श्याम पूर्णकाम हैं किंतु ब्रजरस की प्राप्ति हेतु तो किसी ब्रजगोपी की ही शरण ग्रहण करनी होगी।

ब्रज रस पायो नहिं कमला सी बामा।
गोपीकृपा पाये ब्रज रस ब्रजधामा॥ १२३॥

भावार्थ—भगवान् की अर्धांगिनी महालक्ष्मी भी, चिरकाल तक तप करने के पश्चात् भी ब्रजरस की प्राप्ति

नहीं कर सकीं क्योंकि ब्रजरस तो किसी ब्रज गोपी की कृपा से ही प्राप्त होता है।

ब्रज बामा गुरु अरु इष्ट श्याम श्यामा।
तीनों एक, इष्ट ते मिलावें ब्रज बामा॥ १२४॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ प्रेम-मार्ग की गुरु हैं। श्यामा-श्याम उनके इष्ट हैं। यद्यपि तत्वतः तीनों एक ही हैं परन्तु इष्ट श्यामा श्याम से मिलाने वाली तो ब्रजगोपियाँ ही हैं।

जहाँ रहें ब्रजबामा वहाँ ब्रजधामा।
जहाँ रहे ब्रजधामा वहाँ ब्रजबामा॥ १२५॥

भावार्थ—जहाँ ब्रजांगना निवास करती हैं, वहाँ ब्रजधाम अवश्य ही रहता है। जहाँ ब्रजधाम है, वहाँ ब्रजांगना वास करती हैं।

ब्रजधाम जब जब आवें ब्रजबामा।
तब तब अवश्य पधारें श्याम श्यामा॥ १२६॥

भावार्थ—जब जब ब्रज गोपियाँ अवतार लेकर ब्रज मण्डल में प्रकट होती हैं, तब तब श्री राधा कृष्ण भी अपनी उन अन्तरंगा सखियों के साथ ब्रजधाम में अवतीर्ण होते हैं।

जहाँ ब्रजबामा वहाँ रहें श्याम श्यामा।
जहाँ श्याम श्यामा वहाँ रहें ब्रजबामा॥ १२७॥

भावार्थ—श्री हरि की सर्वोपरि सेवा-परायणा ब्रजगोपियाँ

ज़हाँ रहती हैं वहाँ श्यामा-श्याम का नित्य-निवास है एवं जहाँ जहाँ श्यामा-श्याम का वास है वहाँ ब्रजगोपियाँ नित्य विराजमान रहती हैं।

जहाँ रहें श्यामा वहाँ श्याम सुखधामा।
जहाँ रहें श्याम तहाँ स्वामिनि श्यामा॥ १२८॥

भावार्थ—जहाँ श्रीराधा वास करती हैं, वहाँ सुखधाम श्यामसुन्दर भी स्वाभाविक रूप से ही स्थित रहते हैं। जहाँ श्यामसुन्दर हैं, वहाँ स्वामिनी श्यामा भी सहज रूप से विराजती हैं।

श्यामा जहाँ जायें तहाँ जाय ब्रजधामा।
तहाँ श्याम जायें तहाँ जायँ ब्रजबामा॥ १२९॥

भावार्थ—जहाँ जहाँ श्री किशोरी जी जाती हैं, वहाँ वहाँ उनका ब्रजधाम भी उनके साथ जाता है। वहीं श्यामसुन्दर जाते हैं एवं ब्रजगोपियाँ भी वहीं जाती हैं।

श्यामा श्याम ब्रजधाम अरु ब्रज बामा।
तीनों रहें एक साथ संग एक ठामा॥ १३०॥

भावार्थ—श्रीराधा कृष्ण, उनका दिव्य ब्रजधाम एवं उनका सखी परिकर ये तीनों एक साथ एक स्थान पर निवास करते हैं।

ब्रज धाम, ब्रज बामा श्याम अरु श्यामा।
चारों में चारों चारों को परनामा॥ १३१॥

भावार्थ—ब्रजधाम, ब्रजांगनायें एवं श्यामसुन्दर एवं श्री राधा— सबमें सबका नित्य निवास है, अतः इन सबको प्रणाम है।

ब्रजधाम, ब्रजबामा गोप श्याम श्यामा।
सब ही हैं नित्य सब चिदानन्द धामा॥ १३२॥

भावार्थ—ब्रजधाम ब्रजांगनायें, ब्रज-गोप-जन एवं ब्रजभूषण श्यामा श्याम, सभी नित्य एवं चिदानंदमय हैं।

वृन्दावन चलो मन वहाँ श्याम श्यामा।
जहाँ श्याम श्यामा वहाँ मिलें ब्रज बामा॥ १३३॥

भावार्थ—हे मेरे मन! तू उस दिव्य श्रीधाम वृन्दावन में विचरण कर, जहाँ तेरे परम प्रेमास्पद श्यामा-श्याम नित्यविहार करते हैं। जहाँ श्यामा-श्याम क्रीड़ा करते हैं, वहाँ उनकी अनन्या ब्रजांगनायें भी अपने उपास्य की सेवा-हेतु उनके पीछे-पीछे चलती हैं।

चलो मन वृन्दावन जहाँ श्याम श्यामा।
ब्रज रस बह्यो जाय पियो बिनु दामा॥ १३४॥

भावार्थ—हे मेरे मन! तू तत्क्षण श्रीवृन्दावन धाम की यात्रा कर जहाँ पर श्यामा श्याम द्वारा निरन्तर ब्रजरस की वर्षा

होती है। बिना मूल्य दिये ही उस ब्रजरस का पान कर।

काहे मारे मारे फिरो देवी देव धामा।
देवी देव माँगें ब्रजरस कह बामा॥ १३५॥

भावार्थ—हे जीव! अनेक देवी देवताओं के स्थानों पर जाकर क्यों भटक रहे हो? जिन देवी देवताओं के स्थानों पर जाकर तुम उनकी प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हो, वे तो स्वयं ब्रज-रस की याचना करते हैं।

इन्द्र की पूजा भई बन्द ब्रजधामा।
गिरिराज महाराज पूजें ब्रजबामा॥ १३६॥

भावार्थ—ब्रजधाम में ब्रजराज कुमार ने इन्द्र की पूजा को समाप्त कर गिरिराज गोवर्धन की पूजा करवाई थी। सदा से होती आई इन्द्र की पूजा ब्रजवासियों ने श्रीकृष्ण की इच्छा से बंद कर दी थी।

काशी गये, गया गये गये चारों धामा।
ब्रजरस मिले बस ब्रज कह बामा॥ १३७॥

भावार्थ—चाहे कोई काशी तीर्थ में जाकर वास करे या गया धाम की यात्रा करे अथवा चारों धाम का भी भ्रमण कर आवे परन्तु ब्रज-रस तो ब्रजधाम में ही प्राप्त होगा।

बार बार चारों धाम वारौं ब्रजधामा।
नित्य विहार करें जहाँ श्याम श्यामा॥ १३८॥

भावार्थ—चारों धामों को बारम्बार उस ब्रजधाम के ऊपर न्योछावर करता हूँ, जहाँ श्यामा-श्याम का नित्य विहार होता है।

श्यामा श्याम बिनु नहिं चह ब्रजधामा।
ब्रजधाम सोइ जहाँ रह श्याम श्यामा॥ १३९॥

भावार्थ—श्यामा श्याम से रहित ब्रजधाम से भी हमारा कोई प्रयोजन नहीं। हमारा ब्रजधाम तो वही है, जहाँ हमारे श्यामा-श्याम नित्य निवास करते हों।

चारों धाम कृपा करें देयँ मुक्ति धामा।
मुक्ति भी ठुकरायें ब्रज ब्रजबामा॥ १४०॥

भावार्थ—चारों धाम कृपा करके मुक्ति प्रदान कर सकते हैं किंतु ब्रजधाम में वास करने वाली ब्रजांगनायें उस मुक्ति की भी उपेक्षा कर देती हैं।

कोटि मुक्ति सुख वारौं वैकुण्ठ बामा।
वैकुण्ठ सुख वारौं सुख ब्रजधामा॥ १४१॥

भावार्थ—वैकुण्ठ धाम के ऊपर करोड़ों मुक्ति-सुख न्योछावर किये जा सकते हैं। किंतु उस वैकुण्ठ का सुख भी ब्रजधाम के ऊपर न्योछावर किया जा सकता है। ब्रजधाम की महिमा सर्वाधिक है।

मेरे तो ठाकुर हैं श्याम अरु श्यामा।
नहिं चह महाविष्णु वैकुण्ठ धामा॥ १४२॥

भावार्थ— मेरे स्वामी तो श्यामा-श्याम हैं। मुझे महाविष्णु या उनके बैकुण्ठ लोक से क्या लेना देना।

ब्रज रस ना मिले वैकुण्ठ धामा।
द्वारिका में भी न मिले लहै ब्रजधामा॥ १४३॥

भावार्थ—सरस ब्रजरस की प्राप्ति न तो बैकुण्ठ लोक में सम्भव है, न ही द्वारिका में, यह तो एकमात्र ब्रज की ही सम्पत्ति है। ब्रज में ही प्राप्त होता है।

ब्रजरस महिमा जानें ब्रजबामा।
भव भी भवानी बने वृन्दावन धामा॥ १४४॥

भावार्थ—ब्रजरस की महिमा तो ब्रजांगनायें ही जानती हैं जिस रस की प्राप्ति की उत्कंठा ने भगवान् शिव को भी गोपी शरीर धारण करने को विवश कर दिया।

वृन्दावन महिमा जानें श्याम श्यामा।
यामें ना प्रवेश पायो कमला सी बामा॥ १४५॥

भावार्थ—श्री वृन्दावन की वास्तविक महत्ता को एकमात्र श्यामा श्याम ही जानते हैं। इस श्रीवृन्दावन धाम में सौन्दर्य एवं ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी को भी प्रवेश करने का अधिकार नहीं प्राप्त हुआ।

बरसानो महिमा जानें एक श्यामा।
उनकी कृपा ते जानें श्याम सुखधामा॥ १४६॥

भावार्थ—अपनी निज जन्म स्थली की महत्ता भी एकमात्र वृषभानुनन्दिनी ही जानती हैं। श्री बरसाना धाम श्री राधा के जन्म स्थल के रूप में प्रख्यात है। जहाँ आनन्दमयी रस की खान नित्य किशोरी प्रकट हुईं, उस दिव्य स्थली की विशेषता श्यामसुन्दर भी एकमात्र श्यामा की कृपा से ही कुछ समझ सके।

बरसाने में भी रस रस नंदगामा।
दोनों रस बने रास वृन्दावन धामा॥ १४७॥

भावार्थ—बरसाने एवं नंदगाँव दोनों स्थानों के रस ने एक सम्मिलित रास का रूप वृन्दावन में धारण किया। नंदगाँव के कृष्ण, बरसाने की राधा-शक्ति, शक्तिमान दोनों ने मिलकर वृन्दावन में ब्रजगोपियों के साथ रास-रस की सरिता प्रवाहित की।

चिद्घनानंदघन वृन्दावन धामा।
यामें नित्य विहरत श्याम अरु श्यामा॥ १४८॥

भावार्थ—श्री वृन्दावन धाम चिद्घन आनंदघन है। इसमें श्यामा-श्याम का नित्य-विहार होता रहता है।

सेवा कुंज रासस्थली वृन्दावन धामा।
वहीं चलो मिलें सब श्याम श्यामा बामा॥ १४९॥

भावार्थ—श्री वृन्दावन दिव्य धाम में रासस्थल सेवा कुंज में श्यामा-श्याम एवं उनका सखी परिकर नित्य लीला विहार करता है। भावुक भक्तों को वहाँ निश्चित ही उनका दर्शन स्पर्श आदि प्राप्त होगा।

वृन्दावन में है दिव्य वृन्दावन धामा।
दीखे जब दिव्य दृष्टि देवें ब्रजबामा॥ १५०॥

भावार्थ—भौम वृन्दावन में ही दिव्य वृन्दावन अन्तर्निहित है। जब किसी राधा-सहचरी की कृपा से दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाय, तब उस दिव्य धाम के दर्शन प्राप्त हों।

चिदानन्दमय यह वृन्दावन धामा।
सोइ देखे जा पै कृपा करें ब्रज बामा॥ १५१॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण की भाँति ही उनका यह वृन्दावन धाम भी चिदानंदमय है, किंतु इसकी चिन्मयता उसी को दृष्टिगत होती है जिस पर ब्रज गोपियों की कृपा-दृष्टि हो।

मेरे इष्ट वृन्दावनचन्द सुखधामा।
मधुपुरी द्वारिका के, कृष्ण को प्रणामा॥ १५२॥

भावार्थ—मेरे इष्ट देव सुखधाम श्रीवृन्दावनचन्द्र हैं। मथुरा द्वारिका के श्रीकृष्ण को मैं दूर से ही प्रणाम करता हूँ। (यह

तारतम्य एकमात्र माधुर्य के दृष्टि कोण से ही है। रसिकजन भगवान् के ऐश्वर्य से विशेष सम्बन्ध न रखकर उनके प्रेम स्वरूप की ही आराधना करते हैं। प्रेमरस की दृष्टि से वृन्दावन के श्रीकृष्ण ही उपास्य हैं।)

एक बार गोपी गईं मधुपुरी धामा।
जो थे ब्रजधाम में वो नहीं कह बामा॥ १५३॥

भावार्थ—कुछ गोपियाँ कभी मथुरा गईं। उन्होंने मथुराधीश का दर्शन प्राप्त कर कहा—ब्रजवास करते समय जो हमारे प्रियतम कृष्ण हमें मिले थे, वे मथुरा में नहीं हैं। ये तो कोई दूसरे ही कृष्ण हैं।

द्वारिका में पूर्णब्रह्म रणछोर नामा।
किन्तु पूर्णतम ब्रह्म वृन्दावन धामा॥ १५४॥

भावार्थ—द्वारिका स्थित, रणछोर केवल पूर्णब्रह्म हैं। वृन्दावन में पूर्णतम ब्रह्म हैं। द्वारिका में श्रीकृष्ण का ऐश्वर्य है, वृन्दावन में पूर्ण प्रेम।

मेरा तो प्राणप्रिय वृन्दावन बामा।
नहिं चाहुँ मथुरा न द्वारवती धामा॥ १५५॥

भावार्थ—मुझे श्रीधाम वृन्दावन अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। न मुझे मधुपुरी से कोई प्रयोजन है, न द्वारिका से।

ब्रज रज महिमा जानें ब्रज बामा।
याही ब्रज रज महँ लोटे श्याम श्यामा॥ १५६॥

भावार्थ—ब्रज-रज की वास्तविक गरिमा को ब्रज बालायें ही जानती हैं। जिस ब्रज रज में स्वयं श्यामा श्याम लोटे हैं।

ब्रज रज महिमा जानें श्याम श्यामा।
ब्रज रज महँ लोटें श्यामा श्याम बामा॥ १५७॥

भावार्थ—ब्रज रज की महिमा को श्यामा-श्याम ही जानते हैं। जिस रज से श्यामा श्याम एवं गोपियों ने अपने अंग स्नात किये ,उसकी असीम महिमा को साधारण प्राणी कैसे जान सकता है।

चोरी चोरी माटी खाई गोकुल गामा।
ब्रज रज महिमा जनाई सुखधामा॥ १५८॥

भावार्थ—सुखधाम कृष्ण ने गोकुल में माता की आँख बचाकर चोरी से जो मिट्टी खाई थी उसका तात्पर्य ब्रजरज की महिमा का प्रकाशन-मात्र करना ही था।

नवनी न खाये कर यशुमति बामा।
चोरी चोरी माटी खाय श्याम ब्रजधामा॥ १५९॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर को माँ यशोदा के हाथ से माखन खाना उतना रुचिकर नहीं प्रतीत होता। सब की दृष्टि बचाकर ब्रज की मिट्टी खाने में उन्हें अधिक रस मिलता है।

इन्द्र भी आया ब्रज कह ब्रज बामा।
हार मानी रोया कहा धन्य ब्रजधामा॥ १६०॥

भावार्थ—इन्द्र ने अपनी पूजा को स्थगित हुआ जानकर जब श्रीकृष्ण को साधारण गोप बालक समझकर सात दिन रात अनवरत वर्षा कराकर ब्रजमंडल को नष्ट करना चाहा था एवं सात कोस के पर्वत गोवर्धन को छत्र बनाकर गोपाल ने अपने वाम हस्त की कनिष्ठिका पर उस समय धारण कर जब इन्द्र का मान-मर्दन किया, तब इन्द्र ने पूर्णतम पुरुषोत्तम को पहचानकर ब्रज में आकर उनसे क्षमा-याचना की थी। उस समय इन्द्र ने उस श्री ब्रजधाम की भूरि-भूरि सराहना की थी जहाँ लीलाधारी ने अपने चरण-चिह्न स्थापित किये।

बड़े बड़े ज्ञानी आये येहि ब्रजधामा।
वृक्ष बनि माँगें पदरज ब्रजबामा॥ १६१॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण की लीलास्थली ब्रजधाम में बड़े-बड़े ज्ञानी परमहंसों ने वृक्ष बनने की कामना की, जिससे वे श्रीकृष्ण-प्रेयसी ब्रजांगनाओं की चरण-धूलि प्राप्त कर सकें।

ऊधो भी आये ब्रज ढिग ब्रजबामा।
ज्ञान दान दिये लिये प्रेम निष्कामा॥ १६२॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण द्वारा प्रेषित उद्धव भी ब्रजधाम में आये थे। गोपांगनाओं को अपना शुष्क ज्ञान देकर उन्होंने गोपियों से साकार ब्रह्म का निष्काम प्रेम प्राप्त किया।

मुक्ति भी आई ब्रज तजि ब्रह्म धामा।
ब्रजवासी बोलें भजि जाओ और ठामा॥ ९६३॥

भावार्थ—ब्रह्मलोक का परित्याग कर मुक्ति भी ब्रजवासियों की सेवा-हेतु ब्रज में आई। ब्रजवासियों ने मुक्ति का सम्मान नहीं किया। कहा, और कहीं जाओ।

मुक्ति तो दासी है स्वामी श्याम श्यामा।
स्वामी तजि कौन चहे दासी ब्रजधामा॥ ९६४॥

भावार्थ—ब्रजधाम के स्वामी श्यामा-श्याम हैं। मुक्ति तो उनकी दासी है। स्वामी को छोड़कर दासी की इच्छा कौन करे।

एकत्व मुक्ति में मिले ब्रह्म धामा।
कभु वह पावे नाहिं प्रेम श्याम श्यामा॥ ९६५॥

भावार्थ—ब्रह्म में मिलकर एकत्व मुक्ति को प्राप्त करने वाला जीव केवल निर्गुण निर्विशेष निराकार ब्रह्म का धाम ही प्राप्त करता है, वह श्यामा श्याम के प्रेम को कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

भक्तों की चारों मुक्ति आईं ब्रजधामा।
पानी भर लाया करो कहीं ब्रज बामा॥ ९६६॥

भावार्थ—सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य एवं सारूप्य भक्तों की ये चारों मुक्तियाँ भी ब्रज में आईं। गोपियों ने उन्हें पानी

मुक्ति भी आई ब्रज तजि ब्रह्म धामा।
ब्रजवासी बोलें भजि जाओ और ठामा॥ १६३॥

भावार्थ—ब्रह्मलोक का परित्याग कर मुक्ति भी ब्रजवासियों की सेवा-हेतु ब्रज में आई। ब्रजवासियों ने मुक्ति का सम्मान नहीं किया। कहा, और कहीं जाओ।

मुक्ति तो दासी है स्वामी श्याम श्यामा।
स्वामी तजि कौन चहे दासी ब्रजधामा॥ १६४॥

भावार्थ—ब्रजधाम के स्वामी श्यामा-श्याम हैं। मुक्ति तो उनकी दासी है। स्वामी को छोड़कर दासी की इच्छा कौन करे।

एकत्व मुक्ति में मिले ब्रह्म धामा।
कभु वह पावे नाहिं प्रेम श्याम श्यामा॥ १६५॥

भावार्थ—ब्रह्म में मिलकर एकत्व मुक्ति को प्राप्त करने वाला जीव केवल निर्गुण निर्विशेष निराकार ब्रह्म का धाम ही प्राप्त करता है, वह श्यामा श्याम के प्रेम को कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

भक्तों की चारों मुक्ति आईं ब्रजधामा।
पानी भर लाया करो कहीं ब्रज बामा॥ १६६॥

भावार्थ—सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य एवं सारूप्य भक्तों की ये चारों मुक्तियाँ भी ब्रज में आईं। गोपियों ने उन्हें पानी

भरने की आज्ञा प्रदान की।

ब्रह्मा भी आये ब्रज कह ब्रज बामा।
पशु पक्षी तनु माँगे येहि ब्रजधामा॥ १६७॥

भावार्थ—इस ब्रजमंडल में ब्रह्मा भी आये और उन्होंने पशु-पक्षी का शरीर धारण कर ब्रज-वास करने की कामना की।

शंभु भी आये तजि कैलाश धामा।
नारी तनु धरि बनि गये ब्रज बामा॥ १६८॥

भावार्थ—भगवान् शिव भी अपना निवास स्थान कैलाश पर्वत छोड़कर ब्रज में आये और रासेश्वर श्रीकृष्ण के दर्शन, स्पर्श हेतु स्त्री का शरीर धारण कर ब्रजगोपियों की मंडली में सम्मिलित हो गये।

कमला भी आईं ब्रज कह ब्रज बामा।
पायीं ना प्रवेश किन्तु वृन्दावन धामा॥ १६९॥

भावार्थ—महाविष्णु की अर्धांगिनी साक्षात् महालक्ष्मी भी इस ब्रजरस को प्राप्त करने हेतु ब्रज भूमि में आई थीं किन्तु उन्हें श्रीवृन्दावन-धाम में प्रवेश नहीं प्राप्त हुआ। ब्रज-रस केवल समर्था रति की गोपियों के ही अधिकार की वस्तु है।

मायावती पूतना भी आई नंदगामा।
विष तो पिलाया पाया गोलोक धामा॥ १७०॥

भावार्थ—नंदग्राम में श्रीकृष्ण की छठी का उत्सव मनाया जा रहा था—कंस की भेजी हुई राक्षसी पूतना माया से परम सुन्दरी का रूप धारण कर ब्रजभूमि में आई। विष से ओत-प्रोत अपने स्तनाग्र को नन्हें से नंदनंदन के मुख में डालकर पूतना उन्हें मार डालना चाहती थी, परन्तु अति कोमल-हृदय कृष्ण ने उसे अपनी धात्री की गति-अपना गोलोक धाम प्रदान किया।

श्यामा श्याम में जो गुण सोइ ब्रजधामा।
ऐसी निष्ठा ते वास करो येहि ठामा॥ १७१॥

भावार्थ—जो गुण श्यामा श्याम में हैं वे ही ब्रजधाम में हैं, ऐसी निष्ठापूर्वक जब ब्रजधाम में वास किया जायगा तब धाम अपना फल प्रदान करेगा।

बार बार आया करो वृन्दावन धामा।
विश्वास रखो कभू मिलें श्याम श्यामा॥ १७२॥

भावार्थ—हे मेरे मन! तू बार-बार श्रीधाम वृन्दावन में आया कर। विश्वास रख, इसी भूमि में तुझे कभी श्यामा श्याम प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होंगे।

श्यामा श्याम जायँ नहिं तजि ब्रजधामा।
रो रो के पुकारो मिलेंगे श्याम श्यामा॥ १७३॥

भावार्थ—श्यामा-श्याम एक घड़ी के लिये भी श्री

ब्रजभूमि का परित्याग नहीं करते। उन्हें करुण क्रन्दनपूर्वक पुकारने से एक दिन अवश्य ही वे प्रत्यक्ष दर्शन देंगे।

श्यामा श्याम मिलें या ना मिलें ब्रजधामा।
रहे उर आशा विश्वास आठु यामा॥ १७४॥

भावार्थ—ब्रजभूमि श्यामा-श्याम की दिव्य क्रीड़ा-स्थली है। यहाँ निष्ठापूर्वक निरन्तर आशा लगाये रखनी चाहिये कि वे हमें एक दिन अवश्य ही मिलेंगे। भले ही वे मिलें या न मिलें।

राधे राधे गोविन्द रटो आठु यामा।
कबहुँ तो कान करेंगे श्याम श्यामा॥ १७५॥

भावार्थ—हे जीवों! निरन्तर प्रिया-प्रियतम श्री राधा गोविंद के सुमधुर नामों का गायन करते रहो। कभी न कभी अत्यन्त सुकुमार-हृदय श्यामा श्याम अवश्य ही तुम्हारे ऊपर रीझकर अपनी कृपा-दृष्टि से तुम्हें निहाल कर देंगे।

रस की बनाओ शीशी प्रेम निष्कामा।
गौर श्याम रस भरो पियो आठु यामा॥ १७६॥

भावार्थ—निष्काम प्रेम-रस की शीशी बनाकर उसमें गौर-श्याम रस भरकर रात-दिन पान करो।

श्यामा चह श्याम सुख श्याम सुख श्यामा।
श्यामा श्याम सुख तुम चाहो आठु यामा॥ १७७॥

भावार्थ—श्री राधिका निरन्तर अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के सुख की कामना करती हैं। श्यामसुन्दर प्रिया राधा के सुख में ही सुखी रहते हैं। जीव का धर्म है कि वह निरन्तर अपने इष्ट युगल सरकार श्यामा-श्याम के सुख में ही सुखी रहने की भावना को विकसित करे।

श्यामा करें ध्यान श्याम श्याम ध्यान श्यामा।
श्यामा श्याम ध्यान करो तुम आठु यामा॥ १७८॥

भावार्थ—श्री भानुनन्दिनी राधिका निरन्तर प्रियतम नंदनंदन का ही ध्यान करती हैं। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ह्लादिनी शक्ति के वशीभूत हुए श्रीराधा के ही चिंतन में तल्लीन रहते हैं। किन्तु जीव को प्रिया-प्रियतम दोनों की ही दिव्य-झाँकी का रात-दिन रूपध्यान करना चाहिये।

श्यामा श्याम नाम रूप लीला गुण धामा।
गाओ रो के रूपध्यानयुक्त आठु यामा॥ १७९॥

भावार्थ—हे जीव! निरन्तर परम प्रेमास्पद श्यामा-श्याम का रूपध्यान करते हुये उनके नाम-रूप-लीला-गुण-धाम आदि का रो रोकर गायन कर।

मन ते मनन करो श्याम अरु श्यामा।
गरबाँहीं दीन्हें बैठे कुंज ब्रजधामा॥ १८०॥

भावार्थ—अपने मन से ऐसा ध्यान बनाओ कि श्यामा-

श्याम परस्पर अपनी भुजाओं को एक दूसरे के कण्ठ में डाले हुए ब्रज की किसी कुंज में विराजमान हैं।

मन ते मनन करु कुंज ब्रजधामा।
ब्रह्म श्याम ते पलुटावें पग श्यामा॥ १८१॥

भावार्थ—अपने मन से इस प्रकार का चिंतन करो कि ब्रज की किसी कुंज में ब्रह्म श्रीकृष्ण श्रीराधिका के चरण दबा रहे हैं।

मन ते मनन करो बरसाने धामा।
गहवर वन हरि परखत श्यामा॥ १८२॥

भावार्थ—अपने मन से इस झाँकी का चिंतन करो कि बरसाने के गह्वर-वन में श्रीहरि प्रिया राधा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मन ते मनन करो श्याम सुखधामा।
देयँ बुहारी गहवर बनि श्यामा॥ १८३॥

भावार्थ—अपने मन से इस झाँकी का ध्यान करो कि श्यामसुन्दर श्याम-सखी का रूप धारण कर गह्वर-वन में बुहारी लगा रहे हैं।

मन ते मनन करु दिव्य ब्रजधामा।
जित नित नव लीला करें श्याम श्यामा॥ १८४॥

भावार्थ—अपने मन से उस दिव्य ब्रजधाम का स्मरण करो जहाँ श्यामा-श्याम निरन्तर नवीन नवीन लीला-विहार करते रहते हैं।

मन ते मनन करु गोलोक धामा।
जित केकी कीर बोलें राधे राधे नामा॥ १८५॥

भावार्थ—अपने मन से उस दिव्य गोलोक धाम का स्मरण करो, जहाँ के मयूर एवं शुक आदि पक्षी-गण भी राधे-राधे रटते रहते हैं।

मन ते मनन करु वृन्दावन धामा।
जित नित्य महारास करें श्याम श्यामा॥ १८६॥

भावार्थ—अपने मन से उस दिव्य श्रीवृन्दावन धाम का स्मरण करो जहाँ श्यामा-श्याम सखियों सहित नित्य महारास-रस की वर्षा करते रहते हैं।

मन ते मनन करु कुंज ब्रजधामा।
जित नित्य ही मनावैं ब्रह्म श्याम श्यामा॥ १८७॥

भावार्थ—अपने मन से ब्रजधाम की उन मनोहर-कुंजों का चिंतन करो जहाँ ब्रह्म श्यामसुन्दर नित्य ही मानिनी राधा का मान-भंजन करने के कोटि उपायों के करने में लगे रहते हैं।

मन ते मनन करु दिव्य हरि धामा।
जित दिव्य गोप गोपी श्याम अरु श्यामा॥ १८८॥

भावार्थ—अपने मन से श्रीहरि के उस दिव्य धाम की कल्पना करो जहाँ श्यामा, श्याम, गोपियाँ, गोप—सभी चिन्मय-वपुधारी हैं।

मन ते मनन करु दोउ श्याम श्यामा।
भुज फैला के खरे परखत धामा॥ १८९॥

भावार्थ—अपने मन से ध्यान बनाओ—श्यामा-श्याम अपनी भुजायें फैलाये खड़े हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मन ते मनन करु हरि सुखधामा।
उर लगाय कह तू मेरी बामा॥ १९०॥

भावार्थ—मन से ध्यान करो कि सुखनिधान श्रीहरि मुझे हृदय से लगाकर कह रहे हैं— 'तू मेरी है।'

मन ते मनन करु निज गुरु धामा।
गुरु उर बैठे देखें मोहिं श्याम श्यामा॥ १९१॥

भावार्थ—अपने गुरु-धाम का मन से स्मरण करो। गुरु के हृदय में बैठे श्यामा-श्याम मुझे सतत निहार रहे हैं, यह भावना लाओ।

मन ते मनन करु हरि गुरु पामा।
पुनि उन पद धरु निज उर धामा॥ १९२॥

भावार्थ—अपने इष्ट श्रीहरि एवं गुरु के चरण-कमलों का चिंतन करो। पुनः उन चरणों को अपने हृदय में धारण करो।

मन ते मनन करु गुरु प्रेमधामा।
सिर धरि कर देयँ प्रेम निष्कामा॥ १९३॥

भावार्थ—अपने मन में इस प्रकार की भावना बनाओ कि प्रेम के भंडार गुरुदेव मेरे सिर पर अपना वरद हस्त रखकर निष्काम प्रेम प्रदान कर रहे हैं।

मन ते मनन करु कब ब्रजधामा।
जाके गाउँ राधे राधे रोऊँ आठु यामा॥ १९४॥

भावार्थ—अपने मन में इस प्रकार की भावनायें उत्पन्न करो—वह दिन कब आयेगा—जब ब्रजधाम के अन्तर्गत मैं निरन्तर रोते हुए 'राधे' 'राधे' गाऊँगा।

मन ते मनन करु कृपामयी श्यामा।
महल की टहल दिला दो संग बामा॥ १९५॥

भावार्थ—अपने मन से ऐसा चिंतन करो कि तुम कृपा की मूर्ति श्रीराधा से प्रार्थना कर रहे हो-हे राधे! मुझे भी अपने महल की सेवा करने वाली सखियों में सम्मिलित कर लो।

मन ते मनन करु रूप श्याम श्यामा।
रो के कहु ले लो मोहूँ सँग ब्रज बामा॥ १९६॥

भावार्थ—अपने मन से श्यामा-श्याम का दिव्य रूप-ध्यान करना चाहिये एवं उनसे करुण-क्रन्दनपूर्वक प्रार्थना करो कि मुझे भी अपने सखी-परिकर में सम्मिलित कर लो।

मन ते मनन करु भाव देह बामा।
रो के कहु पिय देहु प्रेम निष्कामा॥ १९७॥

भावार्थ—मन से ही अपने-अपने भाव-देह (गोपी रूप) का स्मरण करो एवं करुणा-पूर्ण स्वर में श्यामसुन्दर से प्रार्थना करो—हे प्रियतम! मुझे भी अपना निष्काम प्रेम प्रदान करो।

मन ते मनन करु हा श्याम श्यामा।
या तो आवो या तो बुला लो निज धामा॥ १९८॥

भावार्थ—अपने मन द्वारा श्यामा-श्याम से प्रार्थना करो हे युगल-सरकार! या तो तुम मेरे समीप आओ अथवा मुझे ही अपने निकट बुला लो।

मिले बिनु रहा नहिं जाय जब बामा।
तब ही मिलेंगे तोहिं श्याम अरु श्यामा॥ १९९॥

भावार्थ—जब भी किसी साधक की ऐसी स्थिति बन जायेगी कि वह श्यामा-श्याम के बिना जीवन धारण करने में असमर्थ हो जायेगा तभी अकारण करुण युगल सरकार भी उसके बिना नहीं रह सकेंगे। वे उसके समक्ष प्रकट होकर सदा सदा के लिये उस बड़भागिनी जीवात्मा को अपना बना लेंगे।

कहीं ते नहीं है आना उन्हें कह बामा।
तेरे उर में हैं बैठे श्याम आठु यामा॥ १०००॥

भावार्थ—श्यामसुन्दर तो सदैव ही तुम्हारे हृदय में विराजमान हैं। उन्हें कहीं बाहर से नहीं आना है।

मिलें नहिं जब लौं तोहिं श्याम श्यामा।
मिलन की प्यास बढ़ाओ आठु यामा॥ १००१॥

भावार्थ—जब तक तुम्हें श्यामा श्याम नहीं मिल जाते, उनसे मिलने की व्याकुलता निरन्तर बढ़ाते जाओ।

विरह की आग जलाओ उरधामा।
पंचक्लेश बीज भी ना शेष रहे बामा॥ १००२॥

भावार्थ—अपने हृदय में ऐसी विरहाग्नि प्रज्ज्वलित करो जिससे पंच क्लेश का बीज भी शेष न रहे।

दास्य सख्य वात्सल्य माधुर्य नामा।
सर्वश्रेष्ठ माधुर्य भाव ब्रज बामा॥ १००३॥

भावार्थ—दास्य, सख्य वात्सल्य एवं माधुर्य- ये चार भाव होते हैं-किन्तु इनमें सर्वश्रेष्ठ भाव माधुर्य भाव ही है, जो ब्रज गोपियों का था।

तेरे स्वामी, सखा, सुत, पति सुखधामा।
चारों भाव राखो सोइ माधुर्य नामा॥ १००४॥

भावार्थ— जीव के सच्चे स्वामी, सखा, पुत्र एवं पति एकमात्र श्रीकृष्ण ही हैं। ये समस्त भाव माधुर्य भाव में सन्निहित हैं। अत: माधुर्य नामक भाव ही उपासना-हेतु सर्वोपरि है।

माधुर्य भाव में भी होते हैं सकामा।
किन्तु अपनावो तुम भाव निष्कामा॥ १००५॥

भावार्थ—माधुर्य भाव में सकाम भाव से उपासना करने वाले भक्त भी हुए हैं। कुब्जा सकाम थी। किंतु तुम सकामता का पूर्ण परित्याग करके निष्काम माधुर्य भाव को ही अपनाओ।

श्याम को रिझाना हो दो आँसू निष्कामा।
भाजे अइहैं तजि गोलोक निज धामा॥ १००६॥

भावार्थ—यदि कोई जीव श्यामसुन्दर को रिझाना चाहे तो एकमात्र निष्काम प्रेम के आँसू बहावे। नंदनंदन अत्यन्त कोमल हृदय हैं। भक्त का करुण क्रन्दन उन्हें गोलोक त्यागकर भक्त के निकट आने को विवश कर देगा।

जित देखो तित दीखें श्याम श्यामा।
यह प्रेम उत्तमोत्तम ब्रज बामा॥ १००७॥

भावार्थ—जिधर भी दृष्टि जाये श्यामा श्याम ही दिखाई दें यह उत्तम से भी उत्तम प्रेम है।

सब में ही दोउ दीखें श्याम श्यामा।
यह प्रेम उत्तम 'कृपालु' ब्रज बामा॥ १००८॥

भावार्थ—सभी प्राणियों में श्यामा श्याम का ही दर्शन हो यह उत्तम प्रेम है।

श्यामा श्याम गीत

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शनसमन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्तश्रीविभूषित

जगद्गुरु १००८

स्वामी श्री कृपालु जी महाराज

भवार्थ लेखिकाः

सुश्री ब्रजकुंजरी देवी

पी. एच. डी.- हिन्दी

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

साधना भवन ट्रस्ट, भक्ति धाम

मनगढ़ (कुण्डा), जिला प्रतापगढ़-२२९४१७ (यू.पी.)इण्डिया

फोन: ०५३४१-२३०२८२, २३०४४२

श्यामा श्याम धाम

रमन रेती रोड, वृन्दावन-२८११२४ (यू.पी.)इण्डिया

फोन: ०५६५-२५४०५३०

रंगीली महल

नंदगाँव रोड, बरसाना, जिला-मथुरा-२८१४०५ (यू.पी.)इण्डिया

फोन: ०५६६२-२४६२३५

www. jagadgurukripaluparishat.org (jkp.org)

सर्वाधिकार सुरक्षित © २००२,२००३

साधना भवन ट्रस्ट, भक्ति धाम, मनगढ़

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी रूप में इलैक्ट्रानिक, यांत्रिक, फोटोग्राफिक अभिलेखन अथवा अन्य किसी भी प्रकार से प्रतिलिपि अथवा प्रसारित न किया जाय।

प्रकाशक:

राधा गोविंद समिति

कृष्ण कुंज, २२/५२ वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

फोन: ०११-२५१७५१९६, २५४३३३२८

e-mail: rgs108del@yahoo.com

प्राक्कथन

प्रत्येक पुस्तक में प्राक्कथन लिखने की परम्परा है। उसी के निर्वाह हेतु कुछ लिखना पड़ रहा है।

वेद कहता है, 'रसो वै सः'- अर्थात् ब्रह्म,रस रूप है। यह रस रूप ब्रह्म दो अर्थ वाला है। १-रस्यते इति रसः-जिसका आस्वादन किया जाय, जैसे मधु। २- 'रसयति इति रसः'-जो रस का आस्वादन करता है जैसे भ्रमर। जिस रस का आस्वादन स्वयं ब्रह्म श्रीकृष्ण करते हैं, उसे स्वरूपानंद कहते हैं। इसमें श्रीकृष्ण अपनी स्वरूप शक्ति के द्वारा अपने माधुर्य रस का भोग करते हैं।

जिसमें भक्तों द्वारा विशेष माधुर्य का आस्वादन करते हैं, उसे स्वरूपशक्त्यानंद कहा जाता है। स्वरूप शक्त्यानंद (भक्तों द्वारा प्राप्त माधुर्य रस) भी दो प्रकार का होता है। १- ऐश्वर्यानंद-इसमें ऐश्वर्य रस प्रधान है,माधुर्य गौण है। २-इसमें माधुर्य ही माधुर्य ओतप्रोत है। इनमें स्वरूपानंद से सरस ऐश्वर्यानंद एवं उससे भी सरस मानसानंद है। यही ब्रजरस कहलाता है। यही सर्वश्रेष्ठ है। उसी ब्रजरस को ही लक्ष्य बना कर यह 'श्यामा श्याम गीत' लिखा गया है। सगुण साकार ब्रह्म की मधुरतम लीलायें कृष्णावतार में ही हुई हैं। अतएव इस पुस्तक में उसी अवतार की लीलायें लिखी गई हैं। लीलाओं के अतिरिक्त सिद्धान्त पक्ष को भी लिया गया है, जिसमें श्री राधाकृष्ण की एकरूपता,किंतु प्रेम जगत् में, मादनाख्य महाभाव स्वरूपा होने के कारण,श्री राधा के प्रति प्रेम तत्व के क्रीतदास श्रीकृष्ण की

वशीभूतता, गोपी-प्रेम की विशेषता आदि अनेक साधनोपयोगी विषयों का भी विस्तृत निरूपण किया गया है। समस्त विषय सामग्री वेद शास्त्र पुराणादि एवं अनेक महापुरुषों की वाणियों के मतानुसार ही है। यदि किसी को किंचित् भी लाभ हुआ तो मैं सफल ही समझूँगा।

वेद-शास्त्र सम्मत, अरु मत नामा ।
श्यामा-श्याम-गीत, प्रीति हित श्याम श्यामा ॥

जगद्गुरुः
कृपालुः